भजन संहिता

भजन संहिता

नया अनुवाद १९७५

प्रभु की स्तुति करो !
प्रभु के लिये नया गीत गाओ;
भक्तों की मंडली में प्रभु की स्तुति हो !

[भजन १४९ : १]

S.C. Dillu
December 7, 1976
Bareilly, U.P.

बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया
२० महात्मा गांधी रोड
बंगलौर

PSALMS

Hindi New Translation

1976

5,000 Copies—580

20 Mahatma Gandhi Road
Bangalore

भजन संहिता

पहला खण्ड

धार्मिक मनुष्य: अधार्मिक मनुष्य

१. धन्य है वह मनुष्य
जो दुर्जनों की सम्मति पर नहीं चलता,
जो पापियों के मार्ग पर खड़ा नहीं होता,
और जो उपहास-प्रिय झुण्ड में नहीं बैठता;

२. पर उसका सुख प्रभु की व्यवस्था में है,
और वह दिन-रात उसका पाठ करता है ।

३. वह उस वृक्ष के समान है
जो नहर के तट पर रोपा गया,
जो अपनी ऋतु में फलता है,
और जिसके पत्ते मुरझाते नहीं ।

जो कुछ धार्मिक मनुष्य करता है, वह सफल होता है ।

४. पर अधार्मिक मनुष्य ऐसे नहीं होते !
वे भूसे के समान हैं, जिसे पवन उड़ाता है ।

५. अतः न अधार्मिक मनुष्य अदालत में,
और न पापी मनुष्य धार्मिकों की मंडली में खड़े हो सकेंगे ।

६. प्रभु धार्मिकों का आचरण जानता है ।
परंतु अधार्मिक अपने आचरण के कारण नष्ट हो जाएंगे ।

प्रभु के अभिषिक्त राजा का राज्य

२. क्यों राष्ट्र षड्यंत्र करते हैं ?
क्यों विभिन्न देश व्यर्थ जाल फैलाते हैं ?

२. प्रभु और उसके अभिषिक्त राजा के विरोध में,
संसार के राजाओं ने संकल्प किया है,
शासकों ने एक साथ मंत्रणा की है ।

३. ये कहते हैं, "आओ, हम उनकी बेड़ियां तोड़ डालें,
अपने ऊपर से उनके बन्धन की रस्सियां उतार फेंकें ।"

४. स्वामी, जो स्वर्ग में विराजमान है, हंसता है;
वह उनका उपहास करता है ।

५. तब वह अपने क्रोध से उनको आतंकित करेगा,
वह रोष में उनसे यह कहेगा,

६. "मैंने अपने पवित्र पर्वत सियोन के सिंहासन पर
अपने राजा को प्रतिष्ठित किया है ।"

७. मैं प्रभु के निश्चय की घोषणा करूंगा :
उसने मुझसे यह कहा है : "तू मेरा पुत्र है,
आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है ।

८. मुझसे मांग, और मैं राष्ट्रों को तेरी पैतृक-सम्पत्ति
और सम्पूर्ण पृथ्वी को तेरे अधिकार में कर दूंगा ।

९. तू उन्हें लौह-दंड से खंड-खंड करेगा,
कुम्हार के पात्र-सदृश उन्हें चूर-चूर करेगा ।"

१०. अतः राजाओ, अब बुद्धिमान हो,
पृथ्वी के शासको, सावधान हो !

११. भयभाव से प्रभु की सेवा करो,
कांपते हुए उसके चरण चूमो ।[१]

पाठांतर "कांपते हुए आनन्दित हो, पुत्र को चूमो"

१२. ऐसा न हो कि प्रभु क्रुद्ध हो, और तुम मार्ग में ही नष्ट हो जाओ,
क्योंकि उसका क्रोध तुरन्त भड़कता है ।
धन्य हैं वे सब, जो प्रभु की शरण में आते हैं ।

सबेरे की प्रार्थना : परमेश्वर पर भरोसा करो

दाऊद का गीत, जब वह अपने पुत्र अबशालोम के पास से भागा था

३. प्रभु, मेरे बैरी कितने बढ़ गए हैं ।
मेरे विरोध में अनेक जन उठे हैं ।
२. वे मेरे विषय में यह कहते हैं,
"परमेश्वर उसे विजय प्रदान नहीं करेगा ।" सेलाह†

३. पर प्रभु, तू चारों ओर मेरी ढाल है,
मेरी महिमा है, मेरे सिर को ऊंचा उठानेवाला है ।
४. मैं उच्च स्वर में तुझ-प्रभु को पुकारता हूं,
और तू अपने पवित्र पर्वत से मुझे उत्तर देता है । सेलाह

५. मैं लेटता
और निश्चिंत सो जाता हूं;
मैं फिर सकुशल जाग उठता हूं;
क्योंकि प्रभु, तू मुझे संभालता है ।
६. मैं डरता नहीं उन लाखों सैनिकों से
जो चारों ओर से मुझे घेरे हुए हैं ।

७. उठ, प्रभु !
हे मेरे परमेश्वर, मुझे बचा !

---

† इस इब्रानी शब्द के संभवतः ये अर्थ हैं : १ विराम, २ राग-परिवर्तन का संकेत, ३ निर्देशन, ४ कोरस अथवा स्थायी, टेक या अंतरा

तू मेरे समस्त शत्रुओं के जबड़े पर मारता है,
तू दुर्जनों के दांत तोड़ता है ।

८. उद्धार प्रभु से है :
प्रभु, तू अपने निज लोगों को आशिष दे ! सेलाह

संध्या की प्रार्थना : परमेश्वर पर भरोसा करो

मुख्य वादक के लिए : तांतयुक्त वाद्य यन्त्रों के साथ । दाऊद का गीत

४. हे मेरे संरक्षक परमेश्वर ! मेरी पुकार पर मुझे उत्तर दे !
जब मैं संकट में था, तब तूने मेरी सहायता की ।
अब मुझ पर अनुग्रह कर
और मेरी प्रार्थना सुन ।

२. ओ मानव! कब तक तुम मेरे गौरव को अपमानित करते रहोगे?
तुम कब तक निरर्थक बातों की अभिलाषा,
और असत्य की खोज करते रहोगे ? सेलाह

३. जान लो कि प्रभु अपने भक्त के लिये
अद्भुत कार्य करता है:[१]
जब मैं प्रभु को पुकारता हूँ, तब वह निस्संदेह सुनता है ।

४. कांपते रहो और पाप मत करो :[२]
शैया पर लेटकर हृदय में विचार करो, और शांत हो । सेलाह

५. विधि-सम्मत बलि चढ़ाओ,
और प्रभु पर भरोसा करो ।

६. अनेक मनुष्य यह कहते हैं,

---

१ अथवा, भक्त को अपने लिये पृथक कर रखा है ।
२ पाठांतर, क्रोध तो करो, पर पाप मत करो ।

"काश ! हम भलाई को देख पाते ।"
प्रभु, अपने मुख की ज्योति हम पर प्रकाशित कर !

७. तूने मेरे हृदय को उससे कहीं अधिक आनन्द प्रदान किया है,
जो उन्हें अंगूर और अन्न की प्रचुरता के समय होता है ।

८. मैं शांतिपूर्वक लेटता, और सकुशल सोता हूँ;
क्योंकि प्रभु, तू ही मुझे सुरक्षित रखता है ।

रक्षा के लिये प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए । बांसुरियों के साथ । दाऊद का गीत

५. प्रभु, मेरे शब्दों पर कान दे,
मेरी मौन प्रार्थना[1] पर विचार कर ।

२. हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर,
मेरी दुहाई पर ध्यान दे,
क्योंकि मैं तुझसे ही प्रार्थना करता हूँ ।

३. प्रभु, प्रातः तू मेरी पुकार सुनता है,
प्रातः मैं तेरे लिए बलि तैयार करता
और तेरी प्रतीक्षा करता हूँ ।

४. तू ऐसा ईश्वर है जो दुराचार से प्रसन्न नहीं होता;
तेरे साथ बुराई रह नहीं सकती ।

५. तेरे संमुख अहंकारी खड़े न हो सकेंगे,
तू कुकर्मियों से घृणा करता है ।

६. तू झूठ बोलने वालों को नष्ट करता है ।
प्रभु, तू हत्यारों और धूर्तों से घृणा करता है ।

७. पर मैं तेरी करुणा के कारण तेरे घर में प्रवेश करूंगा,
मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर भयभाव से वंदना करूंगा ।

---

१ अथवा, धीमे शब्दों में की गई प्रार्थना ।

८. मेरी घात में बैठे शत्रुओं के कारण,
प्रभु, अपने धर्म-पथ पर मुझे ले चल।
मेरे समक्ष अपना मार्ग सीधा बना।

९. उनके मुंह में सत्य नहीं है,
उनका हृदय विनाश है,
उनका गला खुली कबर है,
वे अपनी जीभ से ठकुर-सुहाती करते हैं।

१०. परमेश्वर, उनको अपराधी घोषित कर,
उनको अपनी ही सम्मति के कारण गिरने दे,
उनके अपराधों की अधिकता के कारण उन्हें बाहर निकाल दे;
क्योंकि उन्होंने तुझसे विद्रोह किया है।

११. पर तू अपनी शरण में आनेवालों को आनन्दित कर।
वे सदा गाते रहे,
क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है।
तेरे नाम के प्रेमी फूले न समाएं।

१२. प्रभु, तू धार्मिक मनुष्य को आशिष देता है,
तू ढाल के सदृश उसको अपनी कृपा से घेरे रहता है।

संकट में दया-दृष्टि के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य यन्त्रों के साथ। शमीनीत में दाऊद का गीत

६. प्रभु, क्रोध से मुझे न डांट,
तू मुझे अपने रोष से ताड़ित न कर!

२. प्रभु, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं दुर्बल हूं;
प्रभु, मुझे स्वस्थ कर, क्योंकि मेरी अस्थियां बेचैन हैं,

३. मेरा प्राण भी बहुत बेचैन है;
पर तू, हे प्रभ, कब तक?

४. प्रभु, लौट; मेरे प्राण बचा,
अपने करुण स्वभाव के कारण मुझे मुक्त कर !
५. क्योंकि मृत्यु की स्थिति में तेरा स्मरण करना संभव नहीं;
कौन व्यक्ति मृतक लोक में तेरी स्तुति कर सकता है ?

६. मैं सिसकते-सिसकते थक गया ;
मैं प्रति रात अपने बिछौने को आंसुओं से भिगोता हूं,
अश्रुपात से मेरी शैया डूब जाती है ।
७. मेरी आंखें शोक से धुंधली होने लगी हैं,
मेरे बैरियों के कारण वे कमजोर हो गई हैं ।
८. कुकर्मियो ! मुझसे दूर हो;
प्रभु, मेरे विलाप पर ध्यान देता है ।
९. प्रभु ने मेरी विनती सुनी है;
वह मेरी प्रार्थना भी स्वीकार करता है ।
१०. मेरे शत्रु लज्जित और बहुत बेचैन होंगे,
वे पीठ दिखाएंगे और क्षण में उनका अपयश होगा ।

न्याय के लिए प्रार्थना

दाऊद का शिग्गायोन जिसको उसने बिन्यामिनी कुल के कूश की बातों के कारण प्रभु के सामने गाया था

७. प्रभु, मेरे परमेश्वर ! मैं तेरी शरण में आया हूं;
मेरा पीछा करने वालों से मुझे बचा,
उनसे मुझे मुक्त कर ।
२. ऐसा न हो कि वे सिंह के समान मुझे पकड़ लें,
मेरे टुकड़े-टुकड़े करें, और मुझे बचानेवाला कोई न हो ।

३. प्रभु, मेरे परमेश्वर, यदि मैंने यह किया,
यदि मेरे हाथों से अधर्म हुआ,

४. यदि मैंने अपने मित्र से बदले में बुराई की,
अथवा अपने शत्रु को अकारण लूटा,
५. तो शत्रु मेरा पीछा करे, मुझे पकड़े,
मेरे प्राण को पैरों तले भूमि पर रौंदे,
और मेरे सम्मान को मिट्टी में मिला दे । **सेलाह**

६. हे प्रभु, रोष से उठ!
मेरे शत्रुओं के क्रोधोन्माद के विरुद्ध खड़ा हो !
हे मेरे परमेश्वर, जाग !
तू ने न्याय का आदेश दिया है ।
७. तेरे चारों ओर विश्व की सब जातियां एकत्र हों,
और उनके मध्य तू उच्चासन पर विराजे ।
८. तू, प्रभु सब जातियों का न्याय करता है;
मेरी धार्मिकता के अनुसार,
प्रभु, मेरा न्याय कर;
क्योंकि मैं निर्दोष हूं ।

९. भला हो कि दुष्ट की दुष्टता नष्ट हो,
और तू धार्मिक मनुष्य को प्रतिष्ठित करे ।
मन और हृदय को परखनेवाला परमेश्वर धर्ममय है ।
१०. सत्यनिष्ठ को बचानेवाला परमेश्वर मेरी ढाल है ।
११. परमेश्वर सच्चा न्यायाधीश है,
वह दुर्जनों पर निरंतर क्रोध करने वाला ईश्वर है ।

१२. यदि मनुष्य पश्चाताप न करे,
तो परमेश्वर अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा ।
सचमुच उसने अपना धनुष चढ़ाया और तीर संधान किया है ।
१३. उसने अपने मारक शस्त्र तैयार किए हैं;
वह अपने तीरों को अग्नि अस्त्र बना रहा है ।

१४. देखो, दुष्ट ने गर्भ धारण किया;
उसे दुष्कर्म का गर्भ है,
और उससे झूठ का जन्म हुआ है।
१५. उसने खोदकर एक गढ़ा बनाया,
पर वह स्वयं उस गढ़े में गिरा, जिसको उसने खोदा था।
१६. उसका दुष्कर्म उसी के सिर पर लौटेगा,
उसके ही माथे पर उसकी हिंसा पड़ेगी।
१७. मैं प्रभु की धार्मिकता के लिए उसका स्तुतिगान करूंगा,
मैं सर्वोच्च परमेश्वर के नाम का गुणगान करूंगा।

परमेश्वर की महिमा : मानव का सम्मान

मुख्यवादक के लिए। गित्तीत के अनुसार। दाऊद का गीत

८. हे प्रभु, हमारे स्वामी!
तेरा नाम समस्त पृथ्वी पर कितना महान् है!
तेरी महिमा का स्तुतिगान स्वर्ग पर होता है,
२. शिशुओं और बच्चों के मुख से तेरी स्तुति होती है।
अपने बैरियों के कारण,
अपने शत्रु और प्रतिशोधी का अंत करने के लिए
तूने एक गढ़ बनाया है।
३. जब मैं देखता हूं तेरे आकाश को, जो तेरा हस्त-शिल्प है,
चंद्रमा एवं नक्षत्रों को जिन्हें तूने स्थापित किया है,
४. तब मानव क्या है कि तू उसका स्मरण रखे।
मानव-संतान क्या है कि तू उसकी सुधि ले?
५. तौभी तूने उसे ईश्वर से कुछ घटकर बनाया,
और उसे महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया।
६. तू ने उसे अपने हस्त-शिल्प पर अधिकार दिया;
तू ने सब कुछ उसके पांवों-तले कर दिया।

७ भेड़-बकरी, गाय-बैल,
और वन-पशु भी,
८. आकाश के पक्षी, सागर की मछलियां,
और वह सब कुछ जो समुद्र के मार्गों में विचरण करता है।

९. हे प्रभु, हमारे स्वामी,
तेरा नाम समस्त पृथ्वी पर कितना महान् है !

परमेश्वर के न्याय के लिए स्तुतिगान

मुख्यवादक के लिए। मूतलब्बेन के अनुसार। दाऊद का गीत

९. प्रभु, मैं सम्पूर्ण हृदय से तेरा गुणगान करूंगा;
मैं तेरे अद्भुत कार्यों का वर्णन करूंगा।
२. मैं तुझ में हर्षित होऊंगा, मैं प्रफुल्लित होऊंगा;
हे सर्वोच्च प्रभु, मैं तेरे नाम की स्तुति गाऊंगा।

३. मेरे शत्रुओं ने पीठ दिखाई,
वे तेरी उपस्थिति से लड़खड़ाकर गिर पड़े और मर मिटे।
४. तूने मेरा न्याय किया, मेरे पक्ष में निर्णय दिया।
तूने सिंहासन पर बैठ कर सच्चाई से न्याय किया।
५. तूने राष्ट्रों को डांटा, और दुर्जनों को नष्ट किया;
तूने उनका नाम सदा-सर्वदा के लिए मिटा दिया।
६. तूने उनके नगर जड़ से उखाड़ दिए;
शत्रु अनन्त खण्डहरों में लुप्त हो गए;
उनके स्मृति चिन्ह ही मिट गए।

७. प्रभु सिंहासन पर युगयुगांत विराजमान है;
उसने अपना सिंहासन न्याय के लिए स्थापित किया है।
८. वह संसार का न्याय धार्मिकता से करता है,
वह लोगों का न्याय निष्पक्षता से करता है।

९. प्रभु उत्पीड़ित व्यक्ति के लिए गढ़ है;
बह संकट में शरण-स्थल है ।
१०. प्रभु, तेरे नाम को जानने वाले तुझ पर भरोसा करते हैं;
क्योंकि तू उन लोगों को नहीं छोड़ता है, जो तुझको खोजते हैं ।

११. सियोन पर विराजने वाले प्रभु का गुणगान करो;
जाति-जाति के लोगों में उसके कार्य प्रकट करो ।
१२. प्रभु पीड़ित को स्मरण रखता है ।
बह उसकी आह नहीं भूलता है ।
क्योंकि वह हत्या का प्रतिशोध लेने वाला प्रभु है!

१३. प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर ।
तू, जो मृत्यु-द्वार से मुझे ऊपर उठाता है।
देख मेरी पीड़ा को, जो मेरे शत्रु मुझे दे रहे हैं ।
१४. तब मैं तेरे समस्त गुणों का वर्णन करूंगा,
और सियोन के द्वारों पर तेरे उद्धार से आनन्दित होऊंगा ।

१५. राष्ट्र उस गढ़े में गिर पड़े, जो उन्होंने खोदा था,
वे स्वयं उस जाल में फंस गए, जो उन्होंने बिछाया था ।
१६. प्रभु ने स्वयं को प्रकट किया,
उसने न्याय किया,
दुर्जन अपने ही कर्मों के जाल में फंस गए । **हिग्गायोन सेलाह**

१७. दुर्जन मृतक लोक में जाएंगे,
और परमेश्वर को भूलने वाले राष्ट्र भी ।
१८. दरिद्र सदा विस्मृत न रहेंगे,
और पीड़ित की आशा सदैव टूटती न रहेगी ।

१९. प्रभु, उठ! मनुष्य को प्रबल न होने दे,
तेरे सम्मुख राष्ट्रों का न्याय किया जाए ।

२०. प्रभु, उन्हें भयभीत कर,
जिससे राष्ट्र जान लें कि वे केवल मनुष्य हैं। **सेलाह**

दुर्जन के पतन के लिए प्रार्थना

१०. भु, क्यों तू दूर खड़ा रहता है ?
क्यों मेरे संकट के समय तू स्वयं को छिपाता है ?
२ अहंकारवश दुर्जन पीड़ित मनुष्य का शिकार करते हैं;
वे स्वयं उस षडयंत्र में फंस जाएं, जिसे उन्होंने रचा है ।

३. दुर्जन अपनी अभिलाषा की डींग मारता है;
वह स्वयं की प्रशंसा करता, पर प्रभु की निन्दा करता है।
४. अहंकारवश दुर्जन प्रभु को खोजता नहीं,
उसका यह विचार है, "परमेश्वर है ही नहीं।"
५. वह सदा अपने मार्ग पर फलता-फूलता है;
तेरे न्याय-सिद्धांत उसकी दृष्टि से दूर, शिखर पर हैं,
वह अपने सब शत्रुओं पर फूत्कारता है।
६ वह अपने हृदय में यह सोचता है, "मैं अटल हूं।
मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक संकट में नहीं पड़ूंगा।"
७. उसका मुंह कपट, शाप और अत्याचार से भरा है;
उसकी जीभ पर अनिष्ट और अपकार हैं।
८. वह गांवों में घात लगाकर बैठा रहता है,
वह गुप्त स्थानों में निर्दोष की हत्या करता है ।
उसकी आँखें छिपे-छिपे शिकार को ताकती हैं।

९. वह एकांत में घात लगाकर बैठता है, जैसे सिंह झाड़ी में ।
वह घात में बैठता है कि पीड़ित को दबोचे,
जब वह पीड़ित को जाल में फंसा लेता है, तब उसे दबोचता है।

१०. अभागा मनुष्य दब जाता और झुक जाता है,
और उसके प्रबल दबाव से गिर पड़ता है।

११. अभागा अपने हृदय में यह सोचता है,
"परमेश्वर मुझे भूल गया।
उसने अपना मुख छिपा लिया।
वह फिर कभी इधर नहीं देखेगा।"

१२. हे प्रभु! उठ, अपना हाथ उठा।
तू पीड़ित मनुष्य को मत भूल!

१३. दुर्जन तुझ परमेश्वर का क्यों तिरस्कार करता है?
क्यों वह अपने हृदय में यह सोचता है, "तू लेखा न लेगा?'

१४. पर तू देखता है, निश्चय ही तूने
बुराई और अत्याचार पर ध्यान दिया है;
तू उसे अपने हाथ में लेगा।
अभागा मनुष्य स्वयं को तेरे हाथ में सौंपता है;
क्योंकि तू अनाथों का नाथ है।

१५. दुर्जन और अधर्मी के हाथ को तोड़ दे;
उसकी दुष्टता को ढूंढ़कर निकाल,
जब तक वह लेश मात्र भी शेष न रहे।

१६. प्रभु युग-युगांत राजा है,
उसकी धरती से राष्ट्र मिट जाएंगे।

१७-१८. अनाथ और दलित के न्याय के लिये,
प्रभु, तू पीड़ित मनुष्य की पुकार सुनता है;
तू उनके हृदय को आश्वस्त करेगा,
तू उनकी पुकार ध्यान से सुनेगा,
जिससे मनुष्य, जो मिट्टी से रचा गया है,
फिर कभी दूसरों को भयभीत न करे।

सच्चे व्यक्ति का आश्रय-स्थल

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

११. मैं प्रभु की शरण में आया हूं।
फिर तुम मुझसे कैसे कह सकते हो,
"पंछी, अपने पर्वत को उड़ जा!
२. देख, दुर्जनों ने धनुष चढ़ाया है;
उन्होंने प्रत्यंचा पर बाण रखे हैं,
कि अंधकार में सत्यनिष्ठ लोगों के प्राण लें।
३. यदि आधार ही नष्ट हो गया,
तो धार्मिक मनुष्य क्या कर सकता है?"

४. प्रभु अपने पवित्र मंदिर में है,
प्रभु का सिंहासन स्वर्ग में है,
उसकी आंखें मानव-संतान को निहारती हैं,
उसकी पलकें उनको जांचती हैं।
५. प्रभु धार्मिक और दुर्जन को परखता है,
उसकी आत्मा हिंसा-प्रिय लोगों से घृणा करती है
६. वह दुर्जनों पर गंधक की वर्षा करेगा;
झुलसाने वाली प्रचण्ड लू उन्हें झेलनी पड़ेगी।
७. प्रभु धर्ममय है, उसे धार्मिक कार्य प्रिय हैं;
धर्मपरायण व्यक्ति उसके मुख का दर्शन करेंगे।

दुर्जन के विरुद्ध सहायता के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। शमीनीत के अनुसार। दाऊद का गीत

१२. प्रभु, रक्षा कर, क्योंकि धर्मपरायण व्यक्ति अब नहीं रहे।
मनुष्यों के मध्य से सब विश्वासी लोग लुप्त हो गए।

२. प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसी से झूठ बोलता है,
वे चाटुकार ओठों से दुरंगी बातें करते हैं।

३. भला हो कि प्रभु चाटुकार ओंठों को,
और घमण्ड से बातें बोलने वाली जीभ को काट दे,
४. जो यह कहते हैं, "हम अपनी जिह्वा के बल पर प्रबल होंगे;
हमारे ओंठ हमारे वश में हैं; हमारा स्वामी कौन है?"

५ "पीड़ित लुट गए, दरिद्र विलाप करते हैं।
इस कारण अब मैं उठूंगा," प्रभु यह कहता है,
"मैं उसे सुरक्षित रखूंगा, जो वह चाहता है।"
६. प्रभु का वचन शुद्ध वचन है,
जैसे शुद्ध चांदी,
जो भट्टी में सात बार शोधित की गई।

७. प्रभु, तू ही हमारी रक्षा कर;
हमें इस पीढ़ी से निरंतर बचाए रख।
८. जब मनुष्यों के मध्य नीचता की प्रशंसा की जाती है,
तब नीच लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं।

बिपत्ति में सहायता के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

१३. कब तक प्रभु? क्या तू मुझे सदा भूला रहेगा?
कब तक तू अपना मुख मुझसे छिपाए रखेगा?
२. कब तक मैं अपने को समझाता रहूंगा?
मेरे हृदय में दिन भर वेदना होती है,
कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल होता रहेगा?

३. हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, मुझ पर दया-दृष्टि कर, और मुझे उत्तर दे
मेरी आंखें आलोकित कर, जिससे मैं मृत्यु की नींद न सोऊं।
४. ऐसा न हो कि मेरा शत्रु यह कहे, "मैं उस पर प्रबल हुआ।"
ऐसा न हो कि मेरे बैरी आनन्दित हों, कि मैं उखड़ गया।

५. मैंने तेरी करुणा पर भरोसा किया है,
मेरा हृदय तेरे उद्धार से आनन्द-मगन होगा ।
६. मैं प्रभु का स्तुतिगान करूंगा,
क्योंकि उसने मुझ पर उपकार किया है।

मनुष्य की मूर्खता और दुष्टता

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गात

१४. मूर्ख अपने हृदय में यह कहते हैं,
"परमेश्वर है ही नहीं।"
वे भ्रष्ट हो गए हैं और अन्याय करते हैं,
ऐसा कोई भी नहीं जो भलाई करता है।

२. प्रभु स्वर्ग से मनुष्यों पर दृष्टिपात करता है
यह देखने के लिए कि क्या कोई मनुष्य है,
जो समझ से काम लेता है,
जो परमेश्वर को खोजता है ?
३. सब मनुष्य मार्ग से भटक गए हैं, सब एक-जैसे भ्रष्ट हो गए हैं;
ऐसा कोई भी नहीं, जो भलाई करता है;
नहीं, एक भी नहीं।

४. मेरे लोगों का खून चूसनेवाले कुकर्मी,[1]
क्या बिलकुल नासमझ हैं ?
वे मुझ प्रभु की आराधना नहीं करते।

---

१ अथवा, 'रोटी के समान खाने वाले'

५. वहाँ वे अत्यंत आतंकित हो उठे;
क्योंकि परमेश्वर धार्मिक पीढ़ी के साथ है।
६. तुम पीड़ित व्यक्ति के प्रयत्न विफल करना चाहते हो;
परंतु प्रभु उसका आश्रय-स्थल है।

७. भला हो कि सियोन से इस्राएल का उद्धार प्रकट हो।
जब प्रभु अपने निज लोगों को समृद्धि पुनः प्रदान करेगा,
तब याकूब आनन्द मनाएगा, और इस्राएल हर्षित होगा।

परमेश्वर के पर्वत के निवासी

दाऊद का गीत

१५. प्रभु, तेरे शिविर में कौन ठहर सकता है?
तेरे पवित्र पर्वत पर कौन निवास कर सकता है?

२. वह मनुष्य जिसका आचरण निर्दोष है,
जो सत्कर्म करता है,
जो हृदय से सच बोलता है;
३. जो अपने मुंह से परनिन्दा नहीं करता,
जो अपने साथी के साथ बुराई नहीं करता,
जो अपने पड़ोसी के विषय में अपवाद नहीं फैलाता;
४. जिसकी दृष्टि में अधार्मिक मनुष्य तुच्छ है,
पर जो प्रभु के भक्तों का आदर करता है,
जो हानि उठाकर भी अपने वचन से नहीं फिरता,
५. जो अपना धन ब्याज पर नहीं देता,
जो निर्दोष मनुष्य के विरुद्ध घूस नहीं लेता।

ये कार्य करने वाला मनुष्य सदा अटल रहेगा।

उत्तम पैतृक सम्पत्ति

दाऊद का गीत

१६. हे परमेश्वर, मुझे सुरक्षित रख;
क्योंकि मैं तेरी शरण में आया हूं।
२. मैंने प्रभु से यह कहा, "तू ही मेरा स्वामी है;
तुझसे अलग मेरी भलाई नहीं।"

३. पवित्र जन, जो धरती पर हैं, आदरणीय हैं,
उनमें ही मेरा समस्त सुख है।

४. जो व्यक्ति अन्य देवताओं का अनुसरण करते हैं,
वे अपने दुख को बढ़ाते हैं।
मैं उन देवताओं के लिए न रक्त की पेयबलि उंडेलूंगा,
और न उनका नाम ही अपनी जीभ पर लाऊंगा।

५. प्रभु, तू मेरा कटोरा है,
तू मेरा अंश है,
जो मुझे दिया गया है।
तू ही मेरे भाग को संभालता है।
६. मेरे लिए माप की डोरी रमणीय स्थान में पड़ी,
निस्संदेह मेरी पैतृक सम्पति उत्तम है।

७. मैं प्रभु को धन्य कहूंगा; वह मुझे परामर्श देता है;
घोर अंधकार में भी मेरा हृदय मुझे चेतावनी देता है।
८. मैं प्रभु को निरंतर अपने समक्ष रखता हूं;
वह मेरी दाहिनी ओर है, इसलिए मैं अटल हूं।

९. अत: मेरा हृदय हर्षित और प्राण उल्लसित है।
मेरा शरीर भी सुरक्षित है।

१०. तू ने मेरे प्राण को मृतक-लोक में नहीं छोड़ा,
और न अपने भक्त को मृत्यु का ग्रास बनने दिया ।

११. तू मुझे जीवन-मार्ग दिखाता है;
तेरी उपस्थिति परमानन्द है;
तेरे दाहिने हाथ में सदा-सर्वदा स्वर्ग-सुख है ।

अत्याचारी से बचने के लिए प्रार्थना

दाऊद का गीत

१७. हे प्रभु, सत्य पक्ष को सुन;
मेरी पुकार पर ध्यान दे ।
मेरी प्रार्थना पर कान दे,
क्योंकि यह मेरी निष्कपट जीभ से निकली है ।

२. तेरी उपस्थिति में मेरा न्याय हो,
तेरी आंखें सच्चाई को देखें ।

३. यदि तू मेरे हृदय को जांचता,
यदि तू रात में मेरा निरीक्षण करता ।
यदि तू मुझे परखता,
तो मुझमें तुझे बुराई नहीं मिलती ।
मेरी वाणी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती,

४. जहां तक मेरे मानवीय कार्यों का संबंध है,
तेरे ओठों के शब्द द्वारा
मैंने हिंसकों के मार्ग से स्वयं को बचाया है ।

५. मेरे पग तेरे मार्गों पर दृढ़ रहे;
मेरे पैर नहीं फिसले ।

६. मैं तुझे ही पुकारता हूँ;
क्योंकि हे परमेश्वर, तू मुझे उत्तर देगा;
अपना कान मेरी ओर कर, मेरे शब्दों को सुन ।

७. अद्भुत रीति से अपनी करुणा प्रकट कर,
ओ शरणागतों के उद्धारक !
तू अपने भुजबल से उनकी रक्षा करता है ।
८. आंख की पुतली जैसे मुझे संभाल,
अपने पंखों की छाया में मुझे छिपा ।
९. उन दुर्जनों से, जो मुझे लूटते हैं,
मेरे प्राणघातक शत्रुओं से, जो मुझे घेरते हैं ।

१०. उन्होंने अपना हृदय पत्थर बना लिया है,
वे अपने मुंह से धृष्ट वचन निकालते हैं ।
११. उन्होंने पग-पग पर मेरा पीछा किया,
और अब मुझे घेर लिया है ।
उन्होंने अपनी आंखें मुझ पर गड़ाई हैं
कि वे मुझे धरती पर पटक दें ।
१२. वे उस सिंह के सदृश हैं, जो फाड़ने को तत्पर है,
वे उस युवा सिंह जैसे हैं, जो गुप्त स्थान में घात लगाए है ।

१३. प्रभु, उठ ! उनका सामना कर;
उन्हें पराजित कर ।
हे प्रभु, अपनी तलवार द्वारा दुर्जन से मुझे छुड़ा,
१४. अपने हाथों द्वारा मनुष्यों से,
पृथ्वी के उन पुरुषों से, जिनका भाग इसी जीवन में है,
मेरे प्राण को मुक्त कर ।
उनके पेट तेरे दण्ड-भण्डार से भरे जाएं;
उनके पुत्रों को यथेष्ट से अधिक दंड मिले;
वे अपने बच्चों के लिए भी पर्याप्त दंड छोड़ जाएँ ।

१५. परंतु मैं अपनी धार्मिकता के कारण तेरे मुख का दर्शन करूंगा;
जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप को देखकर संतुष्ट होऊंगा ।

दाऊद का मुक्तिगान

मुख्यवादक के लिए। प्रभु के सेवक दाऊद का गीत

(दाऊद ने प्रस्तुत गीत के शब्दों में प्रभु को उस दिन संबोधित किया, जब प्रभु ने दाऊद को उसके शत्रुओं के हाथ से, शाऊल के पंजे से मुक्त किया था। तब दाऊद ने यह गाया :)

१८. हे प्रभु, मेरी सामर्थ्य[1]! मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।

२. हे प्रभु, मेरी चट्टान, !
तू ही मेरा आश्रय-स्थल और मुक्तिदाता है।
तू मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान है,
मैं तेरी शरण में आया हूँ।
तू मेरी ढाल, मेरा शक्तिशाली उद्धारकर्त्ता, मेरा गढ़ है।

३. मैं प्रभु को पुकारता हूँ, जो सर्वथा स्तुति के योग्य है।
मैं अपने शत्रुओं से मुक्त हुआ हूँ।

४. मृत्यु के पाश ने मुझे लपेट लिया।
विनाश की बाढ़ ने मुझ पर आक्रमण किया,
५. मृतक-लोक के पाश-बंधन ने मुझे उलझाया,
मृत्यु-जाल मेरे समक्ष आया।

६. मैंने संकट में प्रभु को पुकारा,
मैंने अपने परमेश्वर की दुहाई दी।
उसने अपने मंदिर से मेरी वाणी सुनी,
मेरी दुहाई उसके कानों में पहुँची।

---

१. अथवा, 'मेरा सामर्थ्य'

७. तब धरती में कंपन हुआ, और वह डोल उठी;
पर्वतों की नींव कंपित होकर हिल गई;
क्योंकि प्रभु अति क्रुद्ध था ।

८. उसके नथुनों से धुआं निकलने लगा,
और उसके मुख से भस्म करने वाली अग्नि;
उससे दहकते अंगारे निकल पड़े ।

९. वह स्वर्ग को झुकाकर नीचे उतर आया ।
उसके चरणों तले गहन अंधकार था ।

१०. वह करूब पर सवार होकर उड़ गया;
वह वेगपूर्वक पवन के पंखों पर उतरा ।

११. उसने अंधकार को अपने चारों ओर ओढ़ लिया;
गगन के काले मेघ उसका शिविर थे ।

१२. उसके सम्मुख प्रकाश था ।
वहां ओले और दहकते अंगारे
सघन मेघों से फूट पड़े ।

१३. प्रभु स्वर्ग में गरज उठा;
सर्वोच्च परमेश्वर ने नाद किया,
ओले और दहकते अंगारे ।

१४. उसने बाण छोड़े, और उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया;
विद्युत की चमक से उनमें भगदड़ मचा दी ।

१५. तब हे प्रभु, तेरी डाँट से,
तेरी नासिका के श्वास के धमाके से
समुद्र के झरने दिखाई दिए,
पृथ्वी की नींव प्रकट हुई ।

१६. प्रभु ने ऊँचे स्थान से अपना हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया;
उसने मुझे गहरे सागर के ऊपर खींच लिया ।

१७. उसने मेरे शक्तिवान शत्रु से,
और मुझसे घृणा करने वालों से

मुझे मुक्त किया;
मेरे शत्रु मुझसे अधिक प्रबल थे।

१८. वे संकटकाल में मुझपर चढ़ आए;
परंतु प्रभु मेरा सहारा था।

१९. प्रभु ने मुझे खुले स्थान में पहुँचाया;
उसने मुझे मुक्त किया; क्योंकि वह मुझसे प्रसन्न था।

२०. प्रभु ने मेरी धार्मिकता के अ ुसार मुझे फल दिया;
मेरे हाथों की शुद्धता के अनुरूप मुझे पुरस्कार दिया।

२१. मैं प्रभु के मार्गों पर चलता रहा,
और दुष्टतावश अपने परमेश्वर से पृथक नहीं हुआ।

२२. उसके समस्त न्याय-सिद्धांत मेरे सम्मुख रहे;
मैंने उसकी संविधियों को अपने से अलग नहीं किया।

२३. मैं उसके सम्मुख निर्दोष रहा;
मैंने अपने को अपराधों से बचाए रखा।

२४. अतः प्रभु ने मेरी धार्मिकता के अनुसार,
अपनी दृष्टि में मेरे हाथों की शुद्धता के अनुरूप,
मुझे पुरस्कृत किया।

२५. भक्त के साथ तू भक्त है,
और निर्दोष के साथ निर्दोष।

२६. सिद्ध के लिए तू सिद्ध है,
पर कुटिल के लिए कुटिल।

२७. तू विनम्र लोगों का उद्धार करता है,
पर गर्व से चढ़ी हुई आंखों को नीचा।

२८. निश्चय तू मेरे दीपक को जलाता है;
मेरा प्रभु परमेश्वर मेरे अंधकार को ज्योतिर्मय करता है।

२९. मैं तेरे सहारे सेना को कुचल सकता हूं;
मैं अपने परमेश्वर की सहायता से किले की दीवार लांघ सकता हूं।

३०. परमेश्वर का मार्ग सीधा है,
प्रभु की प्रतिज्ञा कसौटी-सिद्ध है,
वह अपने समस्त शरणागतों की ढाल है।

३१. प्रभु के अतिरिक्त और कौन परमेश्वर है?
हमारे परमेश्वर को छोड़ और कौन चट्टान है?
३२. यही परमेश्वर मुझे शक्तिसम्पन्न करता है।
मेरे मार्ग को कंटकहीन बनाता है।
३३. वह मेरे पैरों को हिरनी के पैरों जैसी गति प्रदान करता है।
वह पहाड़ी गुफाओं में मुझे सुरक्षित रखता है।
३४. वह युद्ध के लिए मेरे हाथों को प्रशिक्षित करता है;
अतः मेरी बांहें पीतल के धनुष को मोड़ सकती हैं।
३५. तूने मुझे अपने उद्धार की ढाल दी है;
तेरे दाहिने हाथ ने मुझे सहारा दिया है;
तेरी सहायता ने मुझे महान् बनाया है।
३६. तू ने मेरा मार्ग चौड़ा किया कि मेरे पग आगे बढ़ें,
और मेरे पैर न फिसलें।
३७. मैंने शत्रुओं का पीछा किया, और उन्हें पकड़ लिया;
मैं तब तक न लौटा, जब तक उन्हें नष्ट न कर दिया।
३८. मैंने उन्हें ऐसा मारा कि वे फिर न उठ सके;
वे मेरे पैरों पर गिर पड़े।
३९. तू ने मुझे युद्ध के लिये शक्ति से भर दिया।
तू ने आक्रमणकारियों को मेरे सम्मुख झुका दिया।
४०. तू ने मेरे शत्रुओं को विवश किया कि वे पीठ दिखाकर भागें।
मैंने उन्हें नष्ट कर दिया, जो मुझसे घृणा करते थे।
४१. उन्होंने दुहाई दी, पर उन्हें बचानेवाला कोई न था।
उन्होंने प्रभु को पुकारा, पर प्रभु ने उन्हें उत्तर न दिया।
४२. मैंने उन्हें चूर-चूर कर दिया, जैसे पवन के सम्मुख धूल।
मैंने उन्हें पथ की कीच के समान निकाल फेंका।

४३. तूने मुझे उपद्रवी जातियों के संघर्ष से छुड़ाया,
और मुझे राष्ट्रों का अध्यक्ष बनाया।
उन ज़ातियों ने मेरी सेवा की जिन्हें मैं जानता भी न था।
४४. जैसे ही उन्होंने मेरा नाम सुना,
मेरे आदेशों की पूर्ति की,
विदेशी वंदना करते हुए मेरे सम्मुख आए।
४५. वे विदेशी शिथिल हो गए,
और अपने किलों से कांपते हुए निकले।

४६. प्रभु जीवंत है, धन्य है मेरी चट्टान;
मेरे उद्धारक परमेश्वर का गुणगान हो।
४७. वह प्रतिशोधी परमेश्वर है; उसने मेरे लिए प्रतिशोध लिया;
उसने कौमों को मेरे अधीन कर दिया।
४८. प्रभु ने मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त किया,
तू ने मेरे विरोधियों के सम्मुख मुझे उन्नत किया;
तू ही हिंसक व्यक्तियों से मेरा उद्धार करता है।

४९. अतः हे प्रभु, मैं राष्ट्रों में तेरा गुणगान करूँगा;
मैं तेरे नाम का स्तुतिगान करूँगा।
५०. तू अपने राजा को महान् विजय प्रदान करता है,
तू अपने अभिषिक्त राजा दाऊद एवं उसके वंश पर
युग-युगांत करुणा करता है।

परमेश्वर के कर्म और उसकी व्यवस्था

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

१९. आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है,
आकाश का मेहराब उसके हस्त कार्य को प्रकट करता है।

२. दिन से दिन निरंतर वार्तालाप करता है,
 और रात, रात को ज्ञान प्रदान करती है।
३. न तो वाणी है, और न शब्द ही हैं,
 उनका स्वर सुना नहीं गया।
४. फिर भी उनकी आवाज समस्त पृथ्वी पर फैल जाती है,
 और पृथ्वी के सीमांत तक उनके शब्द।
 परमेश्वर ने आकाश के मध्य सूर्य के लिए
 एक शिविर स्थापित किया है।
५. वह ऐसे उदित होता है, जैसे दूल्हा मण्डप से बाहर आता है।
 वह वीर धावक के समान
 अपनी दौड़ दौड़ने में आनन्दित होता है।
६. आकाश का एक सीमांत उसका उदयाचल है,
 और उसके परिभ्रमण का क्षेत्र दूसरे सीमांत तक है,
 उसके ताप से कुछ नहीं छूटता।

७. प्रभु की व्यवस्था सिद्ध है, आत्मा को संजीवन देनेवाली;
 प्रभु की साक्षी विश्वसनीय है, बुद्धिहीन को बुद्धि देनेवाली;
८. प्रभु के आदेश न्याय-संगत हैं, हृदय को हर्षाने वाले;
 प्रभु की आज्ञा निर्मल है, आंखों को आलोकित करने वाली;
९. प्रभु का भय पवित्र है, सदा स्थिर रहनेवाला;
 प्रभु के न्याय-सिद्धांत सत्य हैं, वे सर्वथा धर्ममय हैं।
१०. वे सोने से अधिक चाहने योग्य हैं;
 वस्तुतः शुद्ध सोने से भी अधिक;
 वे मधुकोष से टपकती मधु की बूंदों से अधिक मधुर हैं।

११. इनके द्वारा तेरा सेवक सावधान भी किया जाता है;
 इनका पालन करना बहुत लाभप्रद है।

१२. अपनी भूलों का ज्ञान किसे हो सकता है ?
तू, प्रभु मुझे गुप्त दोषों से मुक्त कर।
१३. अपने सेवक को धृष्ट पाप करने से रोक;
उसे मुझ पर प्रभुत्व मत करने दे।
तब मैं निरपराध होऊंगा,
और बड़े अपराधों से मुक्त हो जाऊंगा।

१४. हे प्रभु, मेरी चट्टान और मेरे उद्धारक !
मेरे मुंह के शब्द और हृदय का ध्यान
तू स्वीकार करे।

विजय के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

२०. संकट के दिन प्रभु तुझे उत्तर दे !
याकूब का परमेश्वर तेरी रक्षा करे !
२. वह अपने पवित्र स्थान से तेरी सहायता करे !
वह सियोन से तुझे सहारा दे।
३. वह तेरी समस्त भेंटों को स्मरण करे;
वह तेरी अग्निबलि को ग्रहण करे।
४. वह तेरी मनोकामनाएँ पूर्ण करे;
वह तेरी समस्त योजनाएँ सफल करे।
५. हम तेरी विजय पर जयजयकार करें;
हम अपने परमेश्वर के नाम से ध्वजा फहराएँ।
प्रभु तेरे समस्त निवेदन स्वीकार करे !

६. अब मैं जान गया
कि प्रभु अपने अभिषिक्त राजा की सहायता करेगा;

अपने भुजबल से अर्जित महान् विजयों के रूप में,
वह उसे अपने पवित्र स्वर्ग से उत्तर देगा ।
७. कुछ लोग रथों पर, कुछ अश्वों पर अहंकार करते हैं;
परंतु हमें अपने प्रभु परमेश्वर के नाम पर गर्व है ।
८. वे घुटने टेकेंगे और उनका पतन होगा;
किंतु हम उठेंगे, और सीधे खड़े हो जाएंगे ।
९. हे प्रभु, राजा को विजय प्रदान कर;
जब हम तुझे पुकारें तब तू हमें उत्तर दे ।

शत्रु से मुक्त होने पर स्तुतिगान

मुख्यवादक के लिए । दाऊद का गीत

२१. हे प्रभु, तेरी शक्ति पर राजा हर्षित है,
तेरी विजय पर वह कितना उल्लसित है ।
२. तू ने उसकी मनोकामना पूर्ण की,
तू ने उसके निवेदन की उपेक्षा नहीं की । **सेलाह**
३. तू शुभ आशिषों के साथ उसके पास आता है;
तू उसके सिर पर सोने का मुकुट रखता है ।
४. वह तुझ से जीवन मांगता है, और तू उसे देता है,
युग-युगांत तक दीर्घ जीवन ।
५. तेरी सहायता से उसकी महिमा बढ़ी है,
तू ने उसे ऐश्वर्य एवं तेज से विभूषित किया है ।
६. निस्सन्देह तू ने उसे सदा के लिए आशिष का स्रोत बनाया है ।
अपनी उपस्थिति के परमानन्द से तू उसे सुखी करता है ।
७. राजा प्रभु पर भरोसा करता है;
अतः वह सर्वोच्च परमेश्वर की करुणा द्वारा अटल बना रहेगा ।

८. तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूंढ़ निकालेगा;
तेरा दाहिना हाथ तेरे बैरियों को खोज निकालेगा ।

९. जब तू प्रकट होगा
तब तू उन्हें दहकता तंदूर बना देगा।
प्रभु, तू अपने कोप में उन्हें निगल जाएगा;
और अग्नि उन्हें भस्म कर देगी।
१०. तू उनकी संतान को धरती से मिटा देगा,
और उनके वंश को मानव जाति के बीच से।
११. यदि वे तेरे विरुद्ध बुराई का प्रयत्न करेंगे,
यदि वे षड्यंत्र रचेंगे तो भी सफल न होंगे।
१२. तू उन्हें पीठ दिखाने को विवश करेगा;
तू उनके मुख को अपने बाण का लक्ष्य बनाएगा।

१३. हे प्रभु, अपनी सामर्थ्य की महानता को प्रकट कर;
तब हम गीत गाएंगे।
तेरे पराक्रम का यशोगान करेंगे।

व्यथित व्यक्ति की पुकार। स्तुतिगान

मुख्यवादक के लिए। "प्रभात की हरिणी" के अनुसार। दाऊद का गीत

२२. हे परमेश्वर! हे मेरे परमेश्वर! तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?
तू मेरी सहायता क्यों नहीं करता?
तू मेरा कराहना क्यों नहीं सुनता?
२. हे परमेश्वर, मैं दिन में पुकारता हूँ, पर तू उत्तर नहीं देता;
रात में भी तुझे शांति नहीं मिलती।

३. फिर भी तू पवित्र है;
इस्राएल की आराधना में विद्यमान है।
४. तुझ पर हमारे पूर्वजों ने भरोसा किया था,
उन्होंने भरोसा किया, और तू ने उनको मुक्त किया था।
५. तुझ को ही उन्होंने पुकारा था, और वे बच गए थे।
तुझ पर ही उन्होंने भरोसा किया, और वे हताश नहीं हुए।

६. परंतु मैं मनुष्य नहीं, कीड़ा हूँ;
मनुष्यों द्वारा उपेक्षित, लोगों द्वारा तिरस्कृत ।
७. मुझे देखने वाले मेरा उपहास करते हैं,
वे ओंठ बिचकाते हैं, सिर हिलाकर यह कहते हैं,
८. "यह प्रभु पर निर्भर रहा, वही इसे मुक्त करे ।
वही इसको छुड़ाए; क्योंकि प्रभु में यह हर्षित होता है ।"
९. वह तू ही था, जिसने मुझे गर्भ से निकाला;
तू ने ही मुझे मेरी मां की गोद में सुरक्षित रखा ।
१०. मैं जन्म से ही तुझको सौंपा गया था,
माता के गर्भ से ही तू मेरा परमेश्वर रहा है ।
११. मुझसे दूर न रह;
क्योंकि संकट निकट है,
और मेरा कोई सहायक नहीं है ।
१२. अनेक साँड़ों ने मुझे घेर लिया है ।
बाशान के हिंस्र सांड़ों ने मेरे चारों ओर घेरा डाला है ।
१३. वे भूखे, गरजते सिंह जैसे
मेरी ओर मुंह फाड़ रहे हैं ।
१४. मैं जल के सदृश उंडेला गया हूँ;
मेरी अस्थियां जोड़ से उखड़ गई हैं;
मेरा हृदय मोम-सा बन गया है;
वह मेरी छाती के भीतर पिघल गया है ।
१५. मेरा प्राण ठीकरे के समान सूख गया ।
और मेरी जीभ तालू से चिपक गई;
तू मुझे मृत्यु की धूल में मिलाता है ।
१६. कुत्तों ने मुझे घेर लिया है;
कुकर्मियों की भीड़ ने चारों ओर घेरा डाला है;
उन्होंने मेरे हाथ-पैर बेध डाले हैं ।[1]

---

१. मूल में, 'सिंह के समान'

१७. मैं अपनी एक-एक हड्डी गिन सकता हूँ।
वे घूरते हुए मुझपर दृष्टि डालते हैं।
१८. उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए,
और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली।

१९. परंतु प्रभु, तू दूर न रह।
मेरे शक्तिशाली प्रभु, अविलंब मेरी सहायता कर।
२०. तलवार से मेरे प्राणों की,
कुत्ते के पंजे से मेरे जीवन की रक्षा कर।
२१. मुझे सिंह के मुंह से,
मेरे पीड़ित प्राण को, सांड़ के सींग से बचा।

२२. मैं अपने बंधुओं में तेरा नाम घोषित करूंगा।
मैं मंडली के मध्य तेरी स्तुति करूंगा :
२३. प्रभु के भक्तो, उसकी स्तुति करो!
याकूब के वंशजो, उसकी स्तुति करो!
इस्राएल के वंशजो, उसकी भक्ति करो!
२४. क्योंकि प्रभु ने पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा का तिरस्कार नहीं किया,
और न उसे घृणित ही समझा;
उसने पीड़ित से अपना मुख नहीं छिपाया;
किंतु जब पीड़ित व्यक्ति ने प्रभु की दुहाई दी
तब उसने उसको सुना।

२५. महासभा में मेरे स्तुतिगान का स्रोत तू ही है;
मैं तेरे भक्तों के समक्ष अपने व्रत पूर्ण करूंगा।
२६. पीड़ित व्यक्ति भोजन कर तृप्त होंगे;
प्रभु को खोजने वाले प्रभु की स्तुति करेंगे।
तुम्हारा हृदय सदा धड़कता रहे!

२७. समस्त पृथ्वी की कौमें
प्रभु का नाम स्मरण करेंगी,

श्रौर प्रभु की श्रोर उन्मुख होंगी;
राष्ट्रों के परिवार उसके सम्मुख श्राराधना करेंगे ।

२८. क्योंकि राज्य प्रभु का है;
श्रौर वह राष्ट्रों पर शासन करता है ।

२९. निश्चय धरती के समस्त अहंकारी
प्रभु के सम्मुख झुकेंगे;
वह, जो स्वयं को जीवित नहीं रख सकता,
श्रौर वे, जो मिट्टी में मिल जाते हैं, घुटने टेकेंगे ।

३०. भावी संतान प्रभु की सेवा करेगी;
लोग भावी पीढ़ी को प्रभु के विषय में बताएंगे;

३१. उसके उद्धार की घोषणा श्रागामी संतान से करेंगे,
कि प्रभु ने उसे पूर्ण किया है ।

प्रभु मेरा मेषपाल है

दाऊद का गीत

२३. प्रभु मेरा मेषपाल[1] है, मुझे श्रभाव न होगा ।

२. वह मुझ-भेड़ को हरित भूमि पर विश्राम कराता है;
वह मुझे झरने के शांत तट पर ले जाता है;

३. वह मुझे नवजीवन देता है;
वह श्रपने नाम के लिए
धर्म के मार्ग पर मेरा नेतृत्व करता है ।

४. यद्यपि मैं घोर श्रंधकारमय घाटी से गुजरता हूं,
तो भी श्रनिष्ट से नहीं डरता;
क्योंकि हे प्रभु, तू मेरे साथ है ।
तेरी सोंठी, तेरी लाठी मुझे सहारा देती है ।

---

[1] श्रथवा, "चरवाहा"

५. मेरे शत्रुग्रों की उपस्थिति में
तू मेरा ग्रातिथ्य करता है;
तू तेल से मेरे सिर का ग्रभ्यंजन करता है,
मेरा प्याला छलक रहा है।
६. निश्चय भलाई ग्रौर करुणा
जीवन भर मेरा ग्रनुसरण करेंगी;
मैं प्रभु के घर में युग-युगांत निवास करूंगा।

महिमामय राजा

दाऊद का गीत

२४. पृथ्वी ग्रौर उसकी परिपूर्णता,
संसार ग्रौर उसके निवासी—सब प्रभु के हैं;
२. क्योंकि प्रभु ने सागरों पर उसे स्थापित किया है,
उसने सरिताग्रों पर उसे स्थिर किया है।

३. प्रभु के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है?
कौन उसके पवित्र स्थान पर खड़ा हो सकता है?
४. वह जिसके हाथ निर्दोष ग्रौर हृदय निर्मल है,
वह जो व्यर्थ बातों पर मन नहीं लगाता,
वह जो धोखा देने के लिए शपथ नहीं खाता।
५. वह प्रभु से ग्राशिष पाएगा,
उसका उद्धारक परमेश्वर उसे निर्दोष सिद्ध करेगा।
६. ऐसे हैं वे लोग, जो प्रभु के जिज्ञासु हैं,
जो याकूब के परमेश्वर के दर्शनाभिलाषी हैं। सेलाह

७. ग्रो द्वारो, मस्तक उन्नत करो!
ग्रो स्थायी फाटको, ऊंचे हो जाग्रो,
जिससे महिमा का राजा प्रवेश करे।

८. यह महिमा का राजा कौन है ?
प्रभु, समर्थ और पराक्रमी,
प्रभु, युद्ध में पराक्रमी ।

९. ओ द्वारो, मस्तक उन्नत करो ।
ओ स्थायी फाटको, ऊंचे हो जाओ,
जिससे महिमा का राजा प्रवेश करे ।

१०. यह महिमा का राजा कौन है ?
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु,
वही महिमा का राजा है । सेलाह

मार्ग-दर्शन, क्षमा और रक्षा के लिए प्रार्थना

दाऊद का गीत

२५. हे प्रभु, मैं तेरा ही ध्यान करता हूं ।

२. हे मेरे परमेश्वर, मैंने तुझ पर ही भरोसा रखा है;
मुझे लज्जित न होने देना,
मेरे शत्रु मुझ पर विजयी न होने पाएं ।

३. उन्हें भी लज्जित न होने देना, जो तेरी प्रतीक्षा करते हैं,
परंतु वे लज्जित हों, जो अकारण विश्वासघात करते हैं ।

४. हे प्रभु, अपना मार्ग मुझे दिखा;
अपना पथ मुझे बता ।

५. अपने सत्य पथ पर मुझे ले चल
और मुझे सिखा;
क्योंकि तू ही मेरा उद्धार करने वाला परमेश्वर है,
दिन भर मैं तेरी ही प्रतीक्षा करता हूं ।

६. हे प्रभु, अपनी अनुकंपा को, अपनी करुणा को स्मरण कर;
क्योंकि तू उनको युग-युगांत से प्रकट करता रहा है ।

७. हे प्रभु, अपनी भलाई के कारण
मेरे यौवन के पाप और अपराधों को स्मरण न कर;
किंतु अपनी करुणा के अनुरूप मेरी सुधि ले।

८. प्रभु भला एवं सत्यनिष्ठ है;
अतः वह पापियों को अपने मार्ग बताता है।
९. वह नम्र व्यक्ति को धर्मपथ पर चलाता है;
वह उसे अपना मार्ग सिखाता है।
१०. जो प्रभु के व्यवस्थान[1] और साक्षी को मानते हैं,
उनके लिए प्रभु के समस्त मार्ग करुणामय एवं सत्य हैं।

११. हे प्रभु, अपने नाम के लिए,
मेरा अपराध क्षमा कर।
मेरा अपराध बहुत भारी है।
१२. वह कौन है, जो प्रभु से डरता है?
उसको ही प्रभु
वह मार्ग सिखाएगा, जो उसे चुनना चाहिए।
१३. वह स्वयं समृद्धि में निवास करेगा;
और देश पर उसके वंश का अधिकार होगा।
१४ प्रभु अपने भक्तों पर अपने भेद प्रकट करता है।
प्रभु उन्हें अपना व्यवस्थान सिखाता है।
१५. मेरे नेत्र प्रभु की ओर टकटकी बांधे हैं;
क्योंकि प्रभु ही मेरे पैरों को जाल से छुड़ाएगा।

१६. प्रभु, मेरी ओर उन्मुख हो, मुझ पर कृपा कर;
क्योंकि मैं एकाकी और पीड़ित हूं।
१७. मेरे हृदय का क्लेश कितना बढ़ गया है;
मुझे संकट से मुक्त कर,

---

१ अथवा, संधि, वाचा समझौता

१८. मेरी पीड़ा एवं दुःख को देख;
ग्रौर मेरे सब पाप क्षमा कर।
१९. मेरे शत्रुग्रों को देख;
वे कितने बढ़ गए हैं;
वे मुझसे तीव्र घृणा करते हैं।
२०. मेरे प्राण की रक्षा कर,
ग्रौर मेरा उद्धार कर;
मुझे लज्जित न होने दे;
क्योंकि मैं तेरी ही शरण में ग्राया हूँ।
२१. सच्चरित्रता ग्रौर सत्यनिष्ठा मेरी रक्षा करें;
क्योंकि मैं तेरी ही प्रतीक्षा करता हूँ।
२२. हे परमेश्वर, इस्राएल को उसके समस्त संकटों से मुक्त कर।

निर्दोषिता की परख

दाऊद का गीत

२६. हे प्रभु, मुझे नि र्षेष सिद्ध कर;
क्योंकि मेरा ग्राचरण निर्दोष रहा है;
प्रभु, तुझ पर मैंने भरोसा किया ग्रौर मैं ग्रटल रहा।
२. मुझे परख ग्रौर मेरी जांच कर;
मेरे हृदय ग्रौर मन को शुद्ध कर।
३. तेरी करुणा मेरी ग्रांखों के सामने है;
मैं तेरी सच्चाई पर चलता हूँ।

४. मैं न मिथ्यावादियों के साथ बैठता हूँ,
ग्रौर न कपटियों की संगति करता हूँ।
५. मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा करता हूँ;
मैं दुर्जनों के साथ नहीं बैठूंगा।

६. मैं निर्दोषता के जल में हाथ धोकर,
प्रभु, तेरी वेदी की परिक्रमा करता हूँ;
७. मैं उच्च स्वर में धन्यवाद का गीत गाकर
तेरे अद्‌भुत कार्यों की घोषणा करता हूँ।

८. प्रभु ! मैं प्रेम करता हूँ उस भवन से जो तेरा धाम है;
उस स्थान से, जो तेरी महिमा का निवास-स्थान है।
९. मेरे प्राण को पापियों के साथ सम्मिलित न कर
और न मेरे जीवन को रक्त-पिपासुओं के साथ;
१०. जिनके हाथों में छल-प्रपंच है,
जिनके दाहिने हाथ घूस से भरे हैं।
११. पर मेरा आचरण निर्दोष है;
प्रभु, मेरा उद्धार कर, मुझ पर कृपा कर।
१२. मेरे पैर समतल भूमि पर स्थित हैं;
मैं भक्तों की महासभा में प्रभु को धन्य कहूँगा।

प्रभु मेरी ज्योति और मेरा सहायक है

दाऊद का गीत

२७. प्रभु मेरी ज्योति और मेरा सहायक है !
तब मैं किससे डरूँ ?
प्रभु मेरा जीवन-रक्षक है;
तब मैं क्यों भयभीत होऊं ?

२. जब कुकर्मी मुझे फाड़-खाने के लिए
मुझ पर आक्रमण करते है,
तब वे मेरे शत्रु, मेरे बैरी
लड़खड़ाकर गिर पड़ेंगे।

३. यद्यपि सेना ने मुझे घेरा है,
तोभी मेरा हृदय आतंकित न होगा;
यद्यपि मेरे विरुद्ध युद्ध छिड़ा है;
फिर भी मैं आश्वस्त रहूँगा ।

४. मैंने केवल एक वरदान प्रभु से मांगा है :
मैं जीवन पर्यन्त प्रभु के घर में निवास करूं,
और प्रभु के सौन्दर्य को निहार सकूं;
उसके भवन में दर्शन करूं ।
मैं इसी वरदान की खोज करूंगा ।

५. प्रभु संकट के दिन मुझे अपने मंडप में छिपा लेगा;
वह अपने शिविर के भीतर मुझे आश्रय देगा;
वह मुझे चट्टान पर ऊँचा उठाएगा ।

६. अब चारों ओर के शत्रुओं की अपेक्षा मेरा मस्तक उन्नत होगा;
मैं प्रभु के शिविर में आनन्द-उल्लास से बलि चढ़ाऊँगा ।
मैं गीत गाऊँगा; मैं प्रभु का स्तुतियान करूँगा ।

७. प्रभु, जब मैं तुझको पुकारूँ तब मेरी पुकार सुन;
मुझ पर कृपा कर और मुझे उत्तर दे ।
८. तू नें कहा था : "तुम मेरे मुख की खोज करो ।"
मेरा हृदय तुझ से यह कहता है,
"हे प्रभु, मैं तुझ को ही खोजता हूँ ।"
९. अपना मुख मुझ से न छिपा;
क्रोध में अपने सेवक को दूर न कर ।
तू ही मेरा सहायक था,
हे मेरे उद्धारक परमेश्वर !
मेरा परित्याग न कर;
मुझको मत छोड़ ।

१०. यद्यपि मेरे माता-पिता ने मुझे छोड़ दिया है,
तोभी प्रभु मुझे ग्रहण करेगा।

११. प्रभु, मुझे अपना मार्ग दिखा;
उन लोगों के कारण जो मेरी घात में हैं,
मुझे समतल मार्ग पर ले चल।
१२. मुझे मेरे बैरियों की इच्छा पर न छोड़;
क्योंकि झूठे गवाह मेरे विरुद्ध खड़े हुए हैं;
वे हिंसा करने की धुन में हैं।

१३. मुझे विश्वास है कि मैं
जीव-लोक में प्रभु की भलाई का दर्शन करूँगा।
१४. प्रभु की प्रतीक्षा करो;
शक्तिशाली बनो; और तुम्हारा हृदय साहसी हो;
निश्चय ही प्रभु की प्रतीक्षा करो।

सहायता के लिए प्रार्थना : प्रत्युत्तर के लिए स्तुति

दाऊद का गीत

२८. हे प्रभु, मैं तुझको ही पुकारता हूँ;
हे मेरी चट्टान, मेरी पुकार अनसुनी न कर;
ऐसा न हो कि तू चुप रहे,
और मैं मृतक लोक को जाने वालों के समान मृतक हो जाऊँ।
२. जब मैं सहायता के लिए तुझ को पुकारूँ,
जब मैं तेरे पवित्र मन्दिर के अन्तर्गृह की ओर हाथ फैलाऊँ,
तब मेरी विनती सुन।

३. तू मुझे दुर्जनों और कुकर्मियों के साथ दूर न कर ।
वे पड़ोसियों से शांति की बातें तो करते हैं;
पर अपने हृदय में बुराई रखते हैं ।
४. उनके कामों के अनुसार, उनके कर्मों की बुराई के अनुसार
तू उन्हें प्रतिफल दे;
उनके हाथ के कामों के अनुसार उन्हें प्रतिफल दे;
उन्हें उनकी करनी का फल दे ।
५. वे न प्रभु के कार्यों पर ध्यान देते हैं,
और न उसके हस्तकार्यों पर;
अतएव प्रभु उन्हें नष्ट कर देगा;
वह उनका पुनः निर्माण नहीं करेगा ।
६. प्रभु को धन्य कहो;
क्योंकि उसने मेरी विनती सुनी है ।
७. प्रभु मेरी शक्ति और ढाल है ।
उस पर ही मैं भरोसा करता हूँ ।
अतः मुझे सहायता मिली है ।
मेरा हृदय हर्षित होता है;
और मैं अपने गीतों द्वारा उसकी स्तुति करता हूँ ।
८. प्रभु अपने निज लोगों की शक्ति है;
वह अपने अभिषिक्त राजा का दृढ़ आश्रय है ।
९. प्रभु, अपने लोगों का उद्धार कर;
अपनी मीरास को आशिष दे;
तू उनका मेषपाल बन और उन्हें युग-युग तक संभाल ।

आंधी में प्रभु की आवाज

दाऊद का गीत

२९. ओ ईश्वर के पुत्रो ! प्रभु के गुणों को स्वीकार करो;
तुम प्रभु की महिमा और शक्ति को स्वीकार करो ।

२. तुम प्रभु के नाम की महिमा को स्वीकार करो;
पवित्रता से सजकर[1] उसकी आराधना करो।

३. प्रभु की वाणी सागरों पर है;
महिमायुक्त परमेश्वर गरजन करता है;
प्रभु महासागरों पर है।
४. प्रभु की वाणी शक्तिशाली है;
प्रभु की वाणी तेजस्वी है।

५. प्रभु की वाणी देवदार के वृक्षों को उखाड़ फेंकती है;
प्रभु लबानोन के देवदारों को नष्ट करता है।
६. वह लबानोन को बछड़े के समान
और सिरयोन पर्वत को सांड़ जैसा कुदाता है।

७. प्रभु की वाणी अग्नि-ज्वाला उगलती है।
८. प्रभु की वाणी निर्जन प्रदेश को प्रकंपित करती है;
प्रभु कादेश के निर्जन प्रदेश को कंपित करता है।

९. प्रभु की वाणी बांज वृक्षों को उखाड़ती है;[2]
वह वनों को उजाड़ देती है;
तब उसके भवन में सब पुकार उठते हैं,
प्रभु की "महिमा हो!"

१०. प्रभु जल-प्रवाह पर विराजमान है;
राजाधिराज प्रभु युग-युगांत सिंहासनारूढ़ है।
११. प्रभु अपनी प्रजा को शक्ति प्रदान करे;
प्रभु अपनी प्रजा को शान्ति का वरदान दे।

---

१ अथवा 'पवित्र परमेश्वर के दर्शन के लिए, अथवा 'पवित्र परिधान पहिनकर,
२ अथवा "प्रभु की वाणी से हरिणियों का गर्भपात हो जाता है"

मृत्यु से मुक्त होने पर धन्यवाद का गीत

दाऊद का गीत । गृह प्रतिष्ठान का भजन

३०. प्रभु, मैं तेरा गुणगान करूंगा;
क्योंकि तू ने मुझे ऊपर खींचा,
और मेरे शत्रुओं को मुझपर हंसने नहीं दिया।
२. मेरे प्रभु परमेश्वर, मैंने तेरी दुहाई दी;
और तूने मुझे स्वस्थ कर दिया।
३. प्रभु, तूने मेरे प्राण को मृतक-लोक से बाहर निकाला।
तूने मुझे जीवित रखा कि मैं फिर उस लोक में न जाऊं।
४. ओ भक्तगण ! प्रभु की स्तुति करो।
उसके पवित्र नाम का जयजयकार करो।
५. प्रभु का क्रोध क्षण मात्र के लिए होता है;
पर उसकी कृपा जीवनपर्यन्त बनी रहती है।
रोदन संध्या समय आकर रात में ठहर सकता है,
पर प्रभात के साथ उल्लास का आगमन होता है!
६. मैंने अपनी समृद्धि के समय यह कहा,
"मैं सदा अटल रहूंगा।"
७. प्रभु, तूने अपनी कृपा से मुझे पर्वत के सदृश दृढ़ किया था;
जब तूने अपना मुख छिपाया तब मैं बेचैन हो गया था।
८. प्रभु, मैंने तुझको पुकारा;
प्रभु, तुझसे ही मैंने यह विनती की :
९. "क्या लाभ मेरी मृत्यु से ?
यदि मैं मृतक-लोक में जाऊं
तो क्या मैं, मृत व्यक्ति, तेरी स्तुति कर सकूंगा ;
क्या मैं तेरे सत्य की घोषणा कर पाऊंगा ?
१०. प्रभु, मेरी विनती सुन; मुझ पर अनुग्रह कर।
प्रभु, मेरी सहायता कर।"

११. तूने मेरे विलाप को हर्ष में बदल दिया;
तूने मेरे शोक सूचक वस्त्र उतार कर मुझे आनन्दित किया;
१२. जिससे मेरी आत्मा तेरी स्तुति करे, और चुप न रहे;
हे प्रभु, मेरे परमेश्वर! युग-युगांत में तेरा गुणगान करूंगा।

विश्वास स्वीकार करना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

३१. हे प्रभु, मैं तेरी शरण में आया हूं;
मुझे कभी लज्जित न होने देना;
अपनी धार्मिकता द्वारा मुझे मुक्त कर।
२. अपने कान मेरी ओर लगा,
प्रभु, अविलंब मुझे बचा।
मेरे निमित्त आश्रय की चट्टान
और मुझे बचाने के लिए दृढ़ गढ़ बन।

३. तू ही मेरी चट्टान और मेरा गढ़ है;
अपने नाम के लिए
मुझे मार्ग दिखा और मेरा नेतृत्व कर।
४. मुझे उस जाल से बाहर निकाल
जो मेरे लिए बिछाया गया है;
तू ही मेरा आश्रयस्थल है।
५. मैं अपनी आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूं;
हे प्रभु! सच्चे परमेश्वर, तू ने मेरा उद्धार किया है।

६. तू[1] निःसार मूर्तियों की पूजा करने वालों से घृणा करता है;
किंतु प्रभु, मैं तुझ पर ही भरोसा करता हूं।

---

१ मूल में, 'मैं'

७. मैं तेरी करुणा से हर्षित और सुखी होऊंगा;
क्योंकि तूने मेरी पीड़ा को देखा है;
तू ने मेरे प्राण के संकट को पहचाना
८. और मुझे शत्रुओं के हाथ में नहीं सौंपा;
पर तूने मुझे स्वतंत्र घूमने दिया !

९. हे प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर;
क्योंकि मैं संकट में हूं;
मेरी आंखें शोक से कमजोर हो गई हैं;
मेरा प्राण और शरीर भी सूख गये हैं !
१०. मेरा जीवन दुख में बीता;
और मेरी आयु आह भरते व्यतीत हुई।
मेरे अधर्म +[१] के कारण मेरी शक्ति क्षीण हो गई;
और मेरी हड्डियां जीर्ण हो गईं।
११. मैं अपने शत्रुओं की दृष्टि में उपेक्षित,
पड़ोसियों के लिए तिरस्कृत,
और परिचितों के लिए भय का कारण बन गया हूँ ।
जो मुझे सार्वजनिक स्थान में देखते हैं,
वे तुरंत मुझसे दूर भाग जाते हैं ।
१२. मैं मृतक के समान हृदय से भुला दिया गया हूँ,
मैं टूटे हुए पात्र के सदृश फेंक दिया गया हूँ ।
१३. मैं चारों ओर आतंक की फुसफुसाहट सुनता हूँ ।
मानों उन्होंने मेरे विरुद्ध मिलकर सम्मति की है;
मेरे प्राण लेने को षड्यंत्र रचा है ।

१४. किंतु प्रभु, मैं तुझ पर ही भरोसा करता हूँ,
मैं यह कहता हूँ, "तू ही मेरा परमेश्वर है ।"

+[१]अथवा, 'विपत्ति'

१५. मेरा जीवनकाल तेरे हाथ में है;
मेरा पीछा करनेवालों
और शत्रुओं के हाथ से मुझे मुक्त कर ।

१६. अपने मुख को अपने सेवक पर प्रकाशित कर ।
अपनी करुणा से मुझे बचा ।
१७. हे प्रभु, मुझे लज्जित न होने देना;
क्योंकि मैं तुझ को पुकारता हूँ;
वरन् दुर्जन लज्जित हों;
वे मृतक लोक को जाएँ और वहाँ चुप हो जाएं!
१८. झूठ बोलने वाले ओंठ बन्द हो जाएं;
जो तिरस्कार एवं अहंकार में धृष्टता से
धार्मिकों के विरुद्ध बोलते हैं ।

१९. अहा ! तेरी भलाई कितनी अपार है;
जिसको तू ने उन लोगों के लिए रख छोड़ा है
जो तुझ से डरते हैं;
और मानव संतान के समक्ष उन के लिए रचा है
जो तेरी शरण में आते हैं ।
२०. तू उन्हें अपनी उपस्थिति की छाया में
मनुष्यों के षड्यंत्र से छिपा लेता है;
तू अपने आश्रय में उन्हें
कलह-प्रिय जीभ से सुरक्षित रखता है ।

२१. हे प्रभु, तू धन्य है!
क्योंकि तूने सेना से घिरे नगर में मुझ पर करुणा की ।
२२. मैंने अपनी व्याकुलता में यह कहा था,
"मैं प्रभु की दृष्टि से दूर हो गया हूँ ।"

परंतु जब मैंने तेरी दुहाई दी
तब तू ने मेरी विनती सुनी ।

२३. ओ प्रभु के भक्तगण, प्रभु से प्रेम करो !
प्रभु विश्वासियों को सुरक्षित रखता है;
किंतु अहंकार से कार्य करने वाले से
अत्यधिक प्रतिशोध लेता है ।
२४. तुम सब, जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हो,
शक्तिशाली बनो, और तुम्हारा हृदय साहस से भरा रहे ।

क्षमा प्राप्ति का सुख

दाऊद का गीत । मसकील

३२. धन्य है वह मनुष्य, जिसका अपराध क्षमा किया गया,
और जिसका पाप ढाँपा गया ।
२. धन्य है वह मनुष्य, जिसपर प्रभु अधर्म का अभियोग नहीं लगाता,
और जिसके हृदय में कोई कपट नहीं है ।

३. जब तक मैंने अपना पाप प्रकट नहीं किया,
मेरी अस्थियाँ दिन भर की कराह से क्षीण हो गईं ।
४. तेरा हाथ दिन-रात मुझपर भारी था;
मानो ग्रीष्म की ताप से मेरा जीवन रस सूख गया । **सेलाह**

५. मैंने तेरे सम्मुख अपना पाप स्वीकार किया,
और अपने अधर्म को छिपाया नहीं;
मैंने कहा, "मैं प्रभु के समक्ष अपने अपराध स्वीकार करूँगा ।"
और तूने मेरे पाप और अधर्म को क्षमा कर दिया ।

६. जब तक तू मिल सकता है, सब भक्त तुझ से प्रार्थना करें;
क्योंकि भयंकर जल-प्रवाह उन भक्तों तक नहीं पहुँच सकेगा ।

७. तू मेरा आश्रयस्थल है;
तू संकट से मुझे सुरक्षित रखता है;
तू मुक्ति के जयघोष से मुझे घेर लेगा । सेलाह

८. प्रभु यह कहता है :
"मैं तेरा नेतृत्व कर तुझे वह मार्ग सिखाऊंगा
जिस पर तुझे चलना चाहिए;
मैं तुझे परामर्श दूंगा ।
मेरी आंखें तुझ पर लगी रहेंगी ।"
९. अश्व अथवा खच्चर जैसे न बनो, जिसमें विवेक नहीं होता;
जिसे रास और लगाम से वश में करना पड़ता है;
अन्यथा वह तुम्हारे निकट न आएगा ।

१०. दुर्जन को अनेक दुख हैं;
किंतु प्रभु पर भरोसा करने वाले को
प्रभु की करुणा घेरे रहती है ।
११. ओ धार्मिको, प्रभु में आनन्दित और हर्षित हो ।
ओ सत्यनिष्ठो, जयजयकार करो ।

सृजक और संरक्षक परमेश्वर की स्तुति करना

३३. ओ धार्मिको, प्रभु में आनन्दित हो ।
स्तुति करना सत्यनिष्ठ व्यक्ति को शोभा देता है ।
२. वीणा के साथ प्रभु की स्तुति करो;
दस-तार पर प्रभु के लिए राग बजाओ ।
३. उसके लिए नया गीत गाओ;
जयजयकार करते हुए कुशलता से वाद्य बजाओ ।

४. क्योंकि प्रभु का वचन सत्य है;
और उसके समस्त कार्य सच्चाई से सम्पन्न हुए हैं ।

५. वह धार्मिकता और न्याय से प्रेम करता है;
प्रभु की करुणा से पृथ्वी पूर्ण है ।

६. आकाश-मण्डल प्रभु के वचन से
और उसकी समस्त स्वर्गिक सेना,
उसके मुंह की श्वास से निर्मित हुई ।
७. प्रभु ने समुद्र के जल को मानो पात्र में एकत्र किया है;
उसने अतल सागरों को भण्डार में रखा है ।

८. समस्त पृथ्वी प्रभु से डरे;
संसार के सब निवासी उसकी भक्ति करें ।
९. क्योंकि प्रभु ने कहा, और वह हो गया;
उसने आज्ञा दी, और वह स्थित हो गया ।

१०. भु राष्ट्रों के परामर्श को विफल कर देता है;
वह जातियों के विचारों को व्यर्थ कर देता है ।
११. प्रभु का परामर्श युग-युगांत स्थित रहता है;
उसके हृदय के विचार पीढ़ी से पीढ़ी बने रहते हैं ।
१२. धन्य है वह राष्ट्र जिसका परमेश्वर प्रभु है;
धन्य हैं वे लोग जिनको प्रभु ने अपनी मीरास के लिए चुना है ।

१३. प्रभु स्वर्ग से नीचे निहारता है;
वह समस्त मानव जाति को देखता है;
१४. वह उस स्थान से, जहाँ वह सिंहासन पर विराजमान है
धरती के समस्त निवासियों पर दृष्टिपात करता है ।

१५. वही उन सब के हृदय को गढ़ता है;
और उनके सब कार्यों का निरीक्षण करता है ।
१६. राजा का उद्धार उसकी विशाल सेना से नहीं होता;
वीर पुरुष की मुक्ति उसके अपार बल से नहीं होती ।

१७. विजय प्राप्ति के लिए अश्व सेना दुराशा मात्र है;
वह अपनी बड़ी शक्ति से भी बचा नहीं सकता ।

१८. देखो, प्रभु की दृष्टि उन लोगों पर है जो उससे डरते हैं;
और उन पर है जो उसकी करुणा की प्रतीक्षा करते हैं;
१९. जिससे वह उनके प्राण को मृत्यु से मुक्त करे;
और अकाल के समय उन्हें जीवित रखे ।

२०. हम प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं;
वह हमारा सहायक और हमारी ढाल है ।
२१. प्रभु में हमारा हृदय हर्षित होता है;
क्योंकि हम प्रभु के पवित्र नाम पर भरोसा करते हैं ।
२२. प्रभु, तेरी करुणा हम पर हो;
जैसे कि हमने तुझ से आशा की है ।

विपत्ति से बचने पर स्तुति करना

दाऊद का गीत । दाऊद ने अबीमेलेक के समक्ष पागलपन का अभिनय किया । पर अबीमेलेक ने दाऊद को बाहर निकाल दिया; और वह चला गया

३४. मैं प्रभु को हर समय धन्य कहूँगा ।
मैं निरंतर उसकी स्तुति करता रहूँगा ।
२. मेरा प्राण प्रभु पर गर्व करेगा;
दुखी मनुष्य यह सुन कर सुखी होगा ।
३. मेरे साथ प्रभु का गुणगान करो;
हम सब उसके नाम को उन्नत करें ।

४. मैंने प्रभु को खोजा; और उसने मुझे उत्तर दिया,
उसने मेरे सब भय से मुझे मुक्त किया ।

५. प्रभु पर दृष्टि करो,
तब तुम्हारा मुख प्रकाशमय हो जाएगा;
और तुम अपने विश्वास के लिए कभी लज्जित न होगे !

६. इस पीड़ित व्यक्ति ने प्रभु को पुकारा,
और प्रभु ने उसकी सुनी;
प्रभु ने उसके सब संकटों से उसको बचाया ।
७. जो लोग प्रभु की भक्ति करते हैं,
उन्हें प्रभु का दूत चारों ओर से घेरे रहता है;
वह उन्हें मुक्त करता है ।
८. परखकर देखो कि प्रभु कितना भला है ।
धन्य है वह पुरुष जो प्रभु की शरण में आता है ।

९. ओ प्रभु के संतो ! प्रभु से डरो ।
जो लोग प्रभु से डरते हैं, उन्हें अभाव नहीं होता ।
१०. युवा सिंहों को घटी होती और उन्हें भूख लगती है;
पर जो लोग प्रभु को खोजते हैं,
उन्हें भली वस्तु का अभाव नहीं होता ।

११. ओ पुत्रो ! आओ, मेरी बात सुनो;
म तुम्हें प्रभु की भक्ति[१] करना सिखाऊंगा ।
१२. वह कौन मनुष्य है जो जीवन की कामना करता है;
जो दीर्घ आयु का इच्छुक है कि भलाई को देख सके ?
१३. अपनी जीभ को बुराई से दूर रखो,
और ओठों को छल-कपट से ।
१४. बुराई को छोड़ो, और भलाई करो;
शांति को खोजो, और उसका अनुसरण करो ।

---

[१] अथवा, 'प्रभु से डरना सिखाऊंगा'

१५. प्रभु के नेत्र धार्मिकों पर लगे हैं,
और उसके कान उनकी दुहाई पर ।
१६. प्रभु का मुख बुराई करने वालों के विरुद्ध है ।
वह उनकी स्मृति को धरती से मिटा देगा ।
१७. जब धार्मिक मनुष्य दुहाई देते हैं तब प्रभु सुनता है;
वह उनके संकट से उन्हें बचाता है ।
१८. प्रभु पश्चाताप करने वाले हृदय के निकट है;
वह विदीर्ण आत्मा का उद्धार करता है ।

१९. धार्मिक मनुष्य के दुख अनेक हैं;
तोभी प्रभु उन सब से उसे मुक्त करता है ।
२०. वह उसकी समस्त अस्थियों को सुरक्षित रखता है;
उनमें से एक भी नहीं टूटती ।
२१. बुराई दुर्जन को नष्ट करेगी;
जो लोग धार्मिक मनुष्य से घृणा करते हैं, वे दोषी ठहरेंगे ।
२२. प्रभु अपने सेवकों की आत्मा का उद्धार करता है;
जो मनुष्य उसकी शरण में आते हैं, वे दोषी न ठहरेंगे

शत्रुओं से मुक्त होने के लिए प्रार्थना

दाऊद का गीत

३५. हे प्रभु, जो मनुष्य मुझ से संघर्ष करते हैं,
उनके साथ संघर्ष कर ।
जो व्यक्ति मुझ से युद्ध करते हैं,
उनके साथ युद्ध कर ।
२. तू कवच और ढाल संभाल,
और मेरी सहायता के लिए उठ ।

३. जो मनुष्य मेरा पीछा करते हैं,
उनके विरुद्ध बर्छी और भाला उठा ।
तू मेरे प्राण से यह कह,
"मैं ही तेरा उद्धारक हूँ ।"
४. जो मनुष्य मेरे प्राण के खोजी हैं,
व लज्जित और अपमानित हों ।
जो मेरी बुराई के उपाय करते हैं,
वे ीठ दिखाएँ और पराजित हों ।
५. वे पवन के सन्मु ब जैसे भूसा हो जाएँ;
और प्रभु का दूत उन्हें हांकता जाए ।
६. उनका मार्ग अंधकारमय और फिसलनेवाला बन जाए,
और प्रभु का दूत उनका पीछा करता जाए ।

७. अकारण उन्होंने मेरे लिए जाल बिछाया;
अकारण ही उन्होंने मेरे निमित्त गड्ढा खोदा ।
८. अकस्मात् उनका सर्वनाश हो जाए ।
जो जाल उन्होंने बिछाया है, वे उसमें स्वयं फंस जाएं,
वे उसमें गिर पड़े और उनका सर्वनाश हो जाए!

९. तब मेरा प्राण प्रभु में आनन्दित होगा;
उसके उद्धार से हर्षित होगा ।
१०. मेरी समस्त अस्थियां यह कहेंगी,
"हे प्रभु ! तुझ जैसा और कौन है ?"
तू पीड़ित व्यक्ति को महाबली से,
दुखी और दरिद्र को लुटेरों से मुक्त करता है ।

११. हिंसक गवाह खड़े होते हैं;
जो बातें मैं नहीं जानता, वही वे मुझसे पूछते हैं ।
१२. वे मुझे भलाई का प्रतिफल बुराई से देते हैं;
मेरा प्राण निराशा में डूब गया ।

१३. परंतु जब वे रोगी थे,
तब मैंने पश्चाताप के लिए टाट ओढ़ा था।
स्वयं को भूख-प्यास से पीड़ित किया था।
मैंने नतमस्तक हो प्रार्थना की थी।

१४. मेरी यह भावना थी
मानों वह मेरा आत्मीय हो,
मेरा भाई हो।
मैंने सिर झुकाकर मातृशोक जैसा विलाप किया था।

१५. किंतु जब मैं लड़खड़ाकर गिर पड़ा
तब वे हर्षित होकर एकत्र हो गए।
वे मेरे विरुद्ध एक हो गए।
नीच व्यक्ति, जिन्हें मैं जानता ही नहीं,
निरंतर मुझे फाड़ते ही रहे।

१६. उन्होंने दुष्टतापूर्वक मेरा बड़ा उपहास किया।
वे मुझ पर दांत पीसते रहे।

१७. प्रभु, तू कब तक यह देखता रहेगा ?
मुझे उनके उपद्रव से,
मेरे प्राण को युवा सिंहों से मुक्त कर।

१८. तब मैं आराधकों की महासभा में तेरी स्तुति करूंगा;
अपार जनसमूह में तेरा गुणगान गाऊंगा।

१९. जो धूर्ततावश मेरे शत्रु बने हैं,
उन्हें मुझ पर हंसने न दे।
जो अकारण मुझसे घृणा करते हैं।
उन्हें आंखों से इशारा न करने दे।

२०. वे शांति के वचन नहीं बोलते;
वरन् संसार के शाँतिप्रिय लोगों के विरुद्ध
छल-कपट के उपाय सोचते हैं।

२१. वे मेरे विरुद्ध अपना मुंह फाड़ते हैं;
वे यह कहते हैं, "अहा ! हमारी आंखों ने उसे देखा है।"

२२. प्रभु, तूने यह देख लिया, अब चुप न रह,
हे मेरे प्रभु, मुझसे दूर न हो।
२३. हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे प्रभु, जाग।
मेरे न्याय के लिए, मेरे प्रतिवाद के लिए उठ।
२४. मेरे प्रभु परमेश्वर, अपनी धार्मिकता के कारण
मुझे निर्दोष सिद्ध कर, उन्हें मुझ पर हंसने न दे।
२५. वे अपने आप से यह कह न सकें,
"अहा ! हमारी इच्छा पूर्ण हुई।"
वे बोल न पाएं, "हमने उसे निगल लिया।"

२६. जो लोग मेरी विपत्ति पर हंसते हैं,
उन्हें पूर्णत: लज्जित और अपमानित कर।
जो यक्ति मेरे विरुद्ध शक्ति संचित करते हैं,
उन्हें लज्जा और अनादर से ढांप दे।

२७. जो लोग मेरे दोष-मुक्त होने की कामना करते हैं,
वे जयजयकार करें, वे हर्षित हों।
वे निरंतर यह कहते रहें, "प्रभु महान है;
वह अपने सेवक के कल्याण से सुखी होता है"।
२८. तब मैं तेरी धार्मिकता का पाठ,
और तेरी स्तुति निरंतर करता रहूंगा।

परमेश्वर की करुणा

मुख्यवादक के लिए। प्रभु के सेवक दाविद का गीत

३६. दुर्जनों के हृदय में अपराध ोलता है।
उसकी आंखों में परमेश्वर का भय है ही नहीं।

२. वह स्वयं अपनी प्रशंसा करता है,
कि उसका तिरस्कार करने के लिये
उसका अधर्म प्रकट नहीं किया जा सकता है।
३. उसके मुख के शब्द अनिष्ट और कपट हैं;
वह बुद्धि को छोड़ चुका है; वह भलाई नहीं करता।
४. वह अपनी शैया पर लेटे-लेटे
बुराई की योजनाएं बनाता है;
वह अपने को उस मार्ग पर ले जाता है,
जो भला नहीं है।
वह बुराई को धिक्कारता नहीं।

५. हे प्रभु तेरी करुणा स्वर्ग तक महान् है,
और तेरी सच्चाई मेघों को छूती है।
६. तेरी धार्मिकता उच्च पर्वतों के समान महान है;
तेरे न्याय-सिद्धांत अथाह सागर के सदृश गहरे हैं।
प्रभु, तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है।

७. हे मेरे परमेश्वर, तेरी करुणा कैसी अनमोल है।
मनुष्य तेरे पंखों की छाया में शरण लेते हैं।
८. वे तेरे घर के विभिन्न व्यंजनों से तृप्त होते हैं।
तू उन्हें अपनी सुख-सरिता से जल पिलाता है।
९. तेरे साथ ही जीवन का स्रोत है;
तेरी ज्योति में हम ज्योति देखते हैं।

१०. जो भक्त तुझे जानते हैं
उन पर तू अपनी करुणा करता रह,
और सत्यनिष्ठों पर अपनी धार्मिकता बनाए रख।
११. न अहंकारी का पैर मुझे कुचल सके;
और न दुर्जन का हाथ मुझे दूर ढकेल सके।
१२. वहां कुकर्मी धूल-धूसरित पड़े हैं;
उन पर ऐसा प्रहार हुआ है कि वे उठ नहीं सकते।

दुर्जन की क्षणभंगुरता

दाऊद का गीत

३७. दुर्जनों के कारण स्वयं को परेशान न करो;
कुकर्मियों के प्रति ईर्ष्यालु न हो।
२. वे घास के सदृश अविलम्ब काटे जायेंगे।
वे हरी शाक के समान मुरझा जाएंगे।
३. प्रभु पर भरोसा रखो और भले कार्य करो;
पृथ्वी पर निवास करो और सत्य का पालन करो।
४. तब तुम प्रभु में आनन्दित होगे;
और वह तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेगा।
५. अपना जीवन मार्ग प्रभु को सौंप दो;
उस पर भरोसा करो तो वह उसे पूर्ण करेगा।
६. वह तुम्हारी धार्मिकता को ज्योति के सदृश,
और तुम्हारी सच्चाई को
दोपहर की किरणों जैसे प्रकट करेगा।
७. प्रभु के समक्ष मौन रहो,
और उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करो;
उस व्यक्ति के कारण स्वयं को परेशान न करो,
जो अपने कुमार्ग पर फूलता-फलता है,
जो बुरी युक्तियाँ रचता है।
८. क्रोध से दूर रहो, और रोष को त्याग दो।
स्वयं को क्षुब्ध न करो;
क्षोभ केवल बुराई की ओर ले जाता है।
९. दुर्जन नष्ट किए जाएंगे;
परंतु जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं,
वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
१०. कुछ समय पश्चात् दुर्जननहीं रहेंगे।

तुम उस स्थान को ध्यान से देखोगे;
पर वहाँ वह नहीं होगा ।
११. दीन-गरीब लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
वे अपार समृद्धि में आनन्द करेंगे ।

१२. धार्मिक मनुष्य के विरुद्ध दुर्जन षड्यंत्र रचता है,
वह उस पर अपने दांत पीसता है;
१३. परंतु प्रभु उस पर हंसता है;
क्योंकि प्रभु देखता है कि
दुर्जन के दिन समीप आ गए ।
१४. पीड़ितों और दरिद्रों को
धूल-धूसरित करने के लिए,
सन्मार्ग पर चलने वालों को मार डालने के लिए,
दुर्जनों ने तलवार खींची और धनुष ताने हैं ।
१५. पर उनकी तलवार उनके हृदय को ही बेधेगी;
उनके धनुष तोड़े जाएंगे ।

१६. दुर्जनों की समृद्धि से
धार्मिक मनुष्य का अल्पांश श्रेष्ठ है ।
१७. दुर्जन की भुजा तोड़ा जाएगी;
किंतु प्रभु धार्मिक मनुष्य का आधार है ।

१८. प्रभु निर्दोष व्यक्तियों की आयु का प्रत्येक दिन जानता है,
उनकी पैतृक सम्पत्ति सदा बनी रहेगी ।
१९. वे संकट काल में भी लज्जित न होंगे ।
वरन अकाल में भी तृप्त रहेंगे ।

२०. परंतु दुर्जन नष्ट हो जाएंगे;
प्रभु के शत्रु घास के फूल के समान हैं ।
वे मिट जाएंगे–
वे धुएं में विलुप्त हो जाएंगे ।

२१. दुर्जन उधार लेता है पर चुकाता नहीं;
परंतु धार्मिक मनुष्य उदार होता है;
और वह उधार देता है ।

२२. प्रभु से आशिष पाए हुए मनुष्य
पृथ्वी के अधिकारी होंगे;
किंतु वे लोग नष्ट हो जाएंगे
जिनको प्रभु ने शाप दिया है ।

२३. प्रभु के द्वारा पुरुष के पग स्थिर होते हैं–
जिस व्यक्ति के मार्ग से प्रभु प्रसन्न होता है,
वह उसको स्थिर करता है ।

२४. यद्यपि वह गिरता है तो भी वह सदा पड़ा नहीं रहेगा;
क्योंकि प्रभु उसके हाथ का आधार है ।

२५. मैं भी तरुण था, और अब वृद्ध हूं–
मैंने यह कभी नहीं देखा,
कि प्रभु ने किसी धार्मिक को कभी त्याग दिया;
और न मैंने उसकी संतान को भीख मांगते पाया ।

२६. धार्मिक मनुष्य सदा उदार बना रहता है
और वह उधार देता है ।
उसका वंश आशिष का माध्यम बनता है ।

२७. बुराई से दूर रहो, और भले कार्य करो;
तब तुम देश में सदा शांति से बसे रहोगे ।

२८. क्योंकि प्रभु न्याय से प्रेम करता है;
वह अपने भक्तों को नहीं छोड़ेगा ।
धार्मिक मनुष्य सदा के लिए सुरक्षित है;
किंतु दुर्जन का वंश नष्ट हो जाएगा ।

२९. धार्मिक मनुष्य पृथ्वी के अधिकारी होंगे ।
वे पृथ्वी पर सदा निवास करेंगे ।

३०. धार्मिक मनुष्य ज्ञान का पाठ करता है ।
उसकी जिह्वा न्याय की बातें करती है ।
३१. परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में है;
उसके पैर नहीं फिसलेंगे ।

३२. दुर्जन धार्मिक मनुष्य की घात में रहता है;
वह उसकी हत्या की खोज में रहता है ।
३३. प्रभु धार्मिक मनुष्य को दुर्जन के हाथ में नहीं छोड़ेगा–
जब धार्मिक मनुष्य का न्याय होगा
तब प्रभु उसे दोषी नहीं ठहराएगा ।

३४. प्रभु की प्रतीक्षा करो ।
उसके मार्ग पर चलते रहो ।
वह तुम्हें उन्नत करेगा
और तुम पृथ्वी के अधिकारी बनोगे ।
तुम दुर्जनों का विनाश देखोगे ।

३५. मैंने एक महाबली दुर्जन को देखा था ।
वह बरगद वृक्ष के समान विशाल था ।
३६. मैं पुनः वहां से निकला ।
तब वह वहाँ नहीं था ।
यद्यपि मैंने उसे खोजा
तो भी वह वहाँ नहीं मिला ।

३७. निर्दोष व्यक्ति को ध्यान में रखो,
और सत्यनिष्ठ मनुष्य पर दृष्टि करो !
शांतिप्रिय व्यक्ति का भविष्य उज्जवल होता है ।
३८. किंतु अपराधी पूर्णतः नष्ट किए जाएंगे;
दुर्जन का भविष्य अंधकारमय है ।

३९. धार्मिक मनुष्यों का उद्धार प्रभु से है;
वह संकट काल में उनका सुदृढ़ गढ़ है ।

४०. प्रभु धार्मिक मनुष्यों की सहायता करता और उन्हें मुक्त करता है;
वह दुर्जनों से उन्हें छुड़ाकर उनकी रक्षा करता है;
क्योंकि वे उसकी शरण में आते हैं।

रोगी मनुष्य की प्रार्थना

दाऊद का गीत। स्मारक-बलि के लिए

३८. प्रभु क्रोध से मुझे मत डाँट;
अपने रोष से मुझे दण्डित न कर।
२. तेरे बाणों ने मुझे वेध दिया है—
तेरा हाथ मुझ पर उठा है।

३. तेरे क्रोध ने मेरे शरीर में स्वास्थ्य नहीं छोड़ा—
मेरे पाप के कारण मेरी देह में चैन नहीं है।
४. मैं अपने कुकर्मों में सिर तक डूब चुका हूं;
वे बोझ के समान मेरे लिए बहुत भारी हैं।

५. मेरे घाव दुर्गन्धमय हैं—
मेरी मूर्खता के कारण वे सड़ गए हैं।
६. मैं झुक गया हूं; धूल-धूसरित हो गया हूँ;
मैं दिन भर विलाप करता फिरता हूं।
७. मेरी कमर में बड़ी जलन हो रही है।
मेरे शरीर में स्वास्थ्य नहीं रहा।
८. मैं सुन्न पड़ गया हूँ—कुचल गया हूँ—
अपने हृदय की पीड़ा के कारण मैं कराहता हूँ।
९. हे स्वामी, मेरी वेदना तेरे संमुख है;
मेरी आह तुझसे छिपी नहीं है।
१०. मेरा हृदय तीव्र गति से धड़कता है।
मेरी शक्ति समाप्त होने पर है।
मेरी आंखों की ज्योति भी जाती रही।

११. मेरे प्रिय मित्र और साथी
मेरे रोग के कारण मुझसे अलग हो गए।
मेरे कुटुम्बीजन दूर खड़े हैं।

१२. मेरे प्राण के खोजी जाल फैलाते हैं;
मुझे हानि पहुंचानेवाले
मेरे विनाश की चर्चा करते हैं;
वे दिन भर छल-कपट की बातें सोचते हैं।

१३. परंतु मैं बहरा बन गया हूं;
मैं कुछ सुनता ही नहीं।
मैं गूंगे के समान हूँ,
जो अपना मुंह नहीं खोलता।

१४. निस्सन्देह मैं उस मनुष्य के समान हो गया हूँ,
जो सुनता ही नहीं,
जिसके मुंह में अपने बचाव के लिये तर्क नहीं है।

१५. प्रभु, मैं तेरी ही प्रतीक्षा करता हूँ–
हे प्रभु! मेरे परमेश्वर!
तू ही मुझे उत्तर देगा।

१६. मैंने कहा, "ऐसा न हो कि वे मुझ पर हंसें;
जब मेरे पैर फिसल जाएं
तब वे मेरे विरुद्ध डींग मारें।"

१७. मैं लड़खड़ाकर गिरने पर हूँ;
मेरी पीड़ा निरंतर मेरे साथ है।

१८. मैं अपने अधर्म को स्वीकार करता हूँ;
मैं अपने पाप के लिए दुखी हूँ।

१९. जो अकारण[१] ही मेरे शत्रु बने,
वे शक्तिशाली हो गये हैं।
जो मुझ से व्यर्थ घृणा करते हैं, वे कितने बढ़ गए हैं।

---

[१] मूल में 'जीवित'

२०. जो भलाई का प्रतिकार बुराई से करते हैं,
वे मेरे बैरी हैं–
क्योंकि मैं भलाई का अनुसरण करता हूँ।

२१. हे प्रभु, मुझे मत त्याग !
हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर मत हो !
२२. हे स्वामी, मेरे उद्धारक !
अविलंब मेरी सहायता कर ।

जीवन अस्थायी है

मुख्यवादक के लिए । यदूतून के लिए । दाऊद का गीत

३९. मैंने कहा,
"मैं अपने मार्ग की चौकसी करूंगा,
जिससे मैं अपनी जीभ के कारण पाप न करूँ ।
जब तक दुर्जन मेरे सामने है,
मैं अपने मुंह में लगाम दूंगा ।"

२. मैं मूक और शांत था
मैं भलाई के प्रति भी चुप रहा;
किन्तु मेरी पीड़ा बढ़ती गई ।
३. मेरे भीतर ही भीतर मेरा हृदय उबल उठा;
मेरे सोचते-सोचते अग्नि धधकने लगी,
तब मैं पुकार उठा :
४. "हे प्रभु, मेरा अन्त मुझे बता दे ।
मेरे जीवन काल की सीमा क्या है ?
मुझे बता दे कि मेरा जीवन कितना क्षण-भंगुर है ।
५. तू ने मेरे जीवन काल को बित्ताभर बनाया है;
मेरी आयु तेरे सम्मुख कुछ भी नहीं है ।
वस्तुतः प्रत्येक मनुष्य की स्थिति श्वास मात्र है । सेलाह

६. निस्सन्देह मनुष्य
छाया जैसा चलता-फिरता प्राणी है ।
निस्सन्देह वह व्यर्थ ही उत्तेजित है;
मनुष्य धन का ढेर तो लगाता है,
पर नहीं जानता कि कौन उसे भोगेगा ।

७. "अब स्वामी, मैं किस की प्रतीक्षा करूँ ?
मेरी आशा तो तुझ पर लगी है ।

८. मेरे समस्त अपराधों से मुझे मुक्त कर ।
मुझे मूर्खों के लिए तिरस्कार का पात्र न बनने दे ।

९. मैं चुप हूँ, मैं अपना मुंह नहीं खोलता;
क्योंकि तूने ही यह किया है ।

१०. अब मुझ पर प्रहार मत कर;
तेरे हाथ के आघात से मैं नष्ट हो गया हूँ ।

११. तू डांट-डपट से
व्यक्ति को कुकर्म के लिए दंडित करता है—
जैसा कीड़ा वस्तुओं को खा जाता है,
तू उसकी इच्छित वस्तुओं को नष्ट कर देता है ।

निस्संन्देह प्रत्येक मनुष्य श्वास मात्र है । सेलाह

१२. "हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन,
मेरी दुहाई पर ध्यान दे ।
मेरे आंसुओं के प्रति उदासीन न हो ।
मैं कुछ समय के लिये तेरा अतिथि हूँ;
मैं अपने पूर्वजों के समान प्रवासी हूँ ।

१३. इससे पूर्व कि मैं प्रस्थान करूँ और न रहूँ,
मुझसे अपनी क्रुद्ध दृष्टि हटा ले;
कि मैं प्रसन्न हो सकूं ।"

मुक्ति-प्राप्ति के लिए स्तुतिगान

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

४०. मैं धैर्य से प्रभु की प्रतीक्षा करता हूँ।
उसने मेरी ओर ध्यान दिया
और मेरी दुहाई सुनी है।
२. प्रभु ने मुझे अंध-कूप से,
कीच-दलदल से ऊपर खींचा है;
उसने मेरे पैर चट्टान पर दृढ़ किए हैं;
मेरे कदमों को स्थिर किया है।
३. प्रभु परमेश्वर ने मुझे एक नया गीत सिखाया है,
कि मैं उसको प्रभु की स्तुति में गाऊँ!
अनेक जन यह देखकर भयभीत होंगे;
और वे प्रभु पर भरोसा करेंगे।

४. धन्य है वह मनुष्य, जो प्रभु पर भरोसा करता है;
जो अभिमानियों का मुंह नहीं ताकता,
जो झूठ की उपासना नहीं करता।
५. हे प्रभु, मेरे परमेश्वर!
तूने हमारे प्रति अपने अद्भुत कार्यों
और अभिप्रायों में वृद्धि की है।
यदि मैं लोगों से उनकी चर्चा करूँ,
यदि मैं उनके विषय में लोगों को बताऊँ,
तो मैं बताते-बताते थक जाऊंगा;
क्योंकि उनकी गिनती नहीं हो सकती।
प्रभु, तेरे तुल्य कोई नहीं है।
६. तुझे बलि और भेंट की चाह नहीं।
तूने मेरे कानों को खोला

कि मैं तेरी व्यवस्था का पालन करूँ;
तुझे अग्निबलि और पापबलि की आकांक्षा नहीं ।
७. अतः मैंने कहा, "देख, मैं आ गया हूँ ।
पुस्तक में मेरे विषय में यह लिखा है ।
८. हे परमेश्वर ! मैं तेरी इच्छा को पूर्ण कर सुखी होता हूँ ।
तेरी व्यवस्था मेरे हृदय में है ।"

९. मैंने आराधकों की महासभा में मुक्ति का संदेश सुनाया ।
देख, मैंने अपने ओठों को बन्द नहीं किया;
प्रभु ! तू यह जानता ही है ।
१०. मैंने तेरी मुक्तिप्रद सहायता को अपने हृदय में गुप्त नहीं रखा;
वरन् तेरी सच्चाई और उद्धार को घोषित किया ।
मैंने आराधकों की महासभा से
तेरी करुणा और सच्चाई को नहीं छिपाया ।

११. प्रभु ! मुझे अपनी दया से वंचित न कर;
तेरी करुणा और सच्चाई मुझे निरंतर सुरक्षित रखें ।
१२. असंख्य बुराइयों ने मेरे विरुद्ध घेरा डाला है,
कुकर्मों ने मुझे दबा दिया है ।
अतः मैं दृष्टि ऊपर उठाने में असमर्थ हूँ ।
कुकर्म मेरे सिर के बालों से कहीं अधिक हैं ।
मेरा हृदय हताश हो गया है ।

१३. प्रभु ! मेरे उद्धार के लिए कृपा कर ।
प्रभु, अविलंब मेरी सहायता कर ।
१४. जो मेरे प्राण की खोज में हैं,
और उसे नष्ट करना चाहते हैं,
वे पूर्णतः लज्जित हों और घबरा जाएं ।
जो मेरी बुराई की कामना करते हैं,
वे पीठ दिखाएं और अपमानित हों ।

१५. जो मुझ से "अहा ! अहा !" कहते हैं,
वे अपनी लज्जा के कारण निस्सहाय हो जाएं।

१६. परंतु वे लोग जो तेरी खोज करते हैं,
तुझ में हर्षित और आनन्दित हों।
जो तेरे उद्धार से प्रेम करते हैं,
वे निरंतर यह कहते रहें, "प्रभु महान् है।"

१७. मैं पीड़ित और दरिद्र हूँ;
फिर भी तू, स्वामी, मेरी चिन्ता करता है।
तू मेरा सहायक, मेरा मुक्तिदाता है;
हे मेरे परमेश्वर, विलंब न कर।

रोग से मुक्त होने के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

४१. धन्य है वह मनुष्य,
जो निर्बल की देखभाल करता है।
प्रभु संकट के दिन उसको मुक्त करता है।

२. प्रभु उसकी रक्षा करता
और उसको जीवित रखता है।
उसे पृथ्वी पर 'धन्य' कहा जाता है।
प्रभु, तू उसे उसके शत्रु की इच्छा पर नहीं छोड़ेगा।

३. प्रभु, तू उसे रोग-शैया पर सहारा देता है;
तू उसके समस्त रोगों को दूर करता है,
और उसे स्वास्थ्य पुनः प्रदान करता है।

४. मैंने कहा, "प्रभु ! मुझ पर अनुग्रह कर।
मुझे स्वस्थ कर, क्योंकि मैंने तेरे विरुद्ध पाप किया है।"

५. मेरे शत्रु मेरे विषय में दुष्टता से यह कहते हैं :
"वह कब मरेगा, और कब उसका नाम मिटेगा ?"

६. जो मुझे देखने आता है, वह व्यर्थ बातें बोलता है।
उसका हृदय बुराई का संग्रह करता है।
वह बाहर जाकर लोगों से कहता-फिरता है।
७. जो मुझ से घृणा करते हैं,
वे सब मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं।
वे मेरे अनिष्ट का उपाय करते हैं।

८. वे यह कहते हैं, "असाध्य रोग ने उसे जकड़ लिया है।
जहाँ वह लेटा है, वहाँ से पुनः नहीं उठ सकेगा।"
९. मेरा प्रिय मित्र, जिस पर मैंने भरोसा किया था,
जिसने मेरी रोटी खाई थी,
उसी ने मेरे विरुद्ध लता उठाई है।
१०. परंतु प्रभु, तू मुझ पर कृपा कर;
मुझे उठा, जिससे मैं उनका प्रतिकार कर सकूं।
११. तब मैं जानूंगा कि तू मुझ से प्रसन्न है;
मेरा शत्रु मेरे विरुद्ध जयघोष नहीं कर पाएगा।
१२. तूने मेरी निर्दोषता के फलस्वरूप मुझे सहारा दिया है;
तूने मुझे अपने सम्मुख सदा के लिए बैठाया है।

१३. इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर युग-युगांत धन्य है।
आमेन और आमेन !

दूसरा खण्ड

परमेश्वर के लिए तीव्र इच्छा

मुख्यवादक के लिए। कोरह् वंशियों का मसकील

४२. जैसे हिरणी को बहते झरनों की चाह होती है
वैसे ही, हे परमेश्वर, मेरे प्राण को तेरी प्यास है।

२. मेरा प्राण परमेश्वर के,
जीवंत परमेश्वर के दर्शन का प्यासा है।
मैं कब जाऊंगा और परमेश्वर के मुख का दर्शन पाऊँगा ?

३. रात और दिन मेरे आंसू ही मेरा आहार रहे हैं।
लोग निरंतर मुझसे पूछते हैं,
"कहाँ है तेरा परमेश्वर ?"

४. जब मुझे ये बातें स्मरण आती हैं
तब मेरे हृदय में तीव्र भाव उमड़ आते हैं :
मैं लोगों के साथ गया था।
मैंने उन्हें परमेश्वर के भवन तक पहुँचाया था।
जनसमूह जयजयकार और स्तुति के साथ पर्व बना रहा था।

५. ओ मेरे प्राण, तू क्यों व्याकुल है ?
क्यों तू हृदय में अशांत है ?
ओ मेरे प्राण, तू परमेश्वर की आशा कर;
मैं अपने उद्धार को, अपने परमेश्वर को पुनः सराहूँगा।

६. मेरे हृदय में प्राण व्याकुल है।
यरदन और हर्मोन प्रदेश से, मिसार पर्वत से
मैं तुझ को स्मरण करता हूँ।

७. तेरे जल-प्रपात के गर्जन में सागर सागर को पुकारता है;
तेरी लहरें-तरंगें मेरे ऊपर से गुजर चुकी हैं।
८. दिन में प्रभु अपनी करुणा भेजता है।
मैं रात में उसका गीत गाता हूँ,
और अपने जीवन के परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ।
९. मैं अपने परमेश्वर,
अपनी चट्टान से यह पूछता हूँ :
"तू ने मुझे क्यों भुला दिया ?
क्यों मैं शत्रु के अत्याचार के कारण शोक-संतप्त
मारा-मारा फिरता हूँ ?"
१०. बैरी ताना मारते हैं।
वे मानो मेरी देह पर घातक प्रहार करते हैं।
वे निरंतर मुझ से यह पूछते हैं,
"कहाँ है तेरा परमेश्वर ?"

११. ओ मेरे प्राण, तू क्यों व्याकुल है ?
क्यों तू हृदय में अशांत है ?
ओ मेरे प्राण, तू परमेश्वर की आशा कर;
मैं अपने उद्धार को, अपने परमेश्वर को पुनः सराहूँगा।

न्याय और मुक्ति के लिए प्रार्थना

४३. हे परमेश्वर, मुझे निर्दोष सिद्ध कर;
तू निर्दय राष्ट्र के विरुद्ध मेरे पक्ष में निर्णय दे;
धोखेबाज और अन्यायी मनुष्यों से मुझे मुक्त कर;
२. परमेश्वर, तू ही मेरा शरणस्थल है।
क्यों तूने मुझे त्याग दिया ?
क्यों मैं शत्रु के अत्याचार के कारण शोक-संतप्त
मारा-मारा फिरता हूँ ?
३. तू अपनी ज्योति और सत्य को भेज !

वे ही मेरा मार्ग-दर्शन करें;
वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर, तेरे निवास स्थान पर पहुँचाएँ ।
४. तब मैं परमेश्वर की वेदी पर,
अपने परमानन्द परमेश्वर के पास जाऊंगा ।
हे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, मैं वीणा के साथ
तेरी स्तुति करूंगा ।

५. ओ मेरे प्राण, तू क्यों व्याकुल है?
क्यों तू हृदय में अशांत है?
ओ मेरे प्राण, तू परमेश्वर की आशा कर;
मैं अपने उद्धार को, अपने परमेश्वर को पुन: सराहूँगा ।

अतीत के सुकृत-कार्य और वर्तमान संकट

मुख्यवादक के लिए । कोरह वंशियों का मसकील ।

४४. हे परमेश्वर, हमने अपने कानों से सुना है,
हमारे पूर्वजों ने हमें यह बताया है :
तू ने उनके समय में, प्राचीन काल में
अनेक अद्भुत कार्य किए थे ।
२. तू ने अन्यधर्मी राष्ट्रों को अपने हाथ से उखाड़ा,
पर हमारे पूर्वजों को स्थापित किया था ।
तू ने अन्य जातियों का विध्वन्स किया,
किन्तु हमारी जाति को विकसित किया था ।
३. हमारे पूर्वजों ने तलवार से धरती पर अधिकार नहीं किया था,
और न अपने भुज बल से विजय प्राप्त की थी;
वरन् तेरे दाहिने हाथ ने, तेरी भुजा ने, तेरे मुख की ज्योति ने ।
क्योंकि तब तू उनसे प्रसन्न था ।

४. हे परमेश्वर, तू मेरा राजा है;
तू ही याकूब को विजय प्रदान करनेवाला ईश्वर है ।

५. हम तेरे बल पर अपने बैरियों को पीछे धकेल देते हैं;
हम तेरे नाम से अपने आक्रमणकारियों को कुचल देते हैं ।
६. मुझे अपने धनुष पर विश्वास नहीं है–
और न मेरी तलवार ही मुझे बचा सकती है ।
७. तूने हमें हमारे शत्रुओं से बचाया है–
जो हमसे घृणा करते थे, तूने उन्हें लज्जित किया ।
८. हम निरंतर तुझ परमेश्वर पर गर्व करते हैं,
हम तेरे नाम की स्तुति सदा करते रहेंगे । सेलाह

९. अब तूने हमें त्याग दिया, और हमें नीचा दिखाया ।
तू हमारी सेना के साथ नहीं गया ।
१०. तूने हमें विवश किया कि हम अपने बैरी को पीठ दिखाएँ–
जो हमसे घृणा करते थे, उन्होंने हमें लूट लिया ।
११. तूने हमें आहार बनने के लिए भेड़ जैसा सौंप दिया;
हमें अनेक राष्ट्रों में बिखेर दिया ।
१२. तूने अपने निज लोगों को सस्ते भाव में बेच दिया;
तूने उनके मूल्य से लाभ नहीं कमाया ।

१३. तूने हमें अपने पड़ोसियों की निन्दा का पात्र बनाया,
हमारे चारों ओर के लोगों की दृष्टि में
उपहास और तिरस्कार का पात्र !
१४. तूने हमें राष्ट्रों में 'कहावत' बना दिया;
कौमें सिर हिला-हिला कर हम पर हंसती हैं ।
१५. मेरा अपमान निरंतर मेरे सामने रहता है;
लज्जा ने मेरे मुख को ढांप लिया है,
१६. तिरस्कार करनेवालों और निन्दकों की वाणी के कारण;
शत्रु और प्रतिशोधियों की उपस्थिति के कारण ।
१७. यह सब हम पर बीता, फिर भी हमने तुझ को विस्मृत नहीं किया;
तेरे व्यवस्थान[१] के प्रति विश्वासघात नहीं किया ।

[१] अथवा, "सन्धि", "वाचा"

१८. हमारा हृदय तुझसे विमुख नहीं हुआ;
हमारे पैर तेरे मार्ग से नहीं मुड़े।
१९. अन्यथा तूने हमें खण्डहर बना दिया होता,
तू ने मृत्यु की छाया में हमें आच्छादित किया होता।

२०. यदि हमने अपने परमेश्वर का नाम विस्मृत किया होता,
और दूसरे देश के देवता की ओर हाथ फैलाया होता,
२१. तो क्या परमेश्वर ने इसका पता नहीं लगा लिया होता ?
वह हृदय के भेदों को जानता है।
२२. पर नहीं ! हम तो तेरे कारण
निरंतर मौत के घाट उतारे जाते हैं;
हमें वध होनेवाली भेड़ जैसा समझा गया।

२३. जाग स्वामी ! तू क्यों सो रहा है ?
उठ ! सदा के लिए हमें न त्याग।
२४. तू अपना मुख क्यों छिपा रहा है ?
क्या तूने हमारी पीड़ा और कष्ट को भुला दिया है ?
२५. हमारे प्राण धूल में मिल गए हैं,
और पेट भूमि से चिपक गया है।
२६. उठ, और हमारी सहायता कर;
अपनी करुणा के कारण हमारा उद्धार कर।

राजा के लिए विवाह गान

मुख्यवादक के लिए। 'शशनीम' के अनुसार। कोरह वंशियों का मसकील

प्रेम गीत

४५. मेरे हृदय म सुन्दर भाव उमड़ रहे हैं–
मैं राजा के लिए गीत गाऊंगा–
मेरी जिह्वा निपुण लेखक की लेखनी है।

२. आप पुरुषों में सर्वसुन्दर हैं ।
आपके ओठों से माधुर्य टपकता है;
अत: परमेश्वर ने युग-युगांत आपको आशिष दी है ।

३–४. ओ परम वीर ! यश और प्रताप से
अपनी तलवार कमर पर धारण कीजिए ।
आपके यश की समृद्धि हो ।
सत्य और न्याय की रक्षा के लिए आप सवार होइए ।
आपका दाहिना हाथ आपको
आतंकपूर्ण कार्यों के लिए प्रेरित करे ।

५. आपके बाण तीक्ष्ण हैं, वे आपके शत्रुओं के हृदय को बेधते हैं;
कौमें आपके चरणों पर गिर पड़ी हैं ।

६. आपका सिंहासन युग-युगांत स्थित है
जो परमेश्वर ने आप को दिया[1] है ।
आपका राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है ।

७. आप धार्मिकता से प्रेम करते हैं और दुराचार से घृणा ।
अतएव परमेश्वर ने, आपके परमेश्वर ने,
आपके साथियों से आपको पृथक कर,
हर्ष के तेल से आपका अभिषेक किया है ।

८. आपके वस्त्र गंधरस, अगर और तेजपात से सुगंधित हैं ।
हाथी दांत के महलों में संगीत आपको आनन्दित करते हैं ।

९. राजकन्याएँ आपकी सम्मानित महिलाओं में हैं;
आपकी दाहिनी ओर रानी ओपीर के कुन्दन से सजी हुई बैठी है ।

१०. ओ राजकन्या ! सुन, विचार कर और ध्यान दे;
अपनी जाति और मायके को भूल जा ।

११. तब राजा तेरे रूप की कामना करेंगे ।
वह तेरे स्वामी हैं– तू उनके सामने सिर झुका ।

---

[1] अथवा, हे परमेश्वर तेरा सिंहासन

१२. ओ सोर देश की राजकन्या !
प्रजा के सम्पत्तिशाली लोग,
उपहार द्वारा तेरी अनुकंपा प्राप्त करेंगे।

१३. राजकन्या ने अंत:पुर में सोलह सिंगार किया है–
उसके वस्त्रों पर सोने की कढ़ाई है;
१४. वह रंगीन वस्त्रों में, महाराज, आपके पास पहुँचाई गई।
उसकी कुमारी सहेलियां उसके पीछे-पीछे आपके निकट लाई गई।
१५. उन्हें आनन्द और प्रसन्नता से पहुंचाया गया;
उन्होंने राज महल में प्रवेश किया।

१६. आपके पूर्वजों के स्थान पर आपके पुत्र शासक होंगे;
आप उनको समस्त पृथ्वी पर सामन्त नियुक्त करेंगे।
१७. मैं आपके नाम को समस्त पीढ़ियों में स्मरणीय बनाऊँगा;
जातियाँ युग-युगांत आपकी स्तुति करती रहेंगी।

परमेश्वर हमारा गढ़ और शक्ति है

मुख्य वादक के लिए। अलमोत के अनुसार। कोरह वंशियों का एक गीत

४६. परमेश्वर हमारा गढ़ और शक्ति है;
वह संकट में उपलब्ध महा सहायक है।
२. इसलिए हम नहीं डरेंगे, चाहे पृथ्वी पलट जाए–
चाहे पर्वत सागर के पेट में डूब जाए;
३. चाहे समुद्र-जल गरजे और उफने
और पर्वत उसकी उत्तेजना से कांप उठे। सेलाह

४. एक सरिता है जिसकी जल-धाराएं परमेश्वर के नगर को,
सर्वोच्च परमेश्वर के निवास स्थान को, हर्षित करती हैं।
५. परमेश्वर नगर के मध्य में है, नगर टलेगा नहीं;
परमेश्वर पौ फटते ही उसकी सहायता करेगा।

६. राष्ट्र क्रोध करते हैं, राज्य विचलित होते हैं;
किंतु परमेश्वर के शब्दोच्चार से पृथ्वी पिघल जाती है ।
७. स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु हमारे साथ है;
याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है । सेलाह
८. आओ, प्रभु के महाकर्म देखो;
उसने पृथ्वी पर कैसा विनाश किया है ।
९. वह पृथ्वी की अनंत सीमा तक युद्धबंदी करता है;
वह धनुष को तोड़ता और भाले को टुकड़े-टुकड़े करता है;
वह रथों को अग्नि से भस्म करता है ।
१०. "शांत हो—और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ ।
मैं राष्ट्रों में सर्वोच्च हूँ ।
मैं पृथ्वी पर सर्वोच्च हूँ ।"
११. स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु हमारे साथ है;
याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है । सेलाह

परमेश्वर समस्त पृथ्वी का सम्राट है

मुख्यवादक के लिए : कोरह वंशियों का गीत

४७. हे सब जातियो, करतल ध्वनि करो !
ऊँचे स्वर में परमेश्वर का जयजयकार करो !
२. क्योंकि प्रभु, सर्वोच्च परमेश्वर भय योग्य है;
वह समस्त पृथ्वी का सम्राट है ।
३. वह जातियों को हमारे अधीन
और राष्ट्रों को हमारे चरणों-तले करता है ।
४. उसने हमारे लिए पैतृक भूमि को,
"याकूब की शोभा" को चुना है;
वह याकूब से प्रेम करता है ।
५. भक्तों के जयजयकार के समय,
तुरही की ध्वनि के समय
प्रभु परमेश्वर ऊपर गया !

६. परमेश्वर की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ !
हमारे राजा की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ !
७. परमेश्वर समस्त पृथ्वी का सम्राट है;
विशेष गीतों के साथ स्तुति गाओ !
८. परमेश्वर समस्त राज्यों पर राज्य करता है;
परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजता है ।
९. अब्राहम के परमेश्वर की प्रजा बनने के लिए
जाति-जाति के सामंत एकत्र हुए हैं ।
क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्वर की हैं;
वह अत्यंत उन्नत हुआ है ।

सियोन पर्वत की सौंदर्यमय महिमा

गीत । कोरह वंशियों का गीत

४८. प्रभु महान है–
हमारा परमेश्वर अपने नगर में अत्यंत प्रशंसनीय है ।
२. उसका पवित्र पर्वत जिसकी उठान सुन्दर है,
समस्त पृथ्वी के हर्ष का कारण है ।
उत्तरी सीमांत का सियोन पर्वत, सम्राट का नगर है ।
३. उसके किलों में परमेश्वर ने स्वयं को सुदृढ़ सिद्ध किया है ।
४. देखो राजा एकत्र हुए;
उन्होंने एक-साथ नगर पर आक्रमण किया ।
५. पर वे उसे देखकर चकित रह गए;
वे आतंकित हो तुरंत पलायन कर गए ।
६. वहाँ भय ने उन्हें जकड़ लिया;
उन्हें गर्भवती स्त्री के समान पीड़ा होने लगी ।
७. प्रभु पूर्वी पवन द्वारा तर्शीश के जलयानों को
छिन्न-भिन्न कर देता है ।
८. जैसे हमने सुना था वैसा हमने देखा–
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के नगर में,

अपने परमेश्वर के नगर में ।
परमेश्वर उसको सदा सुरक्षित रखता है । सेलाह

९. हे परमेश्वर, हमने तेरी करुणा का ध्यान
तेरे भवन के मध्य किया है ।

१०. हे परमेश्वर, तेरे नाम के सदृश ही
तेरी स्तुति भी जगत के सीमांतों तक होती है ।
तेरा दाहिना हाथ सदा विजय प्रदान करता है ।

११. सियोन पर्वत आनन्द मनाए !
तेरे न्याय के कारण
यहूदा प्रदेश के नगर हर्षित हों ।

१२. सियोन के चारों ओर जाओ,
उसकी परिक्रमा करो–
उसकी मीनारों की गणना करो ।

१३. उसके परकोटों पर ध्यान दो
उसके गढ़ों में विचरण करो
जिससे तुम आगामी पीढ़ी को यह बता सको :

१४. यही परमेश्वर है,
यह युग-युगांत हमारा परमेश्वर है ।
मृत्यु में भी वह हमारा नेतृत्व करेगा ।

धन-सम्पत्ति पर भरोसा करना मूर्खता है

मुख्यवादक के लिए । कोरह वंशियों का गीत

४९. हे सब जातियो, यह सुनो !
हे संसार के निवासियो,

२. कुलीन और अकुलीन,
धनी और निर्धन, तुम सब ध्यान दो !

३. मेरा मुंह ज्ञान की बातें उच्चारेगा;
मेरे हृदय का चिंतन समझ से पूर्ण होगा ।

४. मैं नीति के वचन पर कान दूंगा—
मैं गाते-बजाते अपनी पहेली बूझ लूंगा ।
५. क्यों मैं संकटकाल में डरूँ ?
जब मैं अपने विरोधियों के अत्याचार से घिर जाऊँ,
६. जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते हैं,
और अपने अपार धन पर अहंकार करते हैं—
तब क्यों मैं भयभीत होऊं ?

७. निस्सन्देह मनुष्य स्वयं को खरीद नहीं सकता;
वह परमेश्वर को अपने प्राण का मूल्य चुका नहीं सकता।[१]
८. क्योंकि उसके प्राण के उद्धार का मूल्य बहुत अधिक है,
वह कभी पर्याप्त नहीं हो सकता ।
९. तब वह कैसे सदा जीवित रह सकता है,
कैसे वह कबर के दर्शन कभी नहीं करेगा ?
१०. मनुष्य देखता है कि बुद्धिमान भी मरते हैं;
मूर्ख और मूढ़ दोनों मरकर
अपना धन दूसरों के लिए छोड़ जाते हैं ।
११. उनकी कबर ही उनका स्थायी घर है ।
वह पीढ़ी से पीढ़ी के लिए उनका निवास स्थान है ।
चाहे वे अपनी भूमि-क्षेत्रों को अपने नाम से संबोधित करें ।
१२. मनुष्य ऐश्वर्य में सदा नहीं रह सकता है;
वह नाशवान पशु के समान है ।

१३. यह उनकी नियति है जो झूठा भरोसा करते हैं ।
यह उनका अंत है जो अपने अंश में मगन रहते हैं । सेलाह
१४. उन्हें भेड़ों के सदृश मृतक-लोक के लिए रखा गया है ।
मृत्यु उनको चरानेवाला चरवाहा होगी;
वे सीधे कबर में जाएंगे;

---

[१] पाठांतर, "व्यक्ति अपने भाई को न गुलामी से मुक्त कर सकता है, और न परमेश्वर को अपने प्राण का मूल्य चुका सकता है ।"

उनकी देह सड़ जाएगी ![1]
मृतक लोक ही उनका निवासस्थान होगा ।
१५. किंतु परमेश्वर मेरे प्राण को बचाएगा,
वह निस्सन्देह अधोलोक की शक्ति से मुझे मुक्त करेगा ;
वह मुझे ग्रहण करेगा । सेलाह
१६. यदि कोई व्यक्ति धनवान हो जाए,
यदि उसके घर का वैभव बढ़ जाए
तो मत डरना ।
१७. जब वह मरेगा, तब अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकेगा ;
उसका वैभव उसके पीछे नहीं जाएगा ।
१८. यद्यपि वह अपने जीवनकाल में अपने प्राण को धन्य मानता है ;
यद्यपि लोग उसकी प्रशंसा करते हैं, कि उसने भलाई की है ;
१९. तो भी वह अपने मृतक पूर्वजों की पीढ़ी में जा मिलेगा
जो प्रकाश को कभी नहीं देखेंगे ।
२०. मनुष्य ऐश्वर्य में रहे, और समझ न रखे
तो वह नाशमान पशु के समान है ।

परमेश्वर सच्चा न्यायाधीश है

आसप का गीत

५०. सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर ने यह कहा है—
उसने उदयाचल से अस्ताचल तक पृथ्वी को बुलाया है ।
२. साकार सौंदर्य-सियोन से
परमेश्वर प्रकाशमान हुआ ।
३. हमारा परमेश्वर आता है ;
वह शांत नहीं रह सकता ;
उसके समक्ष भस्मकारी अग्नि है
और उसके चारों ओर प्रचंड आंधी ।

---

[1] अथवा, सत्यनिष्ठ प्रातः उनपर शासन करेंगे ।

४. वह आकाश और पृथ्वी को बुलाता है
जिससे वह अपने निज लोगों का न्याय करे :
५. "मेरे भक्तों को मेरे निकट एकत्र करो;
जिन्होंने बलि चढ़ाकर मुझसे व्यवस्थान स्थापित किया है ।"
६. आकाश परमेश्वर की धार्मिकता को घोषित करता है;
क्योंकि परमेश्वर स्वयं न्यायाधीश है । सेलाह
७. "ओ मेरे लोगो ! सुनो मैं तुमसे बात करूंगा;
ओ इस्राएली राष्ट्र, मैं तेरे विरुद्ध साक्षी दूंगा ।
मैं परमेश्वर, तेरा परमेश्वर हूं ।
८. मैं तेरे बलिदानों के लिए तेरी भर्त्सना नहीं करता;
तेरी अग्निबलि तो मेरे समक्ष निरंतर विद्यमान हैं ।
९. अब मैं तेरे घर से बैल, और तेरी पशुशाला से बकरे
ग्रहण नहीं करूँगा ।
१०. क्योंकि वन का प्रत्येक प्राणी,
हजारों पर्वतों के पशु मेरे ही हैं ।
११. आकाश के समस्त पक्षियों को मैं जानता हूँ;
भूमि का 'पशु धन' मेरा ही है ।

१२. "यदि मैं भूखा होता तो तुझ से नहीं कहता;
क्योंकि संसार और उसकी परिपूर्णता मेरी ही है ।
१३. क्या मैं बैल का मांस खाता हूँ,
और बकरे का रक्त पीता हूँ ?
१४. मुझे—अपने परमेश्वर को 'स्तुति बलि' चढ़ा;
और सर्वोच्च प्रभु के लिए अपने व्रत पूर्ण कर ।
१५. संकटकाल में मुझे पुकार ।
मैं तुझे मुक्त करूँगा, और तू मेरी महिमा करेगा ।"

१६. पर परमेश्वर दुर्जन से यह कहता है :
"तुझे मेरी संविधि का पाठ करने
और अपने मुंह पर मेरा व्यवस्थान लाने का अधिकार नहीं ।

१७. तू अनुशासन से घृणा करता,
और मेरे वचनों को त्याग देता है।

१८. यदि तू चोर को देखता है,
तो उसका साथी बन जाता है;
व्यभिचारियों के साथ तेरा संपर्क है;

१९. तू ने अपना मुंह बुराई को सौंप दिया है;
तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है।

२०. तू बैठकर अपने भाई के विरुद्ध बोलता है;
तू अपने सगे भाई की निन्दा करता है।

२१. ये काम तूने किए, पर मैं चुप रहा;
तूने सोचा कि मैं भी तेरे जैसा हूँ।
पर अब मैं तेरी भर्त्सना करता हूँ—
और तेरी आंखों के सामने
अभियोग सिद्ध करता हूँ।

२२. "ओ परमेश्वर को भूलनेवालो !
इस बात को समझो—
ऐसा न हो कि
मैं तुम्हें सिंह के समान विदीर्ण करूँ,
और तुम्हें मुक्त करनेवाला कोई न हो।

२३. जो मुझे 'स्तुति-बलि' चढ़ाता है,
वह मेरी महिमा करता है;
जो अपना मार्ग निर्दोष रखता है,
उसे मैं——परमेश्वर अपने उद्धार के दर्शन कराऊंगा।

पाप-शुद्धि के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत : जब नबी नातान दाऊद के पास आए। क्योंकि दाऊद ने परस्त्री बतशबा से संभोग किया था।

५१. हे परमेश्वर, तू करुणामय है।
अतः मुझ पर कृपा कर—

मेरे अपराधों को मिटा दे–
क्योंकि तेरा अनुग्रह असीम है ।
२. मेरे अधर्म से मुझे पूर्णतः धो,
मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर ।

३. मैं अपने अपराधों को जानता हूँ–
मेरा पाप निरंतर मेरे समक्ष रहता है ।
४. तेरे विरुद्ध, तेरे ही विरुद्ध मैंने पाप किया है–
और वही किया जो तेरी दृष्टि में बुरा है–
इसलिए तू अपने निर्णय में निर्दोष,
और न्याय में निष्पक्ष है ।
५. मैं अधर्म से उत्पन्न हुआ था;
और पाप में मेरी मां ने
मुझे गर्भ में धारण किया था ।

६. तू अंतःकरण की सच्चाई से प्रसन्न होता है;
अतः मेरे हृदय को ज्ञान की बातें सिखा ।
७. जूफा की डाली से मुझे शुद्ध कर; तब मैं पवित्र हो जाऊँगा ।
मुझे धो तो मैं हिम से अधिक श्वेत बनूंगा ।
८. मुझे हर्ष और आनंद का सन्देश सुना
जिससे मेरी हड्डियां
जिन्हें तू ने चूर-चूर कर दिया है,
प्रफुल्लित हो सकें ।
९. अपना मुख, मेरे पापों की ओर से फेर ले;
तू मेरे समस्त अधर्म को मिटा दे ।
१०. हे परमेश्वर, मुझ में शुद्ध हृदय उत्पन्न कर ।
तू मेरे भीतर नई और स्थिर आत्मा निर्मित कर ।
११. मुझे अपनी उपस्थिति से दूर न कर,
तू अपना पवित्र आत्मा मुझसे वापस न ले ।

१२. अपने उद्धार का हर्ष मुझे लौटा दे;
अपनी उदार आत्मा से मुझे सहारा दे।

१३. तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊँगा,
और पापी तेरी ओर लौटेंगे।

१४. हे परमेश्वर, मेरे उद्धार के परमेश्वर,
मुझे रक्तपात के दोष से मुक्त कर,
तब मैं अपने मुंह से तेरी धार्मिकता का जयजयकार करूँगा।

१५. हे स्वामी, मेरे ओठों को खोल;
तब मेरा मुंह तेरी स्तुति करेगा।

१६. तू बलि से प्रसन्न नहीं होता;
अन्यथा मैं बलि चढ़ाता;
तू अग्निबलि की इच्छा नहीं करता।

१७. विदीर्ण आत्मा की बलि परमेश्वर को प्रिय है,
हे परमेश्वर, तू विदीर्ण और भग्न हृदय की उपेक्षा नहीं करता।

१८. कृपया तू सियोन की भलाई कर;
तू यरुशलम नगर का परकोटा बना दे।

१९. तब तू विधि सम्मत बलिदानों से,
अग्निबलि और पूर्ण अग्निबलि से प्रसन्न होगा।
तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढ़ाएंगे।

दुर्जन का अहंकार निस्सार है

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का मसकील। जब एदोम देश के दोएग ने शाऊल पर यह प्रकट किया और कहा "दाऊद अहीमेलेक के घर में आया है।"

५२. अरे अत्याचारी,[१] क्यों तू अपने कुकर्मों पर अहंकार करता है?
परमेश्वर की करुणा सदा बनी रहती है।

---

[१] अथवा, "शक्तिमान"

२. सान चढ़ी छुरी के समान,
छल कपट में निरंतर कार्यरत
तेरी जीभ विनाश के षड़यंत्र रचती है।
३. तुझे भलाई से अधिक बुराई,
सच बोलने की अपेक्षा झूठ प्रिय है। सेलाह
४. अरी कपटी जीभ !
तू सब विनाशकारी बातों को प्यार करती है।
५. अरे अत्याचारी,
परमेश्वर तुझे सदा के लिए धूल में मिला देगा,
वह तुझे पकड़ कर तेरे निवास स्थान से निकाल देगा;
वह तुझे जीव-लोक से उखाड़ देगा। सेलाह
६. धार्मिक यह देखकर भयभीत होंगे,
वे उसका उपहास करेंगे।
वे यह कहेंगे :
७. "देखो, उस शक्तिमान को,
जिसने परमेश्वर को अपना गढ़ नहीं बनाया;
वरन जिसने अपने धन-वैभव की प्रचुरता पर भरोसा किया,
और अपनी धन सम्पत्ति को अपना गढ़ माना।"

८. पर मैं परमेश्वर के घर में हरे-भरे जैतून वृक्ष के सदृश हूँ;
मैं परमेश्वर की करुणा पर सदा भरोसा करता हूं।

९. हे परमेश्वर, मैं सदा-सर्वदा तेरी स्तुति करता रहूँगा;
क्योंकि तू ने यह कार्य किया है।
मैं तेरे नाम का यशोगान तेरे भक्तों के सम्मुख करूँगा;
क्योंकि तेरा नाम उत्तम है।

मनुष्य की मूर्खता और दुष्टता

मुख्यवादक के लिए। महलत के अनुसार। दाऊद का मसकील

५३. मूर्ख अपने हृदय में यह कहते हैं :
"परमेश्वर है ही नहीं।"
वे भ्रष्ट हो गए हैं, वे अन्याय करते हैं;
ऐसा कोई भी नहीं, जो भलाई करता है।

२. परमेश्वर स्वर्ग से मनुष्यों पर दृष्टिपात करता है,
यह देखने के लिए कि क्या कोई ऐसा मनुष्य है
जो समझ से काम करता है
जो परमेश्वर को खोजता है ?

३. सब मनुष्य मार्ग से भटक गए हैं;
सब एक-जैसे भ्रष्ट हो गए हैं;
ऐसा कोई भी नहीं, जो भलाई करता है।
नहीं, एक भी नहीं।

४. क्या कुकर्मी नहीं समझते,
मेरे लोगों का खून चूसनेवाले कुकर्मी,[१]
क्या वे बिलकुल न समझ हैं ?
वे मुझ परमेश्वर की आराधना नहीं करते।

५. जहाँ आतंक था ही नहीं
वहाँ वे अत्यंत आतंकित हो उठे !
परमेश्वर ने उनकी अस्थियों को चूर-चूर कर दिया,
जिन्होंने तेरे विरुद्ध घेरा डाला था।
तू ने उन्हें लज्जित किया;
क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया था।

६. भला हो कि सियोन से इस्राएल का उद्धार प्रकट हो !
जब परमेश्वर अपने निज लोगों को समृद्धि पुनः प्रदान करेगा
तब याकूब आनन्द करेगा और इस्राएल हर्षित होगा।

---

[१] अथवा "जो मेरे लोगों को खा जाते हैं जैसे वे रोटी खाते हैं"

शत्रुओं से रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य यंत्रों के साथ। दाऊद का मसकील। जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा, "दाऊद हमारे पास छिपा है।"

५४. हे परमेश्वर, अपने नाम के द्वारा मुझे बचा;
तू अपने बल से मुझे निर्दोष सिद्ध कर।
२. हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन;
मेरे मुंह के शब्दों पर ध्यान दे।

३. विदेशी मेरे विरुद्ध खड़े हुए हैं;
आतंकवादी मेरे प्राण के पीछे पड़े हैं;
वे परमेश्वर को अपने सम्मुख नहीं रखते हैं। सेलाह

४. देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है;
स्वामी मेरे प्राण का आधार है।
५. वह मेरे शत्रुओं का प्रतिकार बुराई से करेगा;
प्रभु, तू अपनी सच्चाई से उनको नष्ट कर दे!

६. मैं तुझ को स्वेच्छा से बलि चढ़ाऊंगा;
प्रभु, मैं तेरे नाम की सराहना करूँगा–
क्योंकि वह उत्तम है।
७. तू ने प्रत्येक संकट से मुझे मुक्त किया,
और मैं ने अपने शत्रुओं पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली।

विश्वासघातियों के विनाश के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए : तांतयुक्त वाद्य यन्त्रों के साथ। दाऊद का मसकील।

५५. परमेश्वर, मेरी प्रार्थना पर कान दे;
मेरी विनती को अस्वीकार न कर।

२. मेरी ओर ध्यान दे, मुझे उत्तर दे;
मैं अपनी विपत्तियों से व्यथित हो विलाप करता हूँ।
३. शत्रु की धमकी और दुष्ट के दमन के कारण
मैं व्याकुल रहता हूँ।
वे मुझ पर विपत्ति ढाहते हैं,
और क्रोध में मेरे प्रति शत्रुभाव रखते हैं।

४. मेरे भीतर मेरा हृदय व्यथित है;
मृत्यु का आतंक मुझ पर छा गया है।
५. कंपन और भय मुझ में समा गये हैं,
और आतंक ने मुझे वश में कर लिया है।
६. मैंने कहा, "भला होता कि मेरे कपोत-सदृश पंख होते;
और मैं उड़ जाता और शांति पाता।

७. अहा ! मैं दूर उड़ जाता
और निर्जन प्रदेश में निवास करता। सेलाह
८. आंधी और अंधड़ से बचने के लिए
मैं सुरक्षित स्थान में पहुंचने की शीघ्रता करता।"

९. स्वामी, उनके प्रयत्नों को विफल कर;
उनकी जिह्वा को खंडित कर;
मैं ने नगर में हिंसा और कलह देखे हैं।
१०. वे दिन-रात उसके परकोटे पर चढ़कर परिक्रमा करते हैं;
उसके मध्य अनिष्ट और कष्ट हैं;
११. उसके बीच विनाश है;
अत्याचार और छल-कपट उसके चौक से दूर नहीं होते।

१२. शत्रु ने मेरी निन्दा नहीं की है;
अन्यथा मैं सह जाता;
और न मुझ से घृणा करनेवाले ने

मेरे विरुद्ध शक्ति-प्रदर्शन किया;
अन्यथा मैं उससे छिप जाता ।
१३. किंतु वह तो तू था—
मेरा समकक्ष, मेरा साथी, मेरा परम मित्र !
१४. हम परस्पर मधुर वार्तालाप करते थे;
हम आराधकों के झुंड में परमेश्वर के घर जाते थे ।
१५. विनाश उन पर छा जाए;
वे जीवित ही मृतक-लोक को चले जाएं;
क्योंकि बुराई उनके घर में, उनके मध्य में है ।

१६. मैं परमेश्वर को पुकारता हूँ;
प्रभु ही मुझे बचाएगा ।
१७. मैं संध्या, प्रातः और दोपहर में
दुःख के उद्गार प्रकट करता,
और रोता हूँ;
वह मेरी आवाज सुनेगा ।
१८. युद्ध में प्रभु मेरी रक्षा करेगा,
जब मेरे विरुद्ध अनेक शत्रु खड़े होंगे,
वह मेरे प्राणों का उद्धार करेगा;
१९. परमेश्वर सनातन काल से सिंहासन पर विराजमान है,
मेरी प्रार्थना सुनकर वह उन्हें उत्तर देगा ।
क्योंकि उन लोगों का न हृदय -परिवर्तन होता है
और न वे परमेश्वर से डरते हैं । सेलाह

२०. मेरे साथी ने अपने ही मित्रों के विरुद्ध हाथ उठाया;
उसने अपने समझौते पर आघात किया ।
२१. उसके मुंह की बातें मक्खन से अधिक चिकनी थी;
पर उसके हृदय में द्वेष था ।
उसके शब्द तेल की अपेक्षा कोमल थे;
फिर भी वे नंगी तलवार थे ।

२२. अपना भार प्रभु पर डाल दो;
वह तुम्हें सहारा देगा;
वह धार्मिक मनुष्य को
कभी विचलित न होने देगा !

२३. परमेश्वर, तू उन्हें विनाश के गर्त में डालेगा;
रक्त पिपासु और कपटी मनुष्य
आधी आयु भी व्यतीत न कर सकेंगे ।
पर मैं तुझ पर ही भरोसा करूँगा ।

अखण्ड विश्वास की प्रार्थना

वृन्दवादक के लिए । योनत-एलेम-रहोकीम के अनुसार । दाऊद का मिकताम

५६. हे परमेश्वर, मुझ पर कृपा कर,
क्योंकि मनुष्य मुझे कुचलते हैं;
सैनिक दिन भर मुझे सताते हैं;
२. मेरे शत्रु दिन भर मुझे कुचलते हैं;
घमण्ड से भर कर मुझ से लड़नेवाले बहुत हैं ।
३. जिस समय मैं भयभीत होता हूँ,
तुझ पर ही मैं भरोसा करता हूँ ।
४. परमेश्वर पर, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ,
परमेश्वर पर मैं भरोसा करता हूँ ।
मैं नहीं डरूँगा;
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ?

५. शत्रु निरंतर मेरे कार्यों में अड़ंगा लगाते हैं;
उनके समस्त विचार मेरे विरुद्ध बुराई के लिए हैं ।
६. वे परस्पर एकत्र हो घात लगाते हैं,
वे मेरे पग-पग के प्रति सचेत रहते हैं,
मानों वे मेरे प्राण के लिए ठहरे हैं ।

७. क्या वे बुराई करके भी बच निकलेंगे ?
हे परमेश्वर, क्रोध से उनको नीचे गिरा दे ।

८. तू ने मेरे मारे-मारे फिरने का विवरण रखा है;
हे परमेश्वर, मेरे आंसुओं को अपने पात्र में रखना ।
निस्सन्देह वे तेरी पुस्तक में लिखे हुए हैं ।
९. जिस दिन मैं तुझ को पुकारूँगा,
मेरे शत्रु तत्काल पीठ दिखाएंगे;
मैं यह जानता हूँ कि परमेश्वर मेरे पक्ष में है ।
१०. परमेश्वर पर, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ;
प्रभु पर जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ;
११. परमेश्वर पर मैं भरोसा करता हूँ;
मैं नहीं डरूंगा ।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ?

१२. हे परमेश्वर, तेरे प्रति अपने व्रतों का दायित्व मुझ पर है;
मैं तुझ को स्तुति बलि चढ़ाऊँगा ।
१३. तू ने मृत्यु से मेरे प्राण को मुक्त किया है ।
निस्सन्देह तू ने मेरे पैरों को फिसलने से बचाया है,
जिससे मैं जीवन-ज्योति में तुझ परमेश्वर के सम्मुख चलूं ।

शत्रुओं से रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए । "नष्ट मत करो" के अनुसार । दाऊद का मिकताम
जब दाऊद शाऊल के पास से गुफा में भागा था

५७. हे परमेश्वर, मुझ पर कृपा कर;
मुझ पर कृपा कर;
क्योंकि मैं तेरी ही शरण में आया हूँ ।

जब तक विनाश की आंधी चली न जाए,
मैं तेरे पंखों की छाया में रहूँगा ।

२. मैं सर्वोच्च परमेश्वर को पुकारता हूँ;
परमेश्वर को, जो मेरे लिए सब कुछ पूर्ण करता है ।

३. जब मुझे कुचलनेवाला मेरी निन्दा करता होगा
वह स्वर्ग से मुझे बचा लेगा;
परमेश्वर अपनी करुणा और सत्य भेजेगा ।

४. मेरा प्राण सिंहों के मध्य है;
मैं धधकती ज्वाला में सोता हूँ;
मनुष्य जिसके दांत भाले और तीर हैं,
जिनकी जिह्वा दुधारी तलवार है ।

५. हे परमेश्वर, स्वर्ग पर अपनी महानता प्रकट कर,
समस्त पृथ्वी पर तेरी महिमा व्याप्त हो ।

६. शत्रुओं ने मेरे पैरों के लिए जाल फैलाया है;
मैं झुक गया हूँ ।
उन्होंने मेरे सन्मुख एक गड्ढा खोदा है;
पर वे स्वयं उसमें गिर पड़े हैं । सेलाह

७. हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है,
स्थिर है मेरा मन ।
मैं गीत गाऊँगा, राग बजाऊँगा ।

८. जाग, ओ मेरे प्राण !
जागो, ओ वीणा और सितार !
मैं प्रभात को जगा दूंगा ।

९. ओ स्वामी, देश-देश में मैं तेरी सराहना करूँगा;
राष्ट्रों के मध्य मैं तेरी स्तुति गाऊँगा ।

१०. तेरी करुणा स्वर्ग तक महान है;
और तेरा सत्य मेघों तक ।

११. हे परमेश्वर, स्वर्ग पर अपनी महानता प्रकट कर;
समस्त पृथ्वी पर तेरी महिमा व्याप्त हो !

दुर्जन के दण्ड के लिए प्रार्थना

पूर्ववादक के लिए। "नष्ट मत करो" के अनुसार। दाऊद का मिकताम

५८. ओ प्रभुत्व सम्पन्न मनुष्यो !
क्या तुम निश्चय ही सच्चाई से निर्णय करते हो ?
ओ अधिकार से मंडित लोगो !
क्या तुम सत्यनिष्ठता से न्याय करते हो ?

२. नहीं, तुम हृदय में अनिष्ट की योजनाएं बनाते हो;
देश में अपने हाथों से हिंसात्मक कार्यों को तोलते हो।

३. दुर्जन माँ के पेट से ही भटक जाते हैं;
झूठे व्यक्ति जन्म से ही पथ-भ्रष्ट होते हैं।

४. उनमें सर्प के विष जैसा विष है;
वे बहरे नाग के समान हैं
जो अपने कान बंद कर लेता है,

५. जिससे सपेरा का स्वर,
निपुण जादू-टोना करनेवाले का मंत्र,
वह सुन न सके !

६. हे परमेश्वर, उनके दाँत उनके मुंह ही में तोड़ दे।
हे प्रभु, तरुण सिंहों के दंत मूल उखाड़ ले।

७. वे बहते पानी के समान विलीन हो जाएं;
वे पगडण्डी की घास के सदृश दब कर सूख जाएं।

८. वे घोंघे बन जाएं,
जो रेंगते समय नष्ट हो जाता है;
वे स्त्री के गर्भपात के समान सूरज का प्रकाश न देख सकें।

६. इसके पूर्व कि
कटीली झाड़ी में कांटे उगें,

परमेश्वर बवंडर में
हरी अथवा सूखी झाड़ी को
उड़ा ले जाएगा ![1]

१०. जब धार्मिक व्यक्ति ये प्रतिशोध देखेगा
तब वह प्रसन्न होगा;
वह दुर्जन के रक्त में अपने पैरों को धोएगा।

११. मनुष्य यह कहेंगे,
"निश्चय, धार्मिकों के लिए पुरस्कार है,
निस्सन्देह, परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर न्याय करता है।"

शत्रुओं से मुक्त होने के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए : "नष्ट मत करो" के अनुसार। दाऊद का मिकताम
जब शाऊल ने दूतों को भेजा कि वे दाऊद का वध करने के लिए
उसके घर पर पहरा दें

५९. हे मेरे परमेश्वर,
मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त कर;
मेरे विरुद्ध खड़े होने वालों से मेरी रक्षा कर।

२. तू कुकर्मियों से मुझे मुक्त कर;
तू रक्त पिपासुओं से मेरी रक्षा कर।

३. वे मेरे प्राण के लिए घात लगाते हैं;
शक्तिवान मेरे विरुद्ध एकत्र होते हैं।
यद्यपि, हे प्रभु, मेरा कोई अपराध नहीं है।
मैं ने कोई पाप नहीं किया है।

४. मेरा कोई दोष नहीं तो भी वे धावा करते हैं;
वे लड़ने को तैयार रहते हैं।

---

[1] अथवा, "इसके पूर्व कि तुम्हारी हंडियों में काँटों की आँच लगे, कच्चे और जलते हुए, दोनों को परमेश्वर बवंडर में उड़ा ले जाएगा।"

मेरी पुकार पर जाग,
आ, और यह देख।

५. हे स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर !
तू ही इस्राएल का परमेश्वर है।
समस्त राष्ट्रों को दंड देने के लिए जाग।
किसी भी विश्वासघाती कुकर्मी पर दया मत करना। सेलाह

६. वे संध्या को लौटते और कुत्ते के समान गुर्राते हैं;
वे नगर की परिक्रमा करते हैं।

७. देख, वे अपने मुंह से डकार रहे हैं।
उनके मुंह में तलवारें हैं;
वे यह कहते हैं, "कौन सुनता है ?"

८. किंतु, प्रभु, तू उन पर हंसता है;
तू समस्त राष्ट्रों का उपहास करता है।

९. हे मेरे बल, मैं तेरी स्तुति गाऊँगा;
परमेश्वर, तू ही मेरा सुदृढ़ गढ़ है।

१०. मेरा परमेश्वर अपनी करुणा के साथ मुझसे मिलेगा,
परमेश्वर की कृपा से मैं अपने शत्रुओं पर
विजय पूर्ण दृष्टिपात करूँगा।

११. क्या तू उनका वध नहीं करेगा ?
ऐसा न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए;
हे प्रभु, हमारी ढाल !
उन्हें अपनी सेना द्वारा छिन्न-भिन्न कर दे,
उनका पतन कर दे।

१२. उनके मुंह के पाप,
उनके ओठों के शब्द के कारण
वे स्वयं अपने अहंकार में फंस जाएं।
शाप देने और झूठ बोलने के कारण

१३. उन्हें क्रोध से भस्म कर दे;
तू उन्हें भस्म कर कि वे शेष न रहें;
जिससे मनुष्य जाने कि परमेश्वर
पृथ्वी के सीमांत तक
इस्राएली कौम पर राज्य करता है। सेलाह

१४. वे संध्या को लौटते
और कुत्ते के समान गुर्राते हैं;
वे नगर की परिक्रमा करते हैं।
१५. वे भोजन के लिए भटकते-फिरते हैं;
यदि वे तृप्त न हों तो गुर्राते हैं।
१६. मैं तेरी सामर्थ्य[1] के गीत गाऊँगा;
प्रातः मैं तेरी करुणा का जयजयकार करूँगा,
क्योंकि तू मेरे लिए सुदृढ़ गढ़ था;
मेरे संकट के लिए तू शरण-स्थल था।
१७. हे मेरे बल, मैं तेरी स्तुति गाऊँगा;
क्योंकि, परमेश्वर, तू मेरा सुदृढ़ गढ़ है;
परमेश्वर, तू मुझ पर करुणा करता है।

शत्रु के विरुद्ध सहायता के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। [1]शूशन-एदूत के अनुसार। दाऊद का मिकताम। शिक्षा के लिए। जब दाऊद अराम-अहरयिम और अराम-सोबा से संघर्ष कर रहा था; और जब योआब ने लौटकर लवण घाटी[2] में बारह हजार एदोमियों को परास्त किया था।

६०. हे परमेश्वर, तू ने हमें त्याग दिया;
तू ने हमें छिन्न-भिन्न कर दिया;
तू क्रोधित था;
अब हमें पुनः स्थापित कर।
२. तू ने धरती को कंपा दया;
तू ने उसे फाड़ दिया;

[1] अथवा 'तेरे सामर्थ्य' [2] अथवा मृतक सागर

अब उसकी दरारों को भर दे;
क्योंकि वह डगमगा रही है ।

३. तू ने अपने निज लोगों को दुर्दिन दिखाए;
तू ने हमें लड़खड़ानेवाली मदिरा पिलाई ।

४. तू ने अपने भक्तों को
पलायन सूचक झण्डा दिया है
कि वे विनाश के पूर्व भाग जाएँ । सेलाह

५. तू अपने दाहने हाथ द्वारा हमें बचा;
हमें उत्तर दे,
जिससे तेरे प्रियजन मुक्त किए जाएं ।

६. परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में यह कहा है,
"मैं प्रसन्न होकर शकेम को विभाजित करूँगा;
और सुकोत घाटी को नाप दूंगा;

७. गिलआद प्रदेश मेरा है;
और मनश्शे प्रदेश भी मेरा है;
एप्रइम प्रदेश मेरा शिरस्त्राण है;
यहूदा प्रदेश मेरा राजदण्ड है ।

८. किंतु मोआब राष्ट्र मेरी चिलमची है;
एदोम राष्ट्र मेरे पैर के नीचे होगा;
पलिस्ती राष्ट्र पर मैं जयघोष करूँगा ।"

९. कौन मुझे सुदृढ़ नगर में पहुंचाएगा ?
कौन मुझे एदोम तक ले चलेगा ?

१०. हे परमेश्वर,
क्या तू ने हमारा परित्याग नहीं किया है ;
हे परमेश्वर,
तू हमारी सेना के साथ क्यों नहीं जाता ?

११. शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता कर;
क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है ।

१२. परमेश्वर का साथ होने पर हम वीरता से लड़ेंगे;
क्योंकि परमेश्वर हमारे शत्रुओं को कुचलेगा ।

परमेश्वर की रक्षा-शक्ति में पूर्ण विश्वास

मुख्यवादक के लिए : तांतयुक्त वाद्य यंत्रों के साथ । दाऊद का गीत ।

६१. हे परमेश्वर, मेरी पुकार सुन;
मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे ।
२. जब मेरा हृदय डूबने लगता है,
तब मैं पृथ्वी के सीमांत से
तुझ को पुकारता हूँ ।
मुझे ऊपर उठा,[१]
और चट्टान पर बैठा,
जो मेरी अपेक्षा ऊँची है;
३. क्योंकि तू मेरा शरण स्थल है;
शत्रु के समक्ष मेरा सुदृढ़ गढ़ है ।
४. मैं युग युगांत तेरे शिविर में रहूँगा;
मैं तेरे पंखों के आश्रय में शरण लूंगा । सेलाह
५. हे परमेश्वर,
तू ने मेरे व्रत पूर्ण किए हैं;
जो तेरे नाम के भक्त हैं
तू ने उनकी मनोकामनाएँ पूरी की हैं ।
६. राजा को दीर्घायु प्रदान कर ।
उसकी आयु के वर्ष कई पीढ़ियों के तुल्य हो जाएँ ।
७. वह परमेश्वर के सम्मुख
सदा सिंहासन पर रहे ।
तू अपनी करुणा और सच्चाई को नियुक्त कर
कि वे उसकी रक्षा करें ।

---

[१] अथवा, 'मुझे उस चट्टान पर ले चल',

८. जैसे मैं प्रति दिन अपने व्रत पूर्ण करता हूँ,
वैसे मैं निरंतर तेरे नाम की स्तुति गाता रहूँगा ।

परमेश्वर ही एकमात्र आश्रय-स्थल है

मुख्यवादक के लिए : यूदून के अनुसार । दाऊद का गीत

६२. मेरा प्राण शांति से परमेश्वर की प्रतीक्षा करता है,
मेरा उद्धार उसी से है ।

२. वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है,
वह मेरा गढ़ है, मैं अधिक नहीं हिलूंगा ।

३. ओ शत्रुओ ! तुम कब तक
एक ही मनुष्य पर आक्रमण करते रहोगे
कि सब उसे मार डालो,
जैसे झुकी दीवार को, गिरती भीत को ?

४. वे उसके उच्च स्थान से
उसे गिराने की सम्मति करते हैं ।
वे झूठ से हर्षित होते हैं ।
वे मुंह से तो आशिष देते हैं, पर हृदय से शाप । **सेलाह**

५. मेरा प्राण शांति से परमेश्वर की प्रतीक्षा करता है,
क्योंकि मेरी आशा उसी से है ।

६. वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है;
वह मेरा गढ़ है, मैं नहीं हिलूंगा ।

७. परमेश्वर पर ही मेरा उद्धार और सम्मान आधारित है,
मेरी दृढ़ चट्टान और शरण-स्थल परमेश्वर ही है ।

८. लोगो, हर समय परमेश्वर पर ही भरोसा करो ।
उसके सम्मुख अपना हृदय उंडेल दो,
परमेश्वर ही हमारे लिए शरण-स्थल है । **सेलाह**

९. अकुलीन मनुष्य श्वास मात्र है,
कुलीन केवल मिथ्या है;

तुला पर वे ऊपर उठ जाते हैं,
वे सब मिलकर सांस से भी हलके हैं ।

१०. अत्याचार पर भरोसा मत करो,
लूट-मार से न फूलो;
यदि धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है,
तो उस पर हृदय मत लगाओ ।

११. परमेश्वर ने एक बार कहा,
मैं ने दो बार यह सुना;
कि सामर्थ्य परमेश्वर की ही है ।

१२. और स्वामी, करुणा भी तेरी ही है;
क्योंकि तू मनुष्य को
उसके कामों के अनुसार फल देता है ।

परमेश्वर प्यासी आत्मा को तृप्त करता है

दाऊद का गीत जब वह यहूदा के निर्जन प्रदेश में था

६३. हे परमेश्वर, तू ही मेरा परमेश्वर है,
मैं प्रभात में तेरा दर्शन करने जाऊंगा,
शुष्क और तप्त भूमि पर,
जहाँ जल नहीं है;
मेरा प्राण तेरे लिए प्यासा है,
मेरी देह तेरे लिए अभिलाषित है ।

२. मैं पवित्र स्थान में तुझ पर दृष्टि करता हूँ,
कि तेरी सामर्थ्य और महिमा के दर्शन पाऊं ।

३. तेरी करुणा जीवन की अपेक्षा श्रेष्ठ है;
मेरे ओंठ तेरी प्रशंसा करेंगे ।

४. जब तक मैं जीवित हूँ,
तुझ को धन्य कहता रहूँगा;
तेरे नाम से अपने हाथों को ऊपर उठाऊँगा ।

५. मेरा प्राण भव्य भोज के भोजन से तृप्त हुआ है;
मैं आनन्दपूर्ण ओठों से तेरी प्रशंसा करूँगा ।
६. मैं अपने शैया पर तुझ को स्मरण करता हूँ,
और रात्रि जागरण में तेरा ही ध्यान करता हूँ ।
७. तू मेरा सहायक था;
मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करता हूँ ।
८. मेरा प्राण तुझ से जुड़ा है ।
तेरा दाहिना हाथ मुझे संभालता है ।

९. जो मेरे प्राण को नष्ट करने की खोज में हैं,
वे धरती के निचले स्थानों को चले जाएंगे ।
१०. वे तलवार की धार पर उछाले जाएंगे,
वे गीदड़ों का आहार बनेंगे ।
११. किंतु राजा परमेश्वर में हर्षित होगा;
परमेश्वर की शपथ लेने वाले महिमा करेंगे;
पर झूठे लोगों का मुंह बन्द किया जाएगा ।

गुप्त शत्रुओं से रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

६४. हे परमेश्वर, संकट में[१] मेरी पुकार सुन,
शत्रु के आतंक से मेरे जीवन की रक्षा कर ।
२. दुर्जनों की गुप्त गोष्ठी से,
कुकर्मियों के षड़यंत्र से मुझे छिपा ।
३. उन्होंने अपनी जीभ को तलवार के समान चोखा किया है,
उन्होंने कटु वचन रूपी बाण संधान किया है,
४. कि उनको गुप्त स्थानों में निर्दोष व्यक्ति पर छोड़ें ।
वे अचानक उस पर बाण छोड़कर डरते भी नहीं हैं ।

---

[१] शब्दश : 'अभियोग', अथवा, 'शिकायत'

५. वे दुष्प्रयोजन को पूर्ण करने का साहस करते हैं,
जाल बिछाने के लिए छिपकर वार्तालाप करते हैं,
वे यह कहते हैं, "हमें कौन देख सकता है?"
६. उन्होंने दुष्कर्मों की योजना बनाई है,
उन्होंने सोच समझ कर कुचक्र रचा है।

मनुष्य का अंत:करण और हृदय गहन-गंभीर है!

७. परमेश्वर उन पर बाण छोड़ेगा;
वे अचानक घायल हो जाएंगे।
८. स्वयं उनकी जीभ उनका विनाश करेगी;
उनको देखने वाले सब लोग सिर हिलाएंगे।
९. तब सब मनुष्य भयभीत होंगे,
और परमेश्वर के कार्य को घोषित करेंगे,
और उसके व्यवहार को समझेंगे।

१०. भक्त प्रभु में आनन्दित हों,
और उसकी शरण में आएँ;
निष्कपट हृदय वाले सब मनुष्य प्रभु की महिमा करें।

परमेश्वर की उदारता के लिए स्तुति

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत। एक भजन

६५. हे परमेश्वर, तेरे लिए हम सियोन में स्तुति करते हैं,
तेरे लिए हम अपने व्रत पूर्ण करेंगे।
२. हे प्रार्थना सुनने वाले!
तेरे ही पास समस्त प्राणी आएंगे।
३. अधर्म के कार्य हम पर प्रबल हो गए हैं;
पर तू ही हमारे अपराधों को क्षमा करता है।
४. धन्य है वह, जिसको तू चुनता और अपने समीप आने देता है,
कि वह तेरे भवन के आंगनों में निवास करे।

हम तेरे गृह, तेरे पवित्र भवन के
उत्तम भोजन से तृप्त होंगे ।

५. हे हमारे उद्धारक परमेश्वर,
तू हमें भयप्रद कार्यों द्वारा उत्तर देता है,
तू हमें विजय प्रदान करता है ।
तू ही जगत के समस्त सीमांतों,
और दूर सागरों के निवासियों की आशा है ।
६. तू ने ही अपने बाहु बल से पर्वतों को स्थित किया है;
तू पराक्रम से विभूषित है,
७. तू सागरों के कोलाहल को,
उनकी लहरों की गर्जना को,
जातियों के उपद्रव को शांत करता है ।
८. इसलिए जगत-सीमांतों के निवासी भी,
तेरे चिन्हों से भयभीत हो गए ।
तू उदयाचल और अस्ताचलके देशों से जयजयकार कराता है ।

९. तू भूमि की सुधि ले उसको सींचता है;
तू उसे बहुत उपजाऊ बनाता है ।
तेरी नहर जल से भरी है;
तू मनुष्यों के लिए अनाज तैयार करता है;
क्योंकि इसी के लिए तू ने उसे तैयार किया है ।
१०. तू उसकी नालियों को जल से परिपूर्ण रखता है,
उसकी कूटक को समतल करता है,
उसे बौछारों से नरम बनाता है,
और उसके अंकुरों को बढ़ाता है ।
११. तू अपने मंगलमय वर्ष को मुकुट पहिनाता है,
तेरे रथ-मार्गों के किनारे खेत लहलहाते हैं ।
१२. निर्जन प्रदेश में हरियाली फूटती है ।
पहाड़ियां हर्ष से विभूषित हैं ।

१३. चराइयाँ भेड़ बकरियों से मानों सजी हुई हैं ।
घाटियाँ अनाज से आच्छादित हैं ।
वे मिलकर जयजयकार करतीं,
और गाती हैं ।

परमेश्वर के महान् कार्यों के लिए स्तुति

मुख्यवादक के लिए : भजन, एक गीत

६६. हे सब देशो !
परमेश्वर का जय-जयकार करो,
२. उसके नाम की महिमा का गान करो,
उसके यशोगान को महिमा पूर्ण बनाओ ।
३. परमेश्वर से यह कहो, "तेरे कार्य कितने भयप्रद हैं ।
तेरे असीम बल के कारण
तेरे शत्रु तेरे सन्मुख घुटने टेकते हैं ।
४. समस्त देश तेरी आराधना करते हैं;
वे तेरी स्तुति गाते,
तेरे नाम की स्तुति गाते हैं ।" सेलाह

५. आओ, और परमेश्वर के कार्य देखो;
वह मनुष्यों के प्रति व्यवहार में भयप्रद है ।
६. उसने सागर को सूखी भूमि में बदल दिया ।
लोगों ने पैदल ही नदी पार की थी ।
वहां हम प्रभु में हर्षित हुए थे ।
७. वह अपनी शक्ति से सदा शासन करता है ।
उसकी आंखें राष्ट्रों का अवलोकन करती हैं;
अतः विद्रोही गर्व से न फूलें । सेलाह

८. हे जातियो ! हमारे परमेश्वर को धन्य कहो;
उसकी स्तुति के स्वर को प्रसारित करो ।

९. उसने हमारे प्राणों को जीवित रखा,
और हमारे पैरों को फिसलने नहीं दिया ।
१०. परमेश्वर, तू ने हमें परखा ।
जैसे चांदी शुद्ध की जाती है,
वैसे तू ने हमें शुद्ध किया ।
११. तू ने हमें जाल में फंसाया,
हमारी कमर पर दुख का भार रखा ।
१२. तू ने हमारे सिर को घुड़सवारों से कुचलवाया ।
हम अग्नि और जल के मध्य से गुजरे,
तो भी तू ने हमें मुक्त स्थान में पहुंचाया ।

१३. मैं तेरे भवन में अग्निबलि के साथ प्रवेश करूंगा;
मैं तुझ को अपनी मन्नतें चढ़ाऊंगा ।
१४. जब मैं संकट में था
तब उन मन्नतों को मैंने अपने ओठों से उच्चारा था;
उनको अपने मुंह से स्वीकार किया था ।
१५. मेढ़ों की चर्बी के सुगंधित धुंए सहित,
मैं तुझ को मोटे पशुओं की अग्नि बलि चढ़ाऊंगा;
बकरों के साथ मैं तुझको बैल अर्पित करूंगा । सेलाह

१६. ओ परमेश्वर से डरने वालो !
आओ और सुनो;
मैं तुम्हें बताऊंगा कि परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया है ।
१७. मैं ने अपने मुंह से उसे पुकारा,
और मेरी जीभ ने उसका यशोगान किया ।
१८. यदि मैं अपने हृदय में अनिष्ट सोचता,
तो स्वामी नहीं सुनता ।
१९. किंतु निस्संदेह परमेश्वर ने सुना,
उसने मेरी प्रार्थना की आवाज पर ध्यान दिया ।

२०. धन्य है परमेश्वर !
उसने मेरी प्रार्थना की उपेक्षा न की,
और न अपनी करुणा मुझ से पृथक की ।

विश्व के राष्ट्र परमेश्वर का जयजयकार करते हैं

मुख्यवादक के लिए । ताँतयुक्त वाद्य यंत्रों के साथ गीत । एक भजन

६७. हे परमेश्वर, हम पर कृपा कर और हमें आशिष दे ।
तू अपना मुख हम पर प्रकाशित कर, सेलाह
२. जिससे धरती पर तेरा मार्ग,
और समस्त राष्ट्रों में तेरा उद्धार समझा जा सके ।
३. हे परमेश्वर, लोग तेरी सराहना करें;
सब जातियाँ तेरी सराहना करें ।
४. जातियाँ आनन्दित हो जयजयकार करें;
क्योंकि तू निष्पक्षता से लोगों का न्याय,
और पृथ्वी पर जातियों का मार्ग-दर्शन करता है । **सेलाह**
५. हे परमेश्वर, लोग तेरी सराहना करें;
सब जातियाँ तेरी सराहना करें ।
६. धरती ने अपनी उपज प्रदान की है,
परमेश्वर ने, हमारे परमेश्वर ने, हमें आशिष दी है ।
७. परमेश्वर ने हमें आशिष दी है,
संसार की समस्त जातियां उसकी भक्ति करें ।

इस्राएली राष्ट्र का विजय गान

मुख्यवादक के लिए । दाऊद का गीत । एक भजन

६८. परमेश्वर उठता है,
उसके शत्रु बिखर जाएंगे ;
जो उससे बैर करते हैं,
वे उसके सम्मुख से भाग जाएंगे ।

२. जैसे धुंआ उड़ाया जाता है, वैसे ही तू उन्हें उड़ा दे;
जैसे मोम आग के सामने पिघलती है,
वैसे ही दुर्जन परमेश्वर के समक्ष नष्ट हो जाएंगे।
३. किंतु धार्मिक हर्षित होंगे,
वे परमेश्वर के समक्ष प्रफुल्लित होंगे,
वे आनन्द में फूले न समाएंगे।
४. परमेश्वर के लिये गीत गाओ, उसके नाम की स्तुति गाओ,
उसका गुणगान करो, वह मेघों पर सवार है।
उसका नाम प्रभु है, उसके सम्मुख उल्लसित हो।
५. परमेश्वर अपने पवित्र निवास स्थान में है;
वह अनाथ बच्चे का पिता, और विधवाओं का रक्षक है।
६. परमेश्वर बेघर को घर में बसाता है,
वह बन्दियों को मुक्त कर उन्हें प्रसन्न करता है,
किंतु विद्रोही उजाड़ भूमि पर बसते हैं।

७. हे परमेश्वर, जब तू अपनी प्रजा के आगे गया था,
जब तू निर्जन प्रदेश में आगे बढ़ा था, सेलाह
८. तब परमेश्वर, तेरी उपस्थिति से
भूमि काँपने लगी और आकाश बरसने लगा था।
यह सीनय पर्वत भी,
परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर की उपस्थिति से थर्राने लगा था।
९. परमेश्वर, तू ने मूसलाधार वर्षा की थी।
जब तेरी मीरास[२] निराश हुई थी,
तब तू ने ही उसे विश्वास में स्थिर किया था।
१०. तेरा रेवड़ देश में बस गया;
हे परमेश्वर, तू ने अपनी भलाई के कारण,
पीड़ित प्रजा की व्यवस्था की।

---

[१] अथवा, "उसका मार्ग प्रशस्त करो, जिसकी सवारी निर्जन प्रदेश से जाने वाली है।"
[२] अथवा, "दाय, उत्तराधिकारी"

११. स्वामी आज्ञा देता है;
शुभ संदेश सुनानेवाली महिलाओं का दल
यह घोषित करता है :

१२. "सेनाओं के राजा भाग रहे हैं, वे भाग रहे हैं।"
घर पर रहनेवाली स्त्रियाँ लूट को बाँटती हैं,

१३. उन्हें चांदी के कबूतर के पंख,
और सोने के पर मिले।
ओ पुरुषो,
क्या तुम भेड़शालाओं में
दुबक कर बैठे रहोगे ?

१४. जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने,
राजाओं को वहाँ छिन्न-भिन्न कर दिया,
तब ऐसा लगा मानो सलमोन पर्वत पर हिमपात हुआ।

१५. ओ विशाल पर्वत, बाशान पर्वत,
ओ शिखरोंवाले पर्वत, बाशान-पर्वत !

१६. ओ शिखरोंवाले पर्वत,
ईर्ष्या से उस पर्वत को क्यों देखते हो,
जिस पर बसने की परमेश्वर ने इच्छा की है ?
निस्सन्देह परमेश्वर वहां युग-युगांत निवास करेगा।

१७. परमेश्वर के रथ हजारों हैं,
हजारों-हजार हैं;
स्वामी सीनाय से पवित्र स्थान में आया।[१]

१८. तू ऊँचे स्थान पर चढ़ गया;
तू बन्दियों को पकड़कर ले गया;
तू ने लोगों से, विद्रोहियों से भी, उपहार लिए।
प्रभु परमेश्वर वहाँ निवास करेगा।

---

[१] पाठांतर, "स्वामी उनके साथ है, सीनाय पवित्र स्थान में है।"

१९. धन्य है स्वामी !
वह प्रति दिन हमारा भार वहन करता है;
परमेश्वर ही हमारा उद्धार है । सेलाह
२०. हमारा परमेश्वर मुक्ति प्रदान करनेवाला परमेश्वर है;
प्रभु, स्वामी के पास ही मृत्यु से मुक्ति है ।

२१. निस्सन्देह परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिरों को,
उस व्यक्ति की बालों भरी खोपड़ी को कुचल देगा,
जो अपने अपराधों भरे मार्ग पर चलता है ।
२२. स्वामी ने कहा, "मैं उन्हें बाशान से ले आऊंगा,
मैं उन्हें सागर की गहराइयों से निकाल लाऊँगा,
२३. जिससे तू अपने पैरों को रक्त में नहला सके ।
जिससे तेरे कुत्तों की जीभ बैरियों से अपना हिस्सा पा सके ।"

२४. हे परमेश्वर, तेरी शोभा-यात्राएँ दिखाई देती हैं,
पवित्र स्थान में, मेरे परमेश्वर, मेरे राजा की शोभा यात्राएँ:
२५. गायक आगे हैं, वादक पीछे,
उनके मध्य कन्याएँ डफ बजा रही हैं :
२६. "ओ इस्राएल के वंशजो !
महासभाओं में परमेश्वर को, स्वामी को धन्य कहो ।"
२७. वहाँ सब से छोटा कुल बिन्यामिन उनकी अगुवाई कर रहा है,
उनके समूह में यहूदा के शासक,
जबूलून और नप्ताली कुल के शासक हैं ।

२८. हे परमेश्वर, अपनी सामर्थ का आह्वान कर,
तू अपनी सामर्थ्य को प्रदर्शित कर;
परमेश्वर, तू ने हमारे लिए महाकार्य किया है ।
२९. तेरे यरूशलम के मंदिर के कारण,
राजा तेरे लिये भेंट ले जाएंगे ।

३०. नरकट में रहनेवाले सिंह पशु को,
देश-देश के बछड़ों के साथ
सांडों के झुण्ड को भी डाँट।
वे चांदी के कोष के साथ आत्म-समर्पण कर रहे हैं,
जो युद्ध से प्रसन्न होते हैं
प्रभु ने उनको छिन्न-भिन्न कर दिया।
३१. सामन्त मिस्र से आएंगे,
इथियोपी लोग परमेश्वर की ओर अविलम्ब हाथ जोड़ेंगे।

३२. ओ पृथ्वी के सब देशो! परमेश्वर के लिए गीत गाओ;
स्वामी की स्तुति करो! सेलाह
३३. वह स्वर्ग पर, सनातन के स्वर्ग पर सवारी करता है,
देखो, वह अपनी वाणी, शक्तिशाली वाणी सुनाता है।
३४. परमेश्वर की स्तुति करो,
उसकी सामर्थ्य के लिए!
उसका प्रताप इस्राएल पर छाया है;
उसकी शक्ति नभ-मण्डल में है।
३५. परमेश्वर अपने पवित्र स्थान में भयप्रद है;
इस्राएल का परमेश्वर ही अपनी प्रजा को
शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करता है;
परमेश्वर धन्य है!

संकट से मुक्ति की प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए : शोशनीम के अनुसार, दाऊद का गीत

६९. हे परमेश्वर, मुझे बचा;
क्योंकि जल प्रवाह मेरे गले तक बढ़ आया है।
२. मैं कीच-दलदल में धँस गया हूँ;
वहाँ पैर रखने को आधार नहीं है,

मैं अथाह जल में पहुँच गया हूँ,
और जल प्रवाह मुझे डुबा रहा है ।

३. मैं पुकारते पुकारते थक गया;
मेरा गला सूख गया ।
अपने परमेश्वर की प्रतीक्षा करते-करते
मेरी आंखें धुंधली हो गईं ।

४. जो मुझसे अकारण घृणा करते हैं,
वे मेरे सिर के बाल से कहीं अधिक हैं;
मुझे नष्ट करनेवाले,
मुझ पर मिथ्या दोष लगानेवाले
बलवान हैं ।
जो मैंने छीना नहीं,
क्या उसे लौटाना होगा ?

५. हे परमेश्वर,
तू मेरी मूर्खता जानता है,
मेरे अपराध तुझ से छिपे नहीं हैं ।

६. हे स्वामी, स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु,
तेरी प्रतीक्षा करनेवाले
मेरे कारण लज्जित न हों,
हे इस्राएल के परमेश्वर,
तुझ को खोजने वाले
मेरे कारण अपमानित न हों ।

७. तेरे लिए ही मैंने निन्दा ढोयी है;
लज्जा ने मेरा मुख ढांप रखा है ।

८. अपने भाई के लिए मैं अजनबी हो गया,
और अपने सगे भाइयों के लिए परदेशी ।

९. तेरे घर की धुन ने मुझे खा लिया,

जो निन्दा तेरे निन्दकों ने की,
वही मुझपर पड़ी ।
१०. जब मैंने उपवास से अपनी आत्मा को विनम्र किया,[1]
तब वह भी मेरे लिए निन्दा बन गई ।
११. जब मैंने शोकवस्त्र पहिने,
तब मैं उनके लिए एक कहावत बन गया ।
१२. नगर-द्वार पर बैठनेवाले मेरी चर्चा करते हैं,
और पियक्कड़ कवि मुझ पर गीत रचते हैं ।

१३. पर प्रभु, मेरी प्रार्थना तुझ को अर्पित है,
हे परमेश्वर, कृपा-अवसर पर
अपनी महाकरुणा के कारण मुझे उत्तर दे ।
१४. अपनी सच्ची सहायता द्वारा
कीच-दलदल से मुझे मुक्त कर,
कि मैं धंस न जाऊँ,
मुझसे घृणा करनेवालों से मुझे मुक्त कर ।
१५. जल प्रवाह मुझे डुबा न सके,
अथाह जल मुझे निगलने न पाए
और न कबर अपना मुंह मुझ पर बन्द करे ।
१६. हे प्रभु, मुझे उत्तर दे;
क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है ।
अपनी असीम अनुकंपा से मेरी ओर अपना मुख कर,
१७. अपने सेवक से अपना मुख न छिपा;
मुझे अविलम्ब उत्तर दे;
क्योंकि मैं संकट में हूँ ।
१८. मेरे निकट आ और मेरा उद्धार कर,
मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त कर ।

---

[1] अथवा, "मैंने उपवास से अपने प्राण को शोकित किया ।"

१९. तू मेरी निन्दा, लज्जा और अपमान को जानता है,
तू मेरे समस्त बैरियों से परिचित है ।
२०. निन्दा ने मेरे हृदय को विदीर्ण कर दिया है;
मैं अत्यंत निराश हूँ ।
मैंने सहानुभूति की आशा की, पर वह न मिली;
मैंने सांत्वना देनेवालों की प्रतीक्षा की, पर वह न मिली;
२१. उन्होंने खाने के लिए मुझे विष दिया;
मेरी प्यास बुझाने के लिए मुझे पीने को सिरका दिया ।

२२. उनके सम्मुख रखा हुआ भोजन फँदा बन जाए,
और उनकी अग्निबलि एक जाल ।
२३. उनकी आंखें धुंधली पड़ जाएं, और वे देख न सकें;
तू उनकी कमर को सदैव झुकाकर रख ।
२४. उन पर अपने कोप की वर्षा कर;
तेरा दहकता क्रोध उन्हें भस्म कर दे ।
२५. उनका निवासस्थान उजाड़ हो जाए,
उनके घरों में कोई न रहे ।
२६. ऐसे मनुष्य उसका पीछा करते हैं,
जिसे तू ने मारा है;
वे उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं,
जिन्हें तू ने घात किया है ।
२७. वे कुकर्म पर कुकर्म करते रहें,
और तेरी धार्मिकता में प्रवेश न करें ।
२८. जीवन की पुस्तक से उनके नाम मिटा डाल;
उनके नाम धार्मिकों के साथ न लिखे जाएं ।

२९. पर मैं दुखी और पीड़ित हूं,
हे परमेश्वर,
अपनी सहायता से मुझे बलवान बना ।
३०. मैं अपने गीतों में

परमेश्वर के नाम का यशोगान करूँगा,
मैं स्तुति-गीत में उसकी प्रशंसा करूँगा।
३१. यह प्रभु को बैल-बलि से अधिक
सींग और खुर वाले बैल की बलि से भी अधिक भाएगा।
३२. पीड़ित जन इसे देखकर सुखी हों;
ओ परमेश्वर के खोजियो,
तुम्हारे हृदय को नया बल प्राप्त हो!
३३. प्रभु गरीबों की आवाज सुनता है;
वह अपने बन्दीजनों से घृणा नहीं करता।
३४. आकाश और पृथ्वी,
सागर और उसके समस्त जलचर
प्रभु का यशोगान करें।
३५. परमेश्वर सियोन की रक्षा करेगा,
और यहूदा प्रदेश के नगरों को फिर बसाएगा!
प्रभु के सेवक वहां बसकर
उस देश पर अधिकार कर लेंगे।
३६. उन के वंशज उसको उत्तराधिकार में प्राप्त करेंगे,
जो प्रभु के नाम से प्रेम करते हैं,
वे वहां निवास करेंगे।

मुक्ति के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए : स्मारक बलि के लिए। दाऊद का गीत

७०. हे परमेश्वर, मेरे उद्धार के लिए मुझ पर कृपा कर।
हे प्रभु, अविलंब मेरी सहायता कर।
२. जो मनुष्य मेरे प्राण की खोज में है कि उसे नष्ट करें,
वे लज्जित हों, और घबरा जाएं।
जो मेरी बुराई की कामना करते हैं,
वे पीठ दिखाएं और अपमानित हों।

३. जो मुझ से "अहा ! अहा !" कहते हैं,
वे अपनी लज्जा के कारण लौट जाएं ।
४. परंतु वे सब जो तुझ को खोजते हैं,
तुझ में हर्षित और आनन्दित हों ।
जो लोग तेरे उद्धार से प्रेम करते हैं,
वे निरंतर यह कहते रहें,
"परमेश्वर महान है ।"
५. मैं पीड़ित और दरिद्र हूँ;
हे मेरे परमेश्वर, शीघ्र मेरी सहायता कर ।
तू ही मेरा सहायक और मुक्तिदाता है;
प्रभु, विलंब न कर ।

वृद्ध मनुष्य की प्रार्थना

७१. हे प्रभु, मैं तेरी शरण में आया हूँ,
मुझे कभी लज्जित न होने देना ।
२. मुझे अपनी धार्मिकता द्वारा मुक्त कर,
मुझे बचा;
अपने कान मेरी ओर कर,
और मेरी सहायता कर ।
३. मेरे लिए आश्रय की चट्टान बन,
और मुझे बचाने के लिए एक दृढ़ गढ़ ।[1]
क्योंकि प्रभु, तू ही मेरी चट्टान और मेरा गढ़ है ।
४. हे मेरे परमेश्वर, दुर्जन के हाथ से
अन्यायी के पंजे और निर्दय पुरुष से
मुझे मुक्त कर ।
५. तू ही मेरी आशा है;

---

[1] पाठांतर, "जिसकी आड़ में मैं निरंतर शरण पा सकूं; जिसको तू ने मेरी रक्षा के लिये ठहराया है ।"

हे स्वामी, हे प्रभु, मेरे युवाकाल से
तू ही मेरा आधार है ।
६. जन्म से मैं ने तेरा सहारा लिया;
वह तू ही था, जिसने मेरी मां के गर्भ से मुझे निकाला था ।

७. मैं बहुत लोगों के लिए एक चमत्कार हूँ;
पर तू ही मेरा दृढ़ आश्रय स्थल है ।
८. मेरा मुंह तेरे यशोगान से भरा है;
तेरी महिमा निरंतर होती रहे ।
९. बुढ़ापे में मुझे मत छोड़;
अब मेरी शक्ति समाप्त हो चुकी है,
मुझे मत त्याग ।
१०. मेरे प्राण की घात में रहनेवाले परस्पर सम्मति करते हैं ।
मेरे शत्रु मेरे विषय में यह बात करते हैं :
११. "परमेश्वर ने उसे त्याग दिया ;
उसका पीछा करो और उसे पकड़ो;
क्योंकि उसको बचानेवाला कोई नहीं है ।"

१२. हे परमेश्वर, मुझसे दूर मत हो;
हे मेरे परमेश्वर, अविलंब मेरी सहायता कर ।
१३. जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे लज्जित हों और नष्ट हो जाएं;
जो मेरी बुराई का प्रयत्न करते हैं,
वे निन्दा और अपमान में गड़ जाएं ।
१४. किंतु मैं निरंतर आशा करता रहूँगा,
और तेरा अधिकाधिक यशोगान करूंगा ।
१५. मैं दिन भर अपने मुंह से तेरी धार्मिकता की,
तेरे उद्धार के कार्यों की,
तेरे असंख्य कार्यों की चर्चा करूंगा ।
१६. अपने स्वामी के सामर्थ्य पूर्ण कार्यों का वर्णन करते हुए

मैं आऊंगा,
प्रभु, मैं केवल तेरी धार्मिकता को स्मरण करूंगा ।

१७. हे परमेश्वर, तू मेरी युवावस्था से मुझे सिखाता रहा है,
अब भी मैं तेरे अद्भुत कार्यों को घोषित करता हूँ ।

१८. अत: बुढ़ापे में, पके बालों की उमर में भी
हे परमेश्वर, मुझे मत त्याग;
जब तक मैं आगामी पीढ़ी को
तेरे भुजबल की घोषणा न करूँ,
मुझे जीवित रहने दे ।

१९. तेरी सामर्थ्य और धार्मिकता,
हे परमेश्वर, आकाश तक व्याप्त है ।
तू ने महान् कार्य किए हैं;
हे परमेश्वर, तेरे समान और कौन ईश्वर है ?

२०. तू ने मुझे कई संकट दिखाए,
पर तू मुझे पुनर्जीवित करेगा,
पृथ्वी के गहरे स्थलों से मुझे फिर उबारेगा ।

२१. तू मेरा सम्मान बढ़ाएगा,
तू मुझे पुन: सांत्वना देगा ।

२२. हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा के साथ
तेरे सत्य की सराहना करूंगा ;
हे इस्राएल के पवित्र परमेश्वर,
मैं सितार के साथ तेरा स्तुतिगान करूंगा ।

२३. जब मैं तेरा स्तुतिगान करूंगा,
तब मेरे ओंठ,
मेरे प्राण जिनका तू ने उद्धार किया है,
जयजयकार करेंगे ।

२४. मैं भी निरंतर तेरी धार्मिकता का पाठ करूंगा,

क्योंकि जो लोग मेरी बुराई का प्रयत्न करते थे,
वे लज्जित और अपमानित हुये हैं ।

धार्मिक राजा का राज्य

सुलेमान का गीत

७२. हे परमेश्वर, राजा को अपना न्याय,
राजपुत्र को अपनी धार्मिकता प्रदान कर
२. कि वह तेरी प्रजा का धार्मिकता से शासन करे,
तेरे पीड़ित लोगों का निष्पक्षता से न्याय करे ।
३. पहाड़ और पहाड़ियाँ धार्मिकता के द्वारा
लोगों को समृद्ध बनाएं ।
४. वह प्रजा के पीड़ित लोगों का न्याय करे;
वह दरिद्र की संतान की रक्षा करे,
और अत्याचारियों का दमन करे ।

५. जब तक सूर्य और चन्द्रमा हैं,
वह पीढ़ी से पीढ़ी बना रहे ।[1]
६. वह ठूठी घास पर होने वाली वर्षा के समान,
भूमि को सींचनेवाली बौछार के सदृश हो !
७. उसके राज्यकाल में धार्मिक फूले-फलें;
जबतक चन्द्रमा न टल जाए, असीम शांति बनी रहे ।

८. वह समुद्र से समुद्र तक,
फरात नदी से पृथ्वी के सीमांतों तक राज्य करे !
९. इथियोपिया देश के निवासी[2] उसके सामने घुटने टेकें,
उसके शत्रु धूल चाटें ।
१०. स्पेन तथा द्वीप-द्वीप के राजा उसे भेंट चढ़ाएं,
अरब और इथियोपिया देश के राजा उपहार लाएं ।
११. सब राजा उसको साष्टांग प्रणाम करें,

[1]मूल में, "वे तुझ से डरते रहें ।" [2]मूल में, "खानाबदोश"

समस्त राष्ट्र उसकी सेवा करें।

१२. वह दुहाई देनेवाले दरिद्र को,
पीड़ित और निस्सहाय व्यक्ति को मुक्त करता है।

१३. वह दुर्बल और दरिद्र पर दया करता है,
वह दरिद्रों के प्राण की रक्षा करता है।

१४. वह दमन और अत्याचार से
उनके प्राण का उद्धार करता है,
उसकी दृष्टि में उनका रक्त अनमोल है.

१५. वह चिरंजीव हो !
अरब का स्वर्ण उसे भेंट किया जाए;
उसके लिए प्रार्थना निरंतर की जाए;
दिन भर उसके लिए आशिष मांगी जाए।

१६. देश में प्रचुर अन्न हो;
पर्वतों के शिखर पर खेत लहलहाए।
उसकी बालें लबानोन के वृक्षों के समान झूमें।
और नगर के निवासी घास के समान खिलें।

१७. उसका नाम सदा बना रहे
जबतक सूर्य है, तब तक उसका वंश राज्य करे।
लोग उसके कारण स्वयं को धन्य मानें,
समस्त राष्ट्र उसको धन्य कहें।

१८. इस्राएल का प्रभु परमेश्वर धन्य है,
उसने ही आश्चर्य पूर्ण कार्य किए हैं।

१९. उसका महिमायुक्त नाम सदा धन्य है।
समस्त पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए !
आमेन और आमेन।

२०. दाऊद बेन यिशय[1] की प्रार्थनाएं समाप्त हुईं।

---

[1]"यिशय का पुत्र दाऊद"

तीसरा खण्ड

दुर्जन की नियति

आसप का गीत

७३. निश्चय, परमेश्वर इस्राएल के लिए,
शुद्ध हृदय वालों के लिए भला है।

२. मेरे पैर उखड़ चुके थे,
मेरे पग फिसलने पर थे।

३. जब मैं ने दुर्जनों का फलना-फूलना देखा,
तब मैं घमण्डी लोगों के प्रति ईर्ष्यालु हो गया।

४. दुर्जनों को मृत्यु में कष्ट नहीं होता,
उनकी देह स्वस्थ है।

५. धार्मिक लोग दुख में हैं पर दुर्जन नहीं,
अन्य मनुष्यों जैसे वे विपत्ति में नहीं पड़ते।

६. अतः अहंकार उनका कण्ठाहार है;
हिंसा उनका ओढ़ना है।

७. उनकी आंखों में चर्बी झलकती है,
उनके हृदय में दुष्कल्पनाएं उमड़ती हैं।

८. वे धार्मिकों का उपहास करते हैं;
वे उनसे दुष्टभाव से बातें करते हैं,
ऊंचे पर बैठकर वे अत्याचार करते हैं।

९. वे स्वर्ग के विरुद्ध अपना मुंह खोलते हैं,
पृथ्वी पर उनकी जीभ गर्व से चलती है।

१०. इसलिए लोग दुर्जनों के पास आकर उनकी प्रशंसा करते हैं
और उनमें कोई त्रुटि नहीं पाते।[१]

---

[१] मूल में अस्पष्ट

११. वे यह कहते हैं, "परमेश्वर कैसे जान सकता है ?
क्या सर्वोच्च प्रभु में ज्ञान है ?"
१२. ये दुर्जन व्यक्ति हैं,
तो भी सरलता से सदा संपत्ति बढ़ाते जाते हैं ।
१३. मैंने व्यर्थ ही अपने हृदय को शुद्ध रखा,
और अपने हाथों को निर्दोषता में धोया ।
१४. फिर दिन भर मैं दंडित
और प्रति भोर को ताड़ित होता रहा ।

१५. यदि मैंने यह कहा होता, "मैं ऐसा बोलूंगा,"
तो हे परमेश्वर,
मैं तेरे लोगों के प्रति विश्वासघात करता ।
१६. जब मैं ने इस भेद पर विचार किया,
तब यह मेरी दृष्टि में कठिन कार्य दिखा;
१७. किंतु जब मैं परमेश्वर के पवित्र स्थान में गया
तब मैंने दुर्जनों का अंत समझ लिया ।
१८. सचमुच तू ने उन्हें फिसलने वाले स्थानों पर रखा है;
तू विनाश के लिए उन्हें गिराता है ।
१९. वे क्षण भर में कैसे उजड़ गए ।
वे आतंक द्वारा पूर्णत: विनष्ट हो गए !
२०. जैसे जागने वाला मनुष्य स्वप्न को महत्व नहीं देता,
वैसे ही प्रभु, तू जागने पर उनके झूठे वैभव को
तुच्छ समझता है ।[1]

२१. जब मेरा मन कड़ुवा हो गया था,
मेरे हृदय में अपार पीड़ा थी ।
२२. मैं मूर्ख और नासमझ था,
तेरे सम्मुख मैं पशुवत था ।

---

[1] मूल में अस्पष्ट

२३. फिर भी मैं निरंतर तेरे साथ रहा हूँ;
तू मेरे दाहिने हाथ को थामे हुए है।
२४. तू अपनी सलाह से मेरा मार्ग-दर्शन करता है;
जीवन के अंत में तू मुझे महिमा में ग्रहण करेगा।
२५. स्वर्ग में मेरा और कौन है ?
तेरे अतिरिक्त पृथ्वी पर
मैं किसी की कामना नहीं करता।
२६. मेरा शरीर और हृदय चाहे हताश हो जाएं,
पर परमेश्वर, तू सदा
मेरे हृदय का बल और मेरा भाग है।
२७. जो तुझसे दूर हैं,
वे मिट जाएंगे;
जो तेरे प्रति निष्ठावान नहीं हैं,
उन सब को तू नष्ट कर देगा।
२८. पर मेरे लिए परमेश्वर की निकटता उत्तम है;
मैं ने प्रभु स्वामी को अपना आश्रय स्थल माना है;
प्रभु, मैं तेरे कार्यों का वर्णन करूँगा।

शत्रुओं के विरुद्ध

आसप का मसकील

७४. हे परमेश्वर, क्यों तू ने हमें सदा के लिए त्याग दिया ?
क्यों तेरी क्रोधाग्नि
तेरे चरागाह की भेड़ों के प्रति भड़क उठी ?
२. स्मरण कर—अपनी मंडली को,
जिसे तू ने प्राचीन काल में मोल लिया था,
जिसे अपनी मीरास का कुल बनाने के लिए मुक्त किया है,
स्मरण कर—सियोन पर्वत को
जहां तू निवास करता है।

३. शत्रु ने पवित्र स्थान को पूर्णत: नष्ट कर दिया है।
उस लगातार होने वाले विनाश की ओर अपने पैर बढ़ा

४. तेरे बैरी तेरे मंदिर में गरजते रहे हैं,
उन्होंने अपने झण्डे ध्वज-चिह्न के लिए गाड़े हैं।
५. उन्होंने ऊपरले प्रवेश द्वार पर कुल्हाड़ी से
लकड़ी की जालियों को तोड़-फोड़ डाला;
६. तत्पश्चात् उसके समस्त नक्काशीदार काठ को
उन्होंने कुल्हाड़ी और हथौड़ों से काट-कूट डाला।
७. उन्होंने पवित्र स्थान में आग लगा दी,
तेरे नाम के निवास स्थान को
भूमिसात कर अशुद्ध कर दिया।
८. उन्होंने अपने हृदय में यह कहा,
"हम इन्हें पूर्णत: पराजित करेंगे।"
उन्होंने देश में
परमेश्वर के समस्त आराधना-गृहों को
जला डाला।

९. हमारे झण्डे हमें नहीं दिखाई देते;
अब कोई नबी नहीं रहा;
हमारे मध्य भविष्य जानने वाला भी नहीं रहा
जो हमें यह बताये—
कि हमारी यह दशा कब तक रहेगी।
१०. हे परमेश्वर,
कब तक बैरी
हमारी निंदा करता रहेगा ?
क्या शत्रु तेरे नाम का तिरस्कार निरंतर करेगा ?
११. तू ने अपना हाथ, दाहिना हाथ
क्यों खींच लिया है ?
तू ने उसे वक्ष में क्यों छिपा लिया है ?

१२. परमेश्वर, तू आदि काल से मेरा राजा है,
तू पृथ्वी के मध्य उद्धार-कार्य करनेवाला ईश्वर है।
१३. तू ने अपनी शक्ति से सागर को विभाजित किया था,
तू ने जल में मगरमच्छों के सिरों को टुकड़े-टुकड़े किया था,
१४. तू ने लिव्यातान जल-पशु के सिरों को कुचला था,
और उसको वन प्राणियों का आहार बनने के लिए दे दिया था।
१५. तू ने चट्टान फोड़ कर झरने और स्रोत बहाए थे,
तू ने सदा बहनेवाली जलधाराओं को भी सुखाया था।

१६. तेरा ही दिन है, और रात भी तेरी है।
तू ने सूर्य और चंद्रमा को स्थित किया है।
१७. तू ने पृथ्वी के सीमांतों को ठहराया है,
तू ने ग्रीष्म और शीत ऋतुएं बनाई है।

१८. हे प्रभु, स्मरण कर,
कि शत्रु तेरी कैसी निन्दा करता है,
मूर्ख तेरे नाम का तिरस्कार करते हैं।
१९. प्रभु, अपने कपोत का प्राण
जंगली पशुओं के पंजे में मत सौंप;
अपने पीड़ित लोगों के जीवन को
सदा के लिए न भुला।

२०. अपने व्यवस्थान की सुधि ले;
क्योंकि देश के अंधेरे स्थान
अत्याचार के घर बन गए हैं।
२१. दमित व्यक्ति को लज्जित न होना पड़े;
पीड़ित और दरिद्र तेरे नाम का यशोगान करें।

२२. हे परमेश्वर, उठ और अपना पक्ष प्रस्तुत कर।
मूर्ख द्वारा निरंतर की जाने वाली निंदा को स्मरण कर।
२३. अपने बैरियों की चिल्लाहट को,

अपने विरोधियों के कोलाहल को मत भूल;
कोलाहल निरंतर उठता जा रहा है ।

परमेश्वर का न्याय

मुख्यवादक के लिए । "नष्ट मत करो" के अनुसार । आसप का गीत । एक भजन

७५. हे परमेश्वर, हम तेरी सराहना करते हैं ।
हम स्तुति करते हैं;
तेरा नाम हमारे निकट है;
लोग तेरे आश्चर्य पूर्ण कार्यों का वर्णन करते हैं ।

२. परमेश्वर कहता है :
निर्धारित समय पर, जिसे मैं ही ठहराऊंगा,
निष्पक्षता से मैं न्याय करूँगा ।
३. जब पृथ्वी और उसके समस्त निवासी डगमगाने लगते हैं,
तब मैं ही पृथ्वी के स्तंभों को स्थिर करता हूँ । सेलाह
४. मैं अहंकारियों से यह कहता हूँ, "अहंकार मत करो,"
और दुर्जनों से, "घमण्ड से अपने सींग मत उठाओ,
५. अपने सींग ऊंचे मत उठाओ,
और गर्दन टेढ़ी कर धृष्ट वचन मत बोलो ।"

६. न पूर्व से, न पश्चिम से,
और न निर्जन प्रदेश से उद्धार संभव है;
७. किंतु परमेश्वर ही न्यायकर्ता है,
वह एक को नीचा करता, तो दूसरे को ऊंचा उठाता है ।
८. प्रभु के हाथ में एक पात्र है,
उफनते अंगूर रस से भरा, संमिश्रित—
वह उसमें से एक घूंट उंडेलेगा,
और पृथ्वी के समस्त दुर्जन उसे निचोड़कर
तलछट तक पी जाएंगे ।

९. मैं सदा आनंद मनाऊंगा,
मैं याकूब के परमेश्वर की स्तुति गाऊंगा ।
१०. मैं समस्त दुर्जनों के निकले हुये सींग काट दूंगा,
किंतु धार्मिकों के सींग ऊंचे किए जाएंगे ।

विजय प्रदान करने वाला और न्याय कर्ता परमेश्वर

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य यंत्रों के साथ, आसप का गीत। एक भजन

७६. परमेश्वर ने यहूदा में स्वयं को प्रकट किया है;
इस्राएल में उसका नाम महान् है ।
२. उनका आवास शालेम में,
उनका धाम सियोन में है ।
३. वहां उसने जलते तीरों को,
ढाल और तलवार को,
युद्ध के शस्त्रों को नष्ट किया था । सेलाह
४. तू तेजोमय है,
*[१]पुरातन पर्वतों से अधिक ऐश्वर्य पूर्ण है ।
५. वीर हृदय स्वयं लुट गए;
वे चिर निद्रा में डूब गए;
सैनिक अपने हाथ चलाने में असमर्थ थे ।
६. हे याकूब के परमेश्वर, तेरी डांट से
अश्व और अश्वारोही
दोनों गहरी नींद में सो गए ।

७. तू भयावह है ।
जब तेरा क्रोध भड़क उठता है
तब तेरे सम्मुख कौन खड़ा हो सकता है ?

---

*[१] अथवा : युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद
पर्वत से उतरते समय तू ऐश्वर्यपूर्ण दिखाई देता है ।

८–९. तू ने स्वर्ग से न्याय-निर्णय सुनाया;
जब परमेश्वर, तू न्याय के निमित्त,
पृथ्वी के समस्त पीड़ितों को बचाने के लिए उठा, सेलाह
पृथ्वी भयभीत हुई और शांत हो गई ।
१०. निश्चय ही मनुष्य के रोष से तेरी सराहना होगी; *
शेष रोष को तू स्वयं धारण करेगा ।
११. मन्नत मानो,
और अपने प्रभु परमेश्वर के लिए उनको पूर्ण करो;
प्रभु के चारों ओर रहने वाले लोग
उस को भेंट चढ़ाएं ।
प्रभु भययोग्य है,
१२. वह सामंतों के दुःसाहस को नष्ट करनेवाला है;
वह पृथ्वी के राजाओं के लिए भयावह है ।

परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का स्मरण सांत्वना देता है

मुख्यवादक के लिए । यदूतून के अनुसार, आसप का गीत

७७. मैं उच्च स्वर में परमेश्वर की दुहाई देता हूँ;
मैं परमेश्वर की दुहाई देता हूँ
कि वह मेरी ओर ध्यान दे ।
२. संकट के दिन मैं स्वामी को खोजता हूँ,
रात भर मेरे हाथ बिना थके
उसकी ओर फैले रहे;
मेरा प्राण धैर्य धारण करने में असमर्थ है ।

---

* अथवा : एदोम के रोष से तू
अपनी सराहना करवाएगा;
और हमात के बचे हुए लोग
तेरा यात्रा पर्व मनाएंगे ।

३. मैं परमेश्वर का स्मरण कर विलाप करता हूँ,
ध्यान करते-करते मेरी आत्मा थक जाती है। सेलाह
४. तू मेरी पलकों को बंद होने से रोकता है;
मैं इतना घबरा गया हूँ कि बोल नहीं पाता हूँ।
५. मैं अतीत के दिनों का,
बीते वर्षों का विचार करता हूँ।
६. मैं रात में अपने संगीत का स्मरण करता हूँ;
मैं अपने हृदय में ध्यान करता हूँ;
मेरी आत्मा परिश्रम से खोज करती है :
७. "क्या स्वामी सदा के लिए मुझे त्याग देगा ?
क्या वह फिर कभी कृपा नहीं करेगा ?
८. क्या उसकी करुणा सदैव के लिये मिट गई ?
क्या उसकी प्रतिज्ञाएं सदा-सर्वदा को समाप्त हो गईं ?
९. क्या परमेश्वर अनुग्रह करना भूल गया ?
क्या उसने अपने क्रोध में
दया-द्वार बन्द कर लिया है ?" सेलाह
१०. मैंने यह कहा, "यही तो मेरा दुःख है,
कि सर्वोच्च प्रभु का दाहिना हाथ, उसकी सामर्थ बदल गई है।"

११. मैं प्रभु के कार्यों का स्मरण करूंगा;
निस्सन्देह मैं अतीत के तेरे अद्भुत कार्य स्मरण करूंगा।
१२. मैं तेरे समस्त कार्यों पर मनन करूंगा;
मैं तेरे अद्भुत कार्यों का ध्यान करूंगा।
१३. हे परमेश्वर, तेरा मार्ग पवित्र है;
परमेश्वर के सदृश और कौन ईश्वर महान् है ?
१४. अद्भुत कार्य करनेवाला परमेश्वर तू ही है;
तू ने ही अपनी सामर्थ्य जातियों पर प्रकट की है।
१५. तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा को,
याकूब और यूसुफ की संतान को मुक्त किया। सेलाह

१६. हे परमेश्वर, जब सागर ने तुझे देखा,
हां, जब सागर ने तुझे देखा,
तब वह डर गया ;
अथाह सागर कांप उठा ।

१७. मेघ जल-वृष्टि करने लगे,
आकाश गरज उठे,
तेरे बाण सर्वत्र चलने लगे ।

१८. तेरे गर्जन का शब्द बवण्डर में सुनाई पड़ा ;
विद्युत से भूमण्डल आलोकित हो उठा ;
पृथ्वी कंपित होकर डोल उठी ।

१९. तेरा मार्ग सागर से,
तेरा पथ महासागर से जाता था ;
पर तेरे पथ चिह्नों का पता नहीं चला !

२०. तू ने रेवड़ के सदृश अपनी प्रजा का
मूसा और हारून के द्वारा नेतृत्व किया था ।

निष्ठाहीन पीढ़ी के प्रति परमेश्वर की निष्ठा

आसप का मसकील

७८. हे मेरे लोगो, मेरी शिक्षा पर कान दो ;
मेरे वचनों पर ध्यान दो ।

२. मैं अपना मुंह दृष्टांत के लिए खोलूंगा ;
मैं प्राचीन काल की पहेलियां बुझाऊंगा,

३. जिन्हें हमने सुना और समझा है,
और हमारे पूर्वजों ने हमें बताया है ।

४. प्रभु की स्तुति और सामर्थ्य,
और उसके महान कार्य,
जो उसने किए,

हम उनके पुत्रों से नहीं छिपाएंगे,
वरन् आगामी पीढ़ी को बताएंगे ।

५. प्रभु ने याकूब में साक्षी स्थापित की है,
और इस्राएल में व्यवस्था नियुक्त की है ।
उसने हमारे पूर्वजों को आज्ञा दी थी
कि वे अपनी संतान को ये बातें सिखाएं,
६. जिससे आगामी पीढ़ी,
भविष्य में उत्पन्न होने वाली संतान भी जान ले
और तत्पर होकर अपने पुत्रों को बताए;
७. जिससे वे परमेश्वर पर आशा रखें;
और परमेश्वर के कार्यों को न भूलें,
किंतु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें;
८. और अपने पूर्वजों जैसे,
हठीली और विद्रोही पीढ़ी न बनें;
ऐसी पीढ़ी जिसका हृदय स्थिर न था,
जिसकी आत्मा परमेश्वर के प्रति सच्ची न थी ।

९. एप्रइम के वंशज धनुष से सशस्त्र होने पर भी
युद्ध के समय भाग गए थे ।
१०. उन्होंने परमेश्वर के व्यवस्थान का पालन नहीं किया
और उसकी व्यवस्था पर चलना अस्वीकार कर दिया ।
११. वे उसके व्यवहार को,
आश्चर्यपूर्ण कर्मों को, जिन्हें उसने संपन्न किए थे, भुला बैठे ।
१२. उनके पूर्वजों के सामने,
मिस्र देश में सोअन की भूमि पर
परमेश्वर ने अद्‌भुत कार्य किए थे ।
१३. परमेश्वर ने सागर को विभाजित कर उन्हें पार कराया,
और जल को ढेर के सदृश खड़ा कर दिया था ।

१४. उसने दिन के समय मेघों से
और रात को अग्नि के प्रकाश द्वारा उनका नेतृत्व किया था।
१५. उसने निर्जन प्रदेश में चट्टानें फोड़कर
मानो अथाह झरनों से
प्रचुर मात्रा में उन्हें पानी पिलाया था।
१६. उसने चट्टान में से जलधाराएं निकालीं
और जल को नदियों जैसा बहाया था।
१७. फिर भी वे परमेश्वर के विरुद्ध पाप-पर-पाप करते रहे,
शुष्क प्रदेश में सर्वोच्च प्रभु का विरोध करते रहे।
१८. उन्होंने अपनी अभिलाषा-पूर्ति के लिये
अपने हृदय में परमेश्वर की परीक्षा की।
१९. वे परमेश्वर के विरुद्ध यह कहने लगे,
"क्या ईश्वर निर्जन प्रदेश में
भोजन की व्यवस्था कर सकता है?
२०. उसने चट्टान को मारा तो जल बहने लगा था;
जल धाराएं उमड़ने लगी थीं;
पर क्या वह रोटी भी दे सकता है?
क्या वह अपने निज लोगों के लिए
मांस का प्रबंध कर सकता है?"

२१. अतः प्रभु यह सुनकर अत्यंत क्रोधित हुआ,
याकूब के प्रति उसकी क्रोधाग्नि भड़क उठी,
इस्राएल के विरुद्ध उसका कोप धधकने लगा।
२२. क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया,
उसकी मुक्तिप्रद शक्ति पर भरोसा नहीं किया।
२३. फिर भी परमेश्वर ने
ऊंचे आकाश-मंडल को आदेश दिया,
उसने स्वर्ग के द्वार खोल दिए,

२४. और खाने के लिए उन पर मान[1] की वर्षा की;
परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया ।
२५. लोगों ने स्वर्गदूतों की रोटी खाई;
परमेश्वर ने उन्हें पेट भर भोजन प्रदान किया ।
२६. उसने आकाश में पुरवइया बहाई,
और अपनी शक्ति से दक्खिनी वायु हांकी ।
२७. उसने उन पर धूलकण के समान मांस की,
और सागर तट के बालू के सदृश
असंख्य पक्षियों की वर्षा की ।
२८. उनके शिविरों के मध्य,
उनके निवासस्थान के चारों ओर पक्षियों को गिराया ।
२९. वे उन्हें खाकर तृप्त हुए;
यों परमेश्वर ने उन्हें
उनकी लालसा के अनुसार भोजन दिया ।

३०. अभी वे अपनी लालसा को तृप्त करने भी न पाए थे,
उनका भोजन अभी उनके मुंह में ही था,
३१. कि परमेश्वर का कोप उनके विरुद्ध भड़क उठा;
उसने उनके बलवान पुरुषों को मार डाला,
इस्राएल के युवकों को उसने बिछा डाला ।

३२. यह होने पर भी वे पाप करते रहे;
उन्होंने परमेश्वर के आश्चर्य पूर्ण कार्यों पर
विश्वास नहीं किया ।
३३. इसलिए उसने उनके दिन निस्सारता में,
और वर्ष आतंक में व्यतीत कराए ।
३४. जब परमेश्वर ने उन्हें मारा,
तब उन्होंने उसकी खोज की,
और पश्चाताप कर उसको ढूंढ़ने लगे ।

---

[1] देखो, निर्गमन १६ : ३१

३५. उन्होंने स्मरण किया कि परमेश्वर ही उनकी चट्टान है,
सर्वोच्च परमेश्वर उनका उद्धारक है ।
३६. किंतु उन्होंने अपने मुंह से उसको धोखा दिया,
वे उससे झूठ बोले;
३७. क्योंकि परमेश्वर के प्रति उनका हृदय स्थिर न था,
और उसके व्यवस्थान के प्रति वे सच्चे न थे ।
३८. परन्तु परमेश्वर दयालू है,
वह विनाश नहीं करता,
वरन् वह अधर्म को ढांपता है ।
उसने बार-बार अपने क्रोध को लौटा लिया,
और अपने रोष को पुन: भड़कने नहीं दिया ।
३९. उसको स्मरण था कि ये तो प्राणी मात्र हैं,
पवन के सदृश हैं, जो जाकर लौटता नहीं ।

४०. कितनी बार उन्होंने निर्जन प्रदेश में
परमेश्वर से विद्रोह किया,
और उसको उजाड़ भूमि में उदास किया ।
४१. वे बार-बार परमेश्वर की परीक्षा करते थे,
और इस्राएल के पवित्र को चिढ़ाते थे ।
४२. उन्हें न उसके भुजबल का स्मरण रहा,
और न उस दिन का,
जब परमेश्वर ने उनको बैरियों से छुड़ाया था;
४३. जब उसने मिस्र देश में अपने चिह्न दिखाए थे,
सोअन की भूमि पर आश्चर्य पूर्ण कर्म किए थे ।
४४. परमेश्वर ने मिस्र की नदियों को रक्त में बदल दिया था,
और मिस्र-निवासी उसका जल पी न सके ।
४५. परमेश्वर ने उनमें डाँस भेजे, जिन्होंने उनको काटा;
उसने मेंढक भेजे, जिन्होंने उनको नष्ट कर दिया ।

४६. उसने उनकी उपज कीड़ों को,
उनके परिश्रम का फल टिड्डियों को दे दिया ।
४७. उसने उनकी अंगूर की बेल ओलों से,
और गूलर के वृक्ष तुषार से नष्ट कर दिए ।
४८. उसने उनके पशुओं पर ओले बरसाए,
भेड़-बकरियों पर बिजली गिराई,
४९. उनपर अपना प्रचंड क्रोध,
रोष, कोप, संकट—
विनष्ट करनेवाले दूतों का दल भेजा ।
५०. उसने अपने क्रोध का द्वार खोल दिया,
और उसके प्राणों को मृत्यु से नहीं बचाया,
वरन् उनका जीवन महामारी को सौंप दिया ।
५१. उसने मिस्र देश में समस्त पहिलौठों को,
हाम के शिविरों में उत्पन्न पौरुष के प्रथम फलों को
नष्ट कर दिया ।

५२. तत्पश्चात् परमेश्वर अपनी प्रजा को,
अपने निज लोगों को भेड़ के सदृश ले चला ।
उसने निर्जन प्रदेश में रेवड़ के समान
उनका मार्ग दर्शन किया ।
५३. वह उन्हें सुरक्षित रूप से ले गया;
अत: वे भयभीत नहीं हुए ।
किंतु उनके शत्रुओं को सागर ने निगल लिया !
५४. तब वह उन्हें अपनी पवित्र भूमि पर,
पर्वत पर ले आया
जिसको उसने अपने भुजबल से जीता था।
५५. उसने उनके सामने से राष्ट्रों को निकाल दिया,
एवं भूमि को बांटकर उनकी पैतृक संपत्ति कर दी;
उसने इस्राएल के कुलों को उनके शिविरों में बसा दिया ।

५६. फिर भी उन्होंने सर्वोच्च परमेश्वर की परीक्षा की,
उससे विद्रोह किया,
और उसकी साक्षियों का पालन नहीं किया ।

५७. उन्होंने उससे मुंह फेर कर
अपने पूर्वजों के समान विश्वासघात किया,
वे धोखा देने वाले धनुष के समान दूसरी ओर मुड़ गए ।

५८. पहाड़ी शिखरों पर वेदियाँ स्थापित कर
उन्होंने परमेश्वर को रुष्ट किया;
उन्होंने मूर्तियां गढ़कर उसको ईर्ष्यालु बनाया ।

५९. परमेश्वर ने यह सुना ।
वह रोष से भर गया ।
उसने इस्राएल को पूर्णत: त्याग दिया ।

६०. उसने शिलोह के अपने निवास स्थान को,
मनुष्यों में स्थित अपने शिविर को छोड़ दिया ।

६१. उसने अपनी मंजूषा को पराधीन,
अपनी सामर्थ्य और महिमा के चिह्न को
बैरी के हाथ कर दिया ।

६२. उसने अपने निज लोगों को तलवार को सौंप दिया;
अपनी मीरास पर ही उसका कोप भड़का ।

६३. उनके युवकों को आग ने भस्म कर दिया,
उनकी युवतियां विवाह के गीत न गा सकीं ।

६४. उनके पुरोहित तलवार से मारे गये,
उनकी विधवाएं शोक गीत न गा सकीं ।

६५. तब स्वामी मानो नींद से जागा,
योद्धा के समान, जो मदिरा के कारण ललकारता है ।

६६. उसने अपने बैरियों को मार कर पीछे हटा दिया;
उन्हें सदा के लिये उसने अपमानित किया ।

६७. उसने यूसुफ का शिविर त्याग दिया;
उसने एप्रइम गोत्र को नहीं चुना;
६८. किंतु यहूदा के कुल को,
सियोन पर्वत को चुना,
जिससे वह प्रेम करता है।
६९. उसने गगन सदृश ऊँचा पवित्र स्थान बनाया,
और पृथ्वी के समान उसको दृढ़ किया;
उसने सदा के लिये उसको स्थापित किया।
७०. उसने अपने सेवक दाऊद को चुना,
और भेड़शाला से उसे निकाल लिया।
७१. मेमनों और भेड़ों की रखवाली करने से
उसे निकाल लिया,
कि वह उसकी प्रजा याकूब का,
उसकी मीरास इस्राएल का मेषपाल बने।
७२. उसने शुद्ध हृदय से उनकी रखवाली की,
और बुद्धिमत्ता[1] से उनका नेतृत्व किया।

यरूशलम का शोक गीत

आसप का गीत

७९. हे परमेश्वर, तेरे अधिकार क्षेत्र में
विधर्मी घुस आए हैं;
उन्होंने तेरे पवित्र भवन को
अपवित्र कर दिया है;
उन्होंने यरूशलम को खंडहर बना दिया है।
२. उन्होंने तेरे सेवकों की लाशों को
आकाश के पक्षियों का आहार बनने के लिये,
तेरे भक्तों का मांस पृथ्वी के पशुओं को दिया है।

---
[1]शब्दश : "अपने हाथ की कुशलता"

३. यरूशलम के चारों ओर
उन्होंने उनका रक्त पानी के समान बहाया है;
उन्हें मिट्टी देने वाला कोई नहीं है ।
४. हम पड़ोसी देशों की निन्दा के पात्र बन गए हैं;
हम चारों ओर कौमों के लिये
उपहास और तिरस्कार के पात्र हैं ।

५. हे प्रभु, कब तक ?
क्या तू निरंतर क्रोध करता रहेगा ?
कब तक तेरी ईर्ष्या
अग्नि जैसी जलती रहेगी ?
६. उन राष्ट्रों पर, जो तुझको नहीं जानते,
उन राज्यों पर, जो तेरा नाम नहीं लेते,
अपना क्रोध उंडेल ।
७. उन्होंने याकूब को निगल लिया है,
उसके निवास स्थान को उजाड़ दिया है ।

८. हमारे पूर्वजों के अधर्म को हमारे विरुद्ध स्मरण न कर;
तेरी दया हमें शीघ्र उपलब्ध हो;
क्योंकि हमारी बहुत दुर्दशा की गई है ।
९. हे हमारे उद्धारक परमेश्वर,
अपने नाम की महिमा के लिए हमारी सहायता कर;
अपने नाम के निमित्त हमें मुक्त कर,
और हमारे पापों को ढांप दे ।
१०. क्यों राष्ट्र यह कहें, "उनका परमेश्वर कहां है ?"
तेरे सेवकों के बहाए गए रक्त का प्रतिशोध
हमारी आंखों के सामने,
राष्ट्रों पर प्रकट किया जाए ।

११. बंदियों की कराह तेरे सन्मुख पहुंचे;

अपनी महान् सामर्थ्य से हमें बचा;
हम मृत्यु का ग्रास बनने को हैं ।

१२. हे स्वामी, जिस निन्दा द्वारा
हमारे पड़ौसियों ने तुझ को निंदित किया है,
उसका सात गुना उनके माथे पर लौटा ।

१३. तब हम—तेरी प्रजा और तेरे चरागाह की भेड़ें—
सदा तेरी सराहना करते रहेंगे ।
हम पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरे यश का वर्णन करेंगे ।

इस्राएली राष्ट्र की पुनः स्थापना के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए । शोशनीम के अनुसार, आसप का साक्षी गीत

८०. हे इस्राएल के मेषपाल, सुन !
रेवड़ के समान यूसुफ का नेतृत्व करने वाले,
हे करूबों पर विराजने वाले, प्रकाशवान हो !

२. एप्रइम, बिन्यामीन और मनश्शे के सम्मुख,
अपनी सामर्थ्य जाग्रत कर,
हमारे उद्धार के हेतु आ ।

३. हे परमेश्वर, हमें पुनः स्थापित कर;
अपने मुख की ज्योति प्रकाशित कर
कि हम बच जाएं ।

४. हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर,
कब तक तू अपनी प्रजा की प्रार्थनाएं
अनसुनी करता रहेगा ?

५. तू ने उसे आंसू की रोटी खिलाई,
और पीने को आंसू ही आंसू दिए ।

६. तू हमें पड़ौसियों के लिये कलह का कारण बनाता है,
हमारे शत्रु हमारा मनमाना उपहास करते हैं ।

७. हे स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर,
हमें पुनः स्थापित कर;
अपने मुख की ज्योति प्रकाशित कर
कि हम बच जाएं !

८. तू मिस्र से अंगूर की एक बेल लाया,
और विजातियों को भगाकर उसे लगा दिया ।
९. तू ने उसके लिए भूमि तैयार की ।
बेल ने जड़ पकड़ ली और देश-भर में फैल गई ।
१०. पर्वत उसकी छाया से
और विशाल देवदार उसकी लताओं से आच्छादित हुए ।
११. उसने भूमध्य सागर तक अपनी शाखाएं
और फरात नदी तक अपनी टहनियाँ फैला ली थीं ।
१२. तब तू ने उसके बाड़े को क्यों गिरा दिया ?
अब राही उस के फल को तोड़ते हैं ।
१३. जंगली सूअर उसे उजाड़ता है,
वन पशु उसे चरते हैं ।

१४. हे स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर,
लौट आ;
स्वर्ग से दृष्टिपात कर;
इस बेल की, जिसको तू ने अपने भुजबल से रोपा था,
१५. इस शाखा की, जिसे तू ने अपने लिये सुदृढ़ किया था,
सुधि ले !
१६. वह आग में भस्म हो गई है ।
वह काट डाली गई है ।
शत्रु तेरे मुख की ताड़ना से नष्ट हो जाएँ ।
१७. पर तेरी दाहिनी ओर के पुरुष पर,
तेरा हाथ रहे ।

उस व्यक्ति पर रहे,
जिसे तू ने अपनी सेवा के लिये सबल किया है।
१८. तब हम तुझ से मुंह न मोड़ेंगे;
हमें जीवन प्रदान कर,
और हम तेरा नाम लेंगे।

१९. हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर,
हमें पुनः स्थापित कर;
अपने मुख की ज्योति प्रकाशित कर,
कि हम बच जाएं।

परमेश्वर की भलाई और इस्राएल का हठ

मुख्यवादक के लिये। गित्तीत के अनुसार, आसप का गीत

८१. उच्च स्वर में परमेश्वर का गीत गाओ।
वह हमारी शक्ति है।
याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो।
२. गीत गाओ,
डफ और सितार के साथ मधुर वीणा बजाओ।
३. नव चंद्र के दिन नरसिंगा बजाओ;
पूर्णिमा को, यात्रा-पर्व मनाओ।
४. यह इस्राएल की संविधि है,
याकूब के परमेश्वर की प्रथा है।
५. जब वह मिस्र देश के विरुद्ध निकला,
तब यूसुफ के कुल में यह साक्षी स्थापित की थी।
मैंने ऐसी भाषा सुनी जिसे मैं नहीं जानता था :
६. "मुझ-प्रभु ने तेरे कंधों को भार-मुक्त कर दिया है;
तेरे हाथ टोकरियों से मुक्त हो गए हैं।
७. तू ने संकट में मुझे पुकारा, और मैं ने तुझे बचाया,

मैंने गर्जन के गुप्त स्थान से तुझे उत्तर दिया;
मैंने मरीबा के झरने पर तुझे परखा। सेलाह

८. हे मेरी प्रजा सुन, मैं तुझे सचेत करता हूँ,
ओ इस्राएल, भला हो कि तू मेरी बात सुन!

९. तेरे मध्य में अन्य जाति के देवता की मूर्ति स्थापित न की जाए;
तू अन्य जाति के ईश्वर की वंदना न करना।

१०. मैं ही तेरा परमेश्वर हूँ,
मैंने ही तुझे मिस्र देश से निकाला था;
अपना मुंह खोल, तो मैं उसे भर दूंगा।

११. "किंतु मेरी प्रजा ने मेरी वाणी नहीं सुनी;
इस्राएल मेरा इच्छुक न था।

१२. अतः मैंने उनके हृदय के हठ पर उन्हें छोड़ दिया
कि वे अपनी सम्मत्ति के अनुसार चलें।

१३. यदि मेरी प्रजा ने मेरी बात सुनी होती,
यदि इस्राएल मेरे मार्ग पर चलता,

१४. तो मैं शीघ्र ही उनके शत्रुओं को दबा देता,
उनके बैरियों के विरुद्ध अपना हाथ उठाता।

१५. प्रभु के बैरी इस्राएल को दण्डवत् करते,
और उसकी नियति सदा बनी रहती।

१६. ओ इस्राएल, मैं तुझे सर्वोत्तम गेहूँ खिलाता,
और चट्टान के मधु से तुझे तृप्त करता।"

पक्षपात पूर्ण न्याय के लिए भर्त्सना

आसप का गीत

८२. परमेश्वर स्वर्ग-सभा[1] में विराजमान हुआ,
ईश-पुत्रों[2] के मध्य वह यह न्याय करता है:

---

[1]शब्दश: ईश्वर की सभा [2]शब्दश: ईश्वर

२. "कब तक तुम अन्याय पूर्ण निर्णय करते रहोगे,
कब तक तुम दुर्जनों का पक्ष लेते रहोगे? सेलाह
३. असहाय और अनाथ का न्याय करो,
पीड़ित और निर्धन को निर्दोष सिद्ध करो।
४. असहाय और दरिद्र को मुक्त करो,
दुर्जन के हाथ से उन्हें छुड़ाओ।"
५. वे जानते नहीं, वे समझते नहीं,
वे अंधकार में भटक रहे हैं;
पृथ्वी के समस्त आधार डगमगाने लगे हैं।
६. मैं कहता हूँ, "तुम ईश्वर-पुत्र हो,
तुम सब सर्वोच्च प्रभु के पुत्र हो!
७. तथापि तुम भी मनुष्य के समान मरोगे,
शासकों के सदृश तुम्हारा भी पतन होगा।"
८. हे परमेश्वर, उठ और पृथ्वी का न्याय कर;
समस्त राष्ट्रों पर तेरा ही अधिकार है!

इस्राएल के शत्रुओं के विनाश के लिए प्रार्थना

एक भजन। आसप का गीत

८३. हे परमेश्वर, अपने को शांत न रख,
तू चुप न रह,
हे परमेश्वर, तू निश्चल न बैठ।
२. तेरे शत्रु गरज रहे हैं;
तेरे निंदकों ने सिर उठाया है।
३. वे तेरी प्रजा के विरुद्ध षड़यंत्र रच रहे हैं;
उन्होंने तेरे शरणागतों के प्रति परस्पर सम्मति की है।
४. वे यह कहते हैं, "आओ, हम इन्हें मिटा डालें;
कि वे एक राष्ट्र के रूप में जीवित न रहें।
जिससे इस्राएल राष्ट्र का नाम सदा के लिए विस्मृत हो जाए।"

५. वे एक हृदय होकर सम्मति कर रहे हैं;
उन्होंने तेरे विरुद्ध संधि की है--
६. एदोम के शिविर और इश्माएलियों ने,
मोआबी और हग्रियों ने,
७. गवाली, अम्मोनी और अमालेकी ने,
सोर निवासियों सहित पलिस्ती जाति ने।
८. असीरिया राज्य भी उनके साथ मिल गया है;
वे लोटवंशियों के लिए दाहिना हाथ बन गए हैं। सेलाह

९. उनके साथ मिद्यानियों जैसा व्यवहार कर;
जैसा तू ने किशोन नदी पर
सीसरा और यबीन के साथ किया था।
१०. वे एनदोर में नष्ट किए गए थे,
वे भूमि की गंदगी बन गए थे।
११. उनके शासकों को ओरेब एवं जएब के समान,
उनके समस्त राजपुत्रों को जेबह और सलमूना के सदृश कर दे,
१२. जिन्होंने कहा था, "आओ, परमेश्वर की चराइयों पर
अपना अधिकार कर लें।"

१३. हे मेरे परमेश्वर, उन्हें बवंडर की धूल के सदृश,
पवन के समक्ष भूसे के समान बना दे।
१४. जैसे आग जंगल को भस्म कर देती है,
जैसे ज्वाला पर्वतों को जला डालती है,
१५. वैसे ही तू अपनी आंधी से उनका पीछा कर,
अपने तूफान से उन्हें भयभीत कर।
१६. हे प्रभु, उनका मुख लज्जा से भर दे,
कि वे तेरे नाम को ढूंढ़े।
१७. सदा-सर्वदा के लिये उन्हें लज्जित और भयभीत कर दे,
वे अपमानित होकर मर-मिटें।

१८. वे जान लें कि तू ही
जिसका नाम प्रभु है,
समस्त पृथ्वी पर सर्वोच्च है ।

प्रभु-गृह की चाह

मुख्यवादक के लिये : गित्तीत के अनुसार, कोरह वंशियों का गीत

८४. हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु,
तेरा निवास स्थान कितना मनोहर है !
२. प्रभु के आंगनों के लिये
मेरा प्राण इच्छुक है, मूर्छित है,
मेरा हृदय, मेरा शरीर
जीवंत परमेश्वर का जय जयकार करता है ।

३. हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु,
मेरे राजा, मेरे परमेश्वर,
गौरैया ने भी बसेरा पा लिया;
अबाबील ने तेरी वेदियों पर घोसला बनाया;
वहां वह अपने बच्चे रखती है ।

४. धन्य हैं, तेरे भवन में रहनेवाले;
वे तेरी स्तुति निरंतर करते हैं । सेलाह
५. धन्य हैं वे मनुष्य,
जिनकी शक्ति तू है,
जिनके हृदय में
सियोन को जानेवाला राजमार्ग अंकित है ।[1]

---

[1] शब्दश: "जिनके हृदय में राजमार्ग है ।"

६. जब वे शुष्क प्रदेश[१] से होकर जाते हैं,
तब उसे हराभरा बना देते हैं,
शरत्कालीन वर्षा भी
आशिषों से उसे विभूषित करती है ।
७. वे नये उत्साह से बढ़ते जाते हैं;
परमेश्वर उन्हें सियोन में दर्शन देगा ।

८. हे प्रभु, स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर,
मेरी प्रार्थना सुन;
हे याकूब के परमेश्वर,
मेरी बात पर कान दे । सेलाह
९. हे परमेश्वर,
हमारी ढाल को देख;
अपने अभिषिक्त राजा के मुख पर दृष्टि डाल !

१०. तेरे आंगनों में एक दिन रहना
अन्यत्र हजार दिन रहने से श्रेष्ठ है ।
दुष्टता के शिविर में
निवास करने की अपेक्षा
अपने परमेश्वर के भवन में द्वारपाल होना प्रिय है ।
११. प्रभु परमेश्वर,
सूर्य और ढाल है,
वह अनुग्रह और महिमा प्रदान करता है ।
जो सिद्ध मार्ग पर चलते हैं,
प्रभु, उनसे भली वस्तुएं नहीं रोकता ।
१२. हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु !
धन्य है वह मनुष्य,
जो तुझ पर भरोसा करता है !

---

[१] शब्दशः "बाका की घाटी"

परमेश्वर की दया-प्राप्ति के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए : कोरह वंशियों का गीत

८५. हे प्रभु, तू अपने देश से प्रसन्न था;
तू ने याकूब की समृद्धि
उसे पुन: प्रदान की थी।
२. तू ने अपनी प्रजा के अधर्म क्षमा किए थे;
तू ने उसके समस्त पापों को ढांपा था। सेलाह
३. तू ने अपने क्रोध का शमन किया था;
तू ने अपनी क्रोधाग्नि शांत की थी।

४. हे हमारे उद्धारक परमेश्वर,
हमें पुन: समृद्ध कर,
अपना रोष हम से दूर रख।
५. क्या तू सदा ही हम से नाराज रहेगा?
क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी
अपना क्रोध बनाए रखेगा?
६. क्या तू हमें पुनर्जीवित नहीं करेगा
जिससे तेरी प्रजा तुझ में आनन्दित हो?
७. हे प्रभु, हमें अपनी करुणा के दर्शन करा;
अपना उद्धार हमें प्रदान कर।
८. मुझे सुनने दो,
कि प्रभु परमेश्वर क्या कहता है?
वह अपनी प्रजा से,
अपने भक्तों से,
और उनसे, जो हृदय से उसकी ओर लौटते हैं,
शांतिप्रद वचन बोलेगा।
९. निश्चय प्रभु का उद्धार उन लोगों के समीप है
जो उससे डरते हैं;
महिमा हमारे देश में निवास करेगी।

१०. करुणा और सच्चाई आपस में मिलेंगी,
धार्मिकता एवं शांति परस्पर चुंबन करेंगी ।
११. धरती से सच्चाई अंकुरित होगी,
और स्वर्ग से धार्मिकता दृष्टिपात करेगी ।
१२. सचमुच प्रभु वरदान देगा,
और हमारी धरती अपनी उपज प्रदान करेगी ।
१३. धार्मिकता उसके आगे-आगे चलेगी ।
और उसके लिए मार्ग बनाएगी ।

परमेश्वर की सतत कृपा के लिए प्रार्थना

दाऊद की प्रार्थना

८६. हे प्रभु, मेरी बात पर कान दे
और मुझे उत्तर दे;
क्योंकि मैं पीड़ित और दरिद्र हूँ ।
२. मेरे प्राण की रक्षा कर;
क्योंकि मैं तेरा भक्त हूँ ।
अपने सेवकों को,
तुझ पर भरोसा करने वालों को बचा ।
३. तू ही मेरा परमेश्वर है;
हे प्रभु, मुझ पर कृपा कर;
क्योंकि मैं दिन भर तुझ को पुकारता हूँ ।
४. हे स्वामी, अपने सेवक के प्राण को आनन्दित कर;
क्योंकि मैं तेरा ही ध्यान करता हूँ ।
५. हे स्वामी, तू भला और क्षमाशील है,
तेरी दुहाई देने वालों के लिए,
तू करुणा सागर है ।
६. हे प्रभु, मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे;
मेरी विनती की पुकार को सुन ।

७. मैं अपने संकट के दिन तुझको पुकारता हूँ;
क्योंकि तू मुझे उत्तर देता है।

८. हे स्वामी, देवताओं में न तुझ जैसा कोई है,
और न तेरे जैसे कार्य किसी और के हैं।
९. हे स्वामी, समस्त राष्ट्र,
जिन्हें तू ने रचा है,
तेरे सम्मुख आकर दण्डवत् करेंगे;
वे तेरे नाम की महिमा करेंगे।
१०. तू महान है,
तू अद्भुत कार्यों का कर्ता है;
तू ही एकमात्र परमेश्वर है।

११. हे प्रभु, मुझे अपना मार्ग दिखा,
कि मैं तेरी सच्चाई पर चलूं;
मेरे हृदय को एकाग्रचित् बना
कि वह तेरे नाम से डरे।
१२. हे मेरे स्वामी, मेरे परमेश्वर,
मैं सम्पूर्ण हृदय से तेरा गुणगान करूंगा;
मैं तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूँगा।
१३. तू मुझ पर अत्याधिक करुणा करता है।
तू ने मृतक लोक के गर्त से मेरे प्राण को मुक्त किया है।

१४. हे परमेश्वर, धृष्ट लोग मेरे विरुद्ध खड़े हैं;
आतंककारियों का दल मेरे प्राण के पीछे पड़ा है;
वे तुझ को अपने सम्मुख नहीं रखते हैं।
१५. किंतु तू, हे स्वामी, दयालु, कृपालु,
विलंब से क्रोध करनेवाला,
करुणा और सच्चाई से परिपूर्ण परमेश्वर है।

१६. मेरी ओर उन्मुख हो,
मुझ पर कृपा कर,
अपने सेवक को अपनी सामर्थ्य प्रदान कर;
अपनी सेविका के पुत्र को बचा।
१७. अपनी भलाई का चिह्न प्रकट कर,
कि मेरे बैरी उसे देख कर लज्जित हों;
हे प्रभु, तू ही ने मेरी सहायता की है,
मुझे सांत्वना प्रदान की है।

यरूशलम नगर में निवास करनेवालों का विशेषाधिकार

कोरह वंशियों का गीत : एक भजन

८७. यरूशलम नगर की नींव
पवित्र पर्वत पर रखी गई है;
२. प्रभु याकूब के समस्त निवास स्थानों से अधिक
सियोन के द्वारों से प्रेम करता है।
३. ओ परमेश्वर के नगर,
तेरे विषय में प्रभु ने
ये महिमायुक्त बातें कही हैं : सेलाह
४. जो राष्ट्र मुझे जानते हैं, मैं उनमें
मिस्र और बेबीलोन का उल्लेख करता हूँ;
पलिस्ती और इथियोपिया और सूर को देखो—
"यह वहां उत्पन्न हुआ था।"
५. अतः सियोन के विषय में यह कहा जाएगा,
"यह अथवा वह उसमें उत्पन्न हुआ था।"
स्वयं सर्वोच्च प्रभु उसे स्थापित करेगा।
६. प्रभु जातियों के विषय में पुस्तक में यह लिखेगा,
"यह वहां उत्पन्न हुआ था।" सेलाह
७. गायक और नर्तक दोनों यह कहते हैं,
"मेरे समस्त प्रेरणा-स्रोत तुझ में हैं।"

मृत्युपाश से मुक्त होने के लिए प्रार्थना

एक भजन । कोरह वंशियों का गीत । मुख्यवादक के लिये, महलत अन्नोत के अनुसार । एजरावंशी हेमन का मसकील

८८. हे प्रभु, मेरे उद्धारक परमेश्वर,
मैं तेरे समक्ष दिन-रात दुहाई देता हूँ ।
२. मेरी प्रार्थना तेरे संमुख पहुंचे;
तू मेरी विलाप-ध्वनि पर कान दे ।
३. मेरा प्राण संकटों से भर गया है;
मेरा जीव मृतक-लोक के निकट पहुंच रहा है ।
४. मैं कबर में जाने वालों में गिना गया हूँ;
मैं शक्तिहीन पुरुष के समान हूँ,
५. मैं मृतकों में भी परित्यक्त जैसा हूँ,
कबर में पड़े उन वध किए हुओं के समान हूँ,
जिनको तू कभी स्मरण नहीं करता,
जिनके सिर से तेरा हाथ उठ गया है ।
६. तू ने मुझे कबर के गर्त में
अंधकारमय, गहरे स्थान में डाल दिया है ।
७. तेरे क्रोध ने मुझे दबा लिया है;
अपनी समस्त लहरों से
तू मुझे पीड़ित कर रहा है । सेलाह
८. तू ने मेरे परिचितों को मुझ से दूर कर दिया है,
उनके लिए मुझे घृणा का पात्र बना दिया है ।
मैं बंदी हूँ, और भाग नहीं सकता;
९. पीड़ा के कारण मेरी आंखें धुंधली पड़ रही हैं ।
हे प्रभु, मैं तुझको प्रतिदिन पुकारता हूँ,
अपने हाथ तेरी ओर फैलाता हूँ ।
१०. क्या तू मृतकों के लिये आश्चर्यपूर्ण कर्म करता है ?
क्या मुर्दे उठ कर तेरी स्तुति करते हैं ? सेलाह

११. क्या कबर में तेरी करुणा का,
विनाश लोक में तेरी सच्चाई का
वर्णन हो सकता है ?
१२. क्या अंधकार में तेरे आश्चर्यपूर्ण कर्मों को
विस्मृति के गर्भ में तेरी धार्मिकता को
प्रकट किया जा सकता है ?

१३. प्रभु मैं तेरी दुहाई देता हूँ;
प्रात: मेरी प्रार्थना तेरे समक्ष पहुँचती है ।
१४. हे प्रभु, तू क्यों मुझे त्याग रहा है ?
क्यों तू अपना मुख मुझसे छिपा रहा है ?

१५. मैं पीड़ित हूँ और बचपन से ही रोगी हूँ;
मैं मृत्यु के निकट हूँ;
मैं तेरा आतंक सहता हूँ;
मैं निस्सहाय हूँ ।
१६. तेरी क्रोध की लपटों ने मुझे घेर लिया है,
तेरा आतंक मुझे नष्ट कर रहा है;
१७. वे जल-प्रवाह के समान मुझे निरंतर घेरे हुए हैं;
उन्होंने मिलकर मुझे घेर लिया है ।
१८. तू ने मेरे प्रिय मित्र और साथी को
मुझसे दूर कर दिया है;
अब अंधकार ही मेरा साथी है ।

दाऊद के साथ परमेश्वर का व्यवस्थान

एजरा वंशी एतान का मसकील

८९. प्रभु, मैं तेरी करुणा के गीत गाता रहूँगा;
मैं अपने मुंह से तेरी सच्चाई
पीढ़ी से पीढ़ी उद्घोषित करता रहूँगा ।

२. मैं यह जानता हूँ, "तेरी करुणा
सदा-सर्वदा के लिए स्थित है;
तेरी सच्चाई आकाश के सदृश स्थायी है :
३. तू ने यह कहा है, "मैं ने अपने मनोनीत राजा के साथ
व्यवस्थान स्थापित किया है,
मैं ने अपने सेवक दाऊद से यह शपथ खाई है :
४. कि मैं दाऊद के वंश को युग-युगांत स्थिर रखूंगा,
उसके सिंहासन को पीढ़ी से पीढ़ी बनाए रखूंगा ।" **सेलाह**

५. हे प्रभु, स्वर्ग तेरे आश्चर्यपूर्ण कर्मों का,
पवित्र संतों की सभा में
तेरी सच्चाई का, गुणगान करेंगे ।
६. आकाश-मण्डल में प्रभु के तुल्य कौन है ?
देवताओं में कौन प्रभु के समान हो सकता है ?
७. परमेश्वर पवित्र संतों की सभा में भयप्रद है,
वह अपने चारों ओर रहनेवालों में
महान और भयावह है ।
८. हे प्रभु, स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर,
तेरे जैसा और कौन शक्तिमान है ?
हे प्रभु, तेरे चारों ओर तेरी सच्चाई है ।
९. तू समुद्र के उत्पात पर शासन करता है;
उसकी लहरें उठने पर तू उन्हें शांत करता है ।
१०. तू ने रहब को लाश के समान कुचल डाला था,
अपने शत्रुओं को अपने भुजबल से छिन्न-भिन्न किया था ।
११. आकाश तेरा है,
पृथ्वी भी तेरी है;
संसार और उसकी परिपूर्णता को तू ने ही स्थापित किया है ।
१२. तू ने ही उत्तर और दक्षिण बनाए हैं;
ताबोर एवं हेर्मोन पर्वत तेरे नाम का जयजयकार करते हैं ।

१३. तेरी भुजा बलवान है;
तेरा हाथ शक्तिसंपन्न है;
तेरा दाहिना हाथ प्रबल है ।
१४. धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के मूल हैं;
करुणा और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती हैं ।
१५. धन्य हैं वे, जो पर्व के उल्लास को जानते हैं ।
जो, हे प्रभु, तेरे मुख की ज्योति में चलते हैं;
१६. जो तेरे नाम से निरंतर आनन्दित होते हैं,
और तेरी धार्मिकता से उन्नत हो जाते हैं ।
१७. तू ही उनकी शक्ति की शोभा है;
तेरी कृपा से हमारा मस्तक ऊंचा होता है ।
१८. हमारी ढाल प्रभु की है;
हमारा राजा 'इस्राएल के पवित्र' प्रभु का है ।

१९. तू ने पूर्व काल में अपने भक्त से दर्शन में यह कहा था,
"मैंने शक्तिशाली पुरुष के सिर पर मुकुट रखा है;
मैंने प्रजा में से एक पुरुष को चुना
और उसको उन्नत किया है ।
२०. मैंने अपने सेवक दाऊद को ढूंढ़ लिया है;
पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है;
२१. अतः मेरा हाथ उस पर स्थित रहेगा,
मेरी भुजा उसे शक्तिवान बनाएगी ।
२२. शत्रु उसे पराजित न कर सकेगा,
और न कुटिल व्यक्ति उसे पीड़ा पहुँचाएंगे ।
२३. मैं उसके संमुख ही उसके बैरियों को नष्ट करूंगा;
मैं उससे घृणा करनेवालों का नाश कर दूंगा ।
२४. मेरी सच्चाई और करुणा उसके साथ रहेंगी;
मेरे नाम से उसका मस्तक ऊंचा होगा ।

२५. मैं उसके अधिकार-क्षेत्र को भूमध्य सागर तक,
उसके भुजबल को फरात नदी तक स्थित रखूंगा ।

२६. वह मुझे पुकार कर कहेगा,
"तू ही मेरा पिता,
मेरा परमेश्वर, मेरे उद्धार की चट्टान है ।"

२७. मैं उसे पहलौठा पुत्र,
पृथ्वी के राजाओं में सर्वोच्च बनाऊंगा ।

२८. मैं उसके प्रति सदा करुणा करता रहूँगा,
और मेरा व्यवस्थान उसके लिए अटल रहेगा ।

२९. मैं उसके वंश को युगांत तक
उसके सिंहासन को स्वर्ग के दिन के समान
स्थायी बनाए रखूंगा ।

३०. यदि उसके पुत्र मेरी व्यवस्था को त्याग देंगे,
और मेरे न्याय-सिद्धान्त के अनुसार नहीं चलेंगे;

३१. यदि वे मेरी संविधि को भंग करेंगे
और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे,

३२. तो मैं छड़ी से उनके अपराधों की
और कोड़ों से उनके अधर्म की सुध लूंगा ।

३३. परंतु मैं उस पर से अपनी करुणा नहीं हटाऊंगा,
और न अपनी सच्चाई को झूठा बनने दूंगा ।

३४. न मैं अपना व्यवस्थान भंग करूँगा,
और न अपने मुंह से निकले हुए शब्दों को बदलूंगा ।

३५. मैं ने सदा-सर्वदा के लिए
अपनी पवित्रता की शपथ खाई है;
मैं दाऊद के प्रति झूठा नहीं बनूंगा ।

३६. उसका वंश सदा चलता रहेगा,
उसका सिंहासन मेरे सामने सूर्य जैसा चमकता रहेगा ।

३७. वह चंद्रमा के समान सदा के लिए स्थित होगा;
यह साक्षी आकाश में स्थिर है ।" सेलाह

३८. प्रभु, अब तू ने उसे त्याग दिया,
तू ने उसको अस्वीकार कर दिया;
तू अपने अभिषिक्त राजा से अति क्रुद्ध है।
३९. तू ने अपने सेवक के साथ
अपने व्यवस्थान को त्याग दिया;
तू ने उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर
अशुद्ध कर दिया।
४०. तू ने उसकी समस्त रक्षा-चौकियाँ गिरा दीं;
उसके गढ़ों को खंडहर बना दिया।
४१. मार्ग से जाने वाले उसे लूटते हैं;
वह पड़ौसियों की निन्दा का पात्र बन गया।
४२. तू ने उसके बैरियों का भुजबल बढ़ाया है,
उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है।
४३. निस्सन्देह तू ने उसकी तलवार की धार कुंद कर दी,
और युद्ध में उसको टिकने नहीं दिया।
४४. तू ने उसका राजदण्ड उसके हाथ से छीन लिया;
और उसका सिंहासन भूमि पर गिरा दिया।
४५. तू ने उसके यौवन के दिन घटा दिए,
और उसे पराजय की लज्जा से गड़ जाने दिया। सेलाह

४६. हे प्रभु, कब तक?
क्या तू सदा स्वयं को छिपाए रखेगा?
कब तक तेरा क्रोध आग जैसा जलता रहेगा?
४७. हे स्वामी, स्मरण कर,
जीवन-काल कितना अल्प है;
तू ने सब मनुष्यों को नश्वर उत्पन्न किया है।
४८. ऐसा कौन मनुष्य है, जो सदा जीवित रहे,
और मृत्यु को न देखे?
कौन मनुष्य

मृतकलोक के हाथ से
अपने प्राण छुड़ा सकता है ? सेलाह

४९. हे स्वामी, कहां है तेरी प्राचीनकाल की करुणा,
जिसकी शपथ तू ने अपने सेवक दाऊद से
सच्चाई पूर्वक खाई थी ?

५०. हे स्वामी, अपने सेवकों की निन्दा स्मरण कर;
मैं कैसे अपने हृदय में लोगों का अपमान सहता हूँ।

५१. हे प्रभु, तेरे शत्रुओं ने मेरी निन्दा की है;
उन्होंने तेरे अभिषिक्त राजा का
पग-पग पर अपमान किया है।

५२. प्रभु युग-युगांत धन्य है।
आमेन और आमेन।

चौथा खण्ड

परमेश्वर शाश्वत् है, पर मनुष्य क्षण-भंगुर

परमेश्वर के प्रिय जन मूसा की प्रार्थना

९०. हे स्वामी, तू पीढ़ी से पीढ़ी
हमारे लिए आश्रय-स्थल बना हुआ है।

२. पर्वतों के उत्पन्न होने के पहिले,
तेरे द्वारा पृथ्वी और संसार की सृष्टि होने के पूर्व,
युग-युगांत से तू ही परमेश्वर है।

३. तू मनुष्य को मिट्टी में लौटा देता है;
तू यह कहता है, "ओ मानव-पुत्र, लौट जा!"

४. तेरी दृष्टि में
हजार वर्ष भी बीते कल के समान हैं,
वे रात के एक पहर के सदृश हैं।

५. तू मनुष्यों को बहा ले जाता है;
वे मानों स्वप्न हैं,
वे घास के सदृश हैं जो प्रातःकाल लहलहाती है :

६. वह प्रातःकाल फूलती और लहलहाती है,
किंतु संध्या को मुर्झाकर सूख जाती है।

७. हम तेरे क्रोध से भस्म हो गए हैं;
तेरे रोष से हम भयभीत हैं।

८. तू ने अपने सम्मुख हमारे अधर्म के कार्यों को,
अपनी मुख की ज्योति में हमारे गुप्त पापों को रखा है।

९. तेरे क्रोध में हमारे दिन कटते हैं;
हम अपने जीवन के वर्षों को आह भरते हुए बिताते हैं।

१०. हमारी आयु के वर्ष सत्तर होते हैं;
यदि वे बल के कारण अस्सी भी हो जाएं,
तो भी उनकी अवधि दुख और कष्ट में बीतती है।
वे अविलंब व्यतीत हो जाते हैं;
और हमारे प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं।

११. तेरे कितने भक्त
तेरे क्रोध की शक्ति को जान सकते हैं;
तेरे रोष को कौन अनुभव कर सकता है ?
१२. अतः प्रभु, हमें सिखा कि हमारी आयु के दिन कितने कम हैं;
और यों हम बुद्धिमत्ता पूर्ण मन प्राप्त करें।

१३. हे प्रभु, लौट आ !
कब तक ?
तू अपने सेवकों पर दया कर।
१४. तू प्रातःकाल अपनी करुणा से हमें तृप्त कर,
जिससे हम जीवन भर जयजयकार करें, और आनन्द मनाएं।
१५. जितने दिन तू ने हमें पीड़ित किया,
जितने वर्ष हमने दुख देखा,
उतने ही समय तक हमें आनन्दित कर।
१६. तेरे कार्य तेरे सेवकों पर,
तेरा प्रताप उनकी संतान पर प्रकट हो !
१७. हमारे परमेश्वर, स्वामी की कृपा हम पर हो;
जो कार्य हम करते हैं, उन्हें सफल कर।
निश्चय प्रभु, तू हमारे कार्यों को सफल कर।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारी रक्षा करता है

९१. ओ सर्वोच्च प्रभु के आश्रय में रहनेवाले,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की छाया में निवास करने वाले,

२. प्रभु से यह कह, "तू मेरा शरण स्थल और गढ़ है,
तू मेरा परमेश्वर है, तुझ पर मैं भरोसा करता हूँ।"
३. वह तुझे बहेलिए के फंदे से,
घातक महामारी से छुड़ाएगा;
४. वह तुझे अपने पंखों से घेर लेगा,
तू उसके चरणों में शरण पाएगा;
उसकी सच्चाई ही ढाल और झिलम है।
५. तू रात के आतंक से,
और दिन में चलनेवाले तीर से,
६. अंधकार में फैलने वाली महामारी से,
और दोपहर में विनाश करनेवाले भयंकर रोग से
भयभीत न होगा।

७. तेरे निकट हजार लोग,
तेरी दाहिनी ओर लाख लोग गिरते हों,
पर महामारी तेरे पास नहीं आएगी।
८. तू केवल अपने नेत्रों से दृष्टि करेगा,
तू दुर्जनों के प्रतिफल को देखेगा।
९. तूने प्रभु को अपना शरण स्थल माना है।[1]
सर्वोच्च प्रभु तेरा धाम है,
१०. इसलिये बुराई तेरे पास पहुंच नहीं सकेगी,
महा विपत्ति तेरे शिविर के निकट आने न पाएगी।

११. तेरे समस्त मार्गों में तेरी रक्षा हेतु,
प्रभु अपने दूतों को आज्ञा देगा।
१२. वे तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे,
जिससे तेरे चरणों को पत्थर से ठेस न लगे।
१३. तू सिंह और सांप को कुचलेगा,
तू युवा सिंह और अजगर को पैर-तले रौंदेगा।

---

[1]अथवा, "हे प्रभु, तू मेरा शरण-स्थल है।"

१४. प्रभु कहता है, 'वह मुझ से प्रेम करता है,
अतः मैं उसको छुड़ाऊंगा;
वह मेरे नाम को जानता है,
इसलिए मैं उसकी रक्षा करूंगा।
१५. जब वह मुझे पुकारेगा,
मैं उसे उत्तर दूंगा;
संकट में मैं उसके साथ रहूँगा;
मैं उसे मुक्त करूँगा
और उसे महिमान्वित करूँगा।
१६. मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूँगा,
और उसे अपने उद्धार का दर्शन कराऊँगा।'

परमेश्वर की भलाई के लिए स्तुतिगान

गीत : विश्राम दिवस के लिए एक भजन

९२. हे सर्वोच्च प्रभु !
भला है तेरी स्तुति करना;
भला है तेरे नाम का गुणगान करना;
२. प्रातः तेरी करुणा,
तथा रात में तेरी सच्चाई घोषित करना,
३. दस तार के वाद्य पर,
वीणा पर,
सितार के साथ राग के अनुसार।
४. हे प्रभु, तूने अपने कार्यों से मुझे आनन्दित किया है;
मैं तेरे कार्यों का जयजयकार करूँगा
जो तूने मेरे लिये किये हैं।

५. हे प्रभु, तेरे कार्य कितने महान् हैं।
तेरे विचार कितने गहन-गंभीर हैं !

६. नासमझ यह नहीं जानता
और न मूर्ख यह समझता है
७. कि यद्यपि दुर्जन घास के सदृश हरे भरे रहते हैं,
समस्त कुकर्मी फलते-फूलते हैं,
तो भी वे सदा-सर्वदा के लिए विनष्ट हो जाएंगे,
८. किंतु प्रभु, तू युग-युगांत उन्नत है।
९. प्रभु, तेरे शत्रु,
हां, तेरे शत्रु मिट जाएंगे;
समस्त कुकर्मी छिन्न-भिन्न हो जाएंगे।

१०. तू ने जंगली सांड के सींग के सदृश
मेरा सिर ऊंचा किया है।
तू ने मुझपर ताजा तेल उंडेला है।
११. मेरी आंखों ने अपने घातकों का पतन देखा,
मेरे कानों ने उन कुकर्मियों के विनाश को सुना,
जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए थे।

१२. धार्मिक व्यक्ति खजूर वृक्ष के समान फलते-फूलते हैं;
वे लबानोन प्रदेश के देवदार-जैसे बढ़ते हैं।
१३. वे प्रभु के गृह में रोपे गए हैं;
वे हमारे परमेश्वर के आंगनों में फलते-फूलते हैं।
१४. वे वृद्धावस्था में भी फलते हैं;
वे सदा रसमय और हरे-भरे रहते हैं,
१५. जिससे वे यह घोषित कर सकें
कि प्रभु सच्चा है;
वह हमारी चट्टान है;
उसमें लेशमात्र भी अधार्मिकता नहीं है।

प्रभु का प्रताप

९३. प्रभु राज्य करता है,
वह प्रताप से विभूषित है ।
प्रभु विभूषित है,
वह शक्ति का कटिबंध बांधे हुए है ।
निश्चय पृथ्वी की नींव दृढ़ है,
वह विचलित न होगी ।
२. प्रभु, तेरा सिंहासन अनादि काल से स्थिर है;
तू युग-युगांत से है ।
३. सरिताएं उमड़ रही हैं;
उनका घोर रव उमड़ रहा है;
सरिताओं का गर्जन उमड़ रहा है ।
४. महासागर की प्रचंड लहरों से अधिक प्रचंड
ऊंचे पर विराजमान
प्रभु शक्तिशाली है ।
५. प्रभु, तेरी साक्षी अति विश्वसनीय हैं;
हे प्रभु, तेरे भवन को सदा-सर्वदा
पवित्रता ही शोभा देती है ।

प्रतिशोध की प्रार्थना

९४. हे प्रभु, परमेश्वर,
हे प्रतिशोधी परमेश्वर,
प्रकाशवान हो !
२. हे पृथ्वी के न्यायकर्ता उठ !
अहंकारियों को प्रतिफल दे !
३. हे प्रभु, दुर्जन कब तक,
दुर्जन कब तक आनन्दित होते रहेंगे ?

४. वे निरन्तर धृष्ट वचन बोलते हैं;
समस्त कुकर्मी डींग मारते हैं।
५. वे तेरे निज लोगों को कुचलते हैं;
तेरी मीरास को पीड़ित करते हैं।
६. वे परदेशी और विधवा की हत्या करते हैं,
वे पितृहीन बच्चों को मार डालते हैं;
७. वे यह कहते हैं, "प्रभु नहीं देखता है;
याकूब का परमेश्वर नहीं समझता है।"
८. अरे नासमझ लोगो, तुम विचार करो;
अरे मूर्खो, तुम कब समझ से काम लोगे ?
९. क्या कान को बनानेवाला स्वयं नहीं सुनता ?
अथवा आंख का रचयिता स्वयं नहीं देखता ?
१०. क्या राष्ट्रों को ताड़ित करनेवाला प्रभु
उन्हें ताड़ित न करेगा ?
जो प्रभु, मनुष्यों को ज्ञान की बातें सिखाता है,
११. वह मनुष्यों के विचारों को जानता है;
वह यह भी जानता है कि मनुष्य श्वास मात्र हैं।

१२. धन्य है वह मनुष्य,
जिसको, प्रभु, तू ताड़ित करता है,
और यों उसे अपनी व्यवस्था सिखाता है।
१३. तू उसे संकट के दिनों में
उस समय तक शांति देता है,
जब तक दुर्जन के लिये गड्ढा न खुद जाए।
१४. प्रभु निज लोगों को नहीं छोड़ेगा,
वह अपनी मीरास को नहीं त्यागेगा।
१५. न्याय धार्मिकता की ओर लौटेगा,
और सब निष्कपट व्यक्ति
उसका अनुसरण करेंगे।

१६. दुर्जन के विरुद्ध कौन मेरे पक्ष में उठेगा ?
कुकर्मियों के विरोध में कौन मेरे लिए खड़ा होगा ?
१७. यदि प्रभु ने मेरी सहायता न की होती,
तो मैं तत्काल मृत्यु की खामोशी में निवास करता।
१८. जब मैं ने यह कहा, "मेरे पग फिसल रहे हैं,"
तब हे प्रभु, तेरी करुणा ने मुझे सहारा दिया।
१९. जब मेरे हृदय में चिंताएं बढ़ जाती हैं,
तब तेरे आश्वासन मेरे चित् को प्रसन्न करते हैं।
२०. क्या वह अत्याचारी राजा तुझ से संबद्ध हो सकता है
जो संविधि की आड़ में उत्पात मचाता है ?
२१. वे भक्त के प्राण के लिये एकत्र होते हैं,
वे निर्दोष को मृत्यु-दण्ड देते हैं;
२२. किंतु प्रभु मेरे लिये शरण-स्थल है,
मेरा परमेश्वर मेरे आश्रय की चट्टान बन गया है।
२३. वह उन पर ही उनका अनिष्ट लौटाएगा;
वह उन्हीं की बुराई के द्वारा उनको नष्ट करेगा;
निश्चय ही हमारा प्रभु परमेश्वर उनको नष्ट करेगा।

स्तुतिगान और प्रभु की चेतावनी

९५. आओ, हम प्रभु का जयजयकार करें;
अपने उद्धार की चट्टान का जयघोष करें।
२. गुणगान करते हुए हम उसके संमुख आएं;
स्तुतिगान गाते हुए उसका जयघोष करें।
३. प्रभु महान परमेश्वर है;
वह समस्त देवताओं के ऊपर महान राजा है;
४. उसके अधिकार में पृथ्वी के गहरे स्थान हैं;
पर्वतों के शिखर भी उसी के हैं।

५. जल भी उसी का है, क्योंकि उसने उसको बनाया है;
थल की रचना उसी के हाथों ने की है।
६. आओ, हम उसके चरणों पर झुकें
और उसकी आराधना करें;
अपने निर्माता प्रभु के सम्मुख घुटने टेकें।
७. वह हमारा परमेश्वर है,
और हम उसके चरागाह की रेवड़ हैं,
उसके अधिकार की भेड़ें हैं।

भला होता कि आज तुम उसकी वाणी सुनते!
८. तुम अपना हृदय कठोर न करना,
जैसा तुम्हारे पूर्वजों ने उस दिन किया था
जब वे मरीबा में,
निर्जन प्रदेश के मस्सा में थे।
९. वहां तुम्हारे पूर्वजों ने प्रभु की परीक्षा की थी,
प्रभु के कार्यों को देख कर भी उसे परखा था।
१०. वह चालीस वर्ष तक उस पीढ़ी से घृणा करता रहा।
प्रभु ने यह कहा था, "ये हृदय के भ्रष्ट लोग हैं,
ये मेरे मार्गों को नहीं जानते हैं।"
११. अतः प्रभु ने अपने क्रोध में यह शपथ खाई,
"ये मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।"

स्तुतिगान

९६. प्रभु के लिए नया गीत गाओ,
हे पृथ्वी के लोगो, प्रभु के निमित्त गाओ!
२. प्रभु के लिए गाओ, उसके नाम को धन्य कहो;
दिन-प्रतिदिन उसके उद्धार का संदेश सुनाओ।
३. राष्ट्रों में उसकी महिमा का,
समस्त जातियों में उसके अद्भुत कार्यों का वर्णन करो।

४. प्रभु महान है, वह स्तुति के अत्यंत योग्य है;
वह समस्त देवताओं से अधिक भक्ति योग्य है।
५. अन्य जातियों के देवतागण मात्र मूर्तियां हैं;
पर प्रभु ने स्वर्ग को निर्मित किया है।
६. उसके संमुख यश और प्रताप हैं;
उसके पवित्र स्थान में शक्ति और सौंदर्य हैं।

७. हे अन्य जातियों के कुलो, प्रभु की स्तुति करो !
प्रभु की महिमा और शक्ति स्वीकार करो।
८. प्रभु के नाम की महिमा को स्वीकार करो !
भेंट लेकर उसके आंगनों में प्रवेश करो।
९. पवित्रता से सज[1] कर उसकी आराधना करो;
हे पृथ्वी के लोगो, उसके संमुख कांपते रहो।
१०. राष्ट्रों में यह कहो, "प्रभु राज्य करता है।
निश्चय ही पृथ्वी की नींव दृढ़ है,
वह विचलित न होगी।
प्रभु लोगों का न्याय निष्पक्षता से करेगा।"
११. स्वर्ग आनन्दित और पृथ्वी हर्षित हो !
सागर और उसकी परिपूर्णता उल्लास से गर्जन करे।
१२-१३. धरती और जो कुछ उसमें है,
वह प्रफुल्लित हो।
जब प्रभु आएगा
तब वन के समस्त वृक्ष
प्रभु के संमुख जयजयकार करेंगे।
वह पृथ्वी का न्याय करने को आएगा।
वह धार्मिकता से संसार का,
और सच्चाई से अन्य जातियों का न्याय करेगा।

---

[1] अथवा 'पवित्र परमेश्वर के दर्शन के लिये'

प्रभु का राज्य और सामर्थ्य

९७. प्रभु राज्य करता है,
पृथ्वी हर्षित हो;
सागर तट के सब देश आनन्दित हों।

२. प्रभु के चारों ओर मेघ और सघन अंधकार है;
धार्मिकता और न्याय उसके सिंहासन के मूल हैं।

३. उसके आगे-आगे अग्नि जाती है,
जो उसके वैरियों को चारों ओर भस्म करती है!

४. उसकी विद्युत भू-मण्डल को प्रकाशित करती है;
यह देखकर पृथ्वी कांप उठती है।

५. प्रभु की उपस्थिति से,
समस्त पृथ्वी के स्वामी की उपस्थिति से
पर्वत मोम के सदृश पिघल जाते हैं।

६. स्वर्ग प्रभु की धार्मिकता घोषित करता है;
समस्त जातियां उसकी महिमा का दर्शन पाती हैं।

७. समस्त मूर्तिपूजक,
निस्सार मूर्तियों पर गर्व आनेवाले लज्जित होते हैं।
देवतागण प्रभु को दण्डवत् करते हैं।

८. हे प्रभु, तेरे न्याय के विषय में सियोन ने सुना,
और वह आनन्दित हुआ;
यहूदा प्रदेश के नगर हर्षित हैं।

९. हे प्रभु, तू ही
समस्त पृथ्वी पर सर्वोच्च है;
तू समस्त देवताओं के ऊपर अत्यंत उन्नत है।

१०. प्रभु बुराई से घृणा करनेवालों से प्रेम करता है;[१]
वह दुर्जनों के हाथ से उन्हें मुक्त करता है।

---

[१] अथवा, "ओ प्रभु से प्रेम करनेवालो, बुराई से घृणा करो!"

११. धार्मिक व्यक्ति के निमित्त ज्योति,
निष्कपट हृदय वालों के लिये आनन्द उदय होता है।'
१२. ओ धार्मिको, प्रभु में आनन्दित हो,
उसके पवित्र नाम का गुणगान करो।

परमेश्वर की सच्चाई के लिए स्तुतिगान

गीत

९८ प्रभु के लिए नया गीत गाओ;
क्योंकि प्रभु ने अद्‍भुत कार्य किए हैं!
उसके दाहिने हाथ ने
उसकी पवित्र भुजा ने विजय प्राप्त की है।
२. प्रभु ने अपना उद्धार घोषित किया है,
राष्ट्रों के संमुख अपनी धार्मिकता प्रकट की है।
३. प्रभु ने इस्राएल के घराने के प्रति
अपनी करुणा और सच्चाई को
स्मरण किया है;
पृथ्वी के समस्त सीमांतों ने
हमारे परमेश्वर के उद्धार को देखा है।

४. हे पृथ्वी के लोगो,
प्रभु का जय-घोष करो;
उत्साह पूर्वक जयजयकार करो, स्तुति गाओ।
५. सितार के साथ
दस तार सहित गीत के मधुर लय के साथ
प्रभु की स्तुति गाओ!
६. तुरही और नरसिंगे के स्वर में,
प्रभु, राजा के संमुख जयघोष करो!

'अथवा, "बोया जाता है!"

७. सागर और उसकी परिपूर्णता,
संसार और उसके निवासी,
उल्लासपूर्ण गर्जन करें।
८. सरिताएं करतल ध्वनि करें
पर्वत मिलकर
९. प्रभु के संमुख जयजयकार करें;
क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आता है;
वह धार्मिकता से संसार का,
और निष्पक्षता से सब जातियों का न्याय करेगा।

इस्राएल के प्रति प्रभु का निष्कपट व्यवहार

९९. प्रभु राज्य करता है;
जातियां कांप उठें !
वह करूबों पर सवार है;
पृथ्वी डोल उठे !
२. प्रभु, तू सियोन में महान है;
तू समस्त जातियों पर उन्नत है।
३. कौमें तेरे महान् और भयप्रद नाम का गुणगान करें;
तू पवित्र है !
४. हे शक्तिमान न्यायप्रिय राजा,
तू ने ही निष्पक्षता की स्थापना की है;
तू ने याकूब में न्याय और धार्मिकता का व्यवहार किया है।
५. हमारे प्रभु परमेश्वर का गुणगान करो;
उसके चरणों की चौकी के संमुख वंदना करो।
वह पवित्र है !
६. मूसा और हारून प्रभु के पुरोहित थे;
प्रभु के नाम को पुकारनेवालों में शमूएल भी था;
उन्होंने प्रभु को पुकारा, और प्रभु ने उन्हें उत्तर दिया था।

७. मेघ-स्तंभ में से वह उनसे वार्तालाप करता था।
उन लोगों ने प्रभु की साक्षियों,
और उसकी संविधियों का पालन किया था,
जिन्हें प्रभु ने उन्हें दिया था।

८. हे प्रभु, हमारे परमेश्वर,
तू उन्हें उत्तर देता था;
तू उनके लिए क्षमाशील परमेश्वर था,
पर तू उनके बुरे कामों का प्रतिशोधी भी था!

६. हमारे प्रभु, परमेश्वर का गुणगान करो;
उसके पवित्र पर्वत पर जाकर
प्रभु की वंदना करो।
क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर पवित्र है।

धन्यवाद का गीत

स्तुति बलि का गीत

१००. पृथ्वी के लोगो,
प्रभु का जयघोष करो!

२. आनन्द से प्रभु की सेवा करो,
जयजयकार करते हुए उसके सम्मुख आओ!

३. जान लो कि प्रभु ही परमेश्वर है;
प्रभु ने ही हमें बनाया है,
और हम उसी के हैं;[१]
हम उसके निज लोग,
उसके चरागाह की भेड़ें हैं।

४. उसके भवन के द्वारों से
स्तुति-बलि के साथ,

---

[१] अथवा, "और न कि हमने स्वयं को"

उसके आंगनों में स्तुति गाते हुए प्रवेश करो !
उसकी सराहना करो,
उसके नाम को धन्य कहो !

५. प्रभु भला है;
उसकी करुणा सदा-सर्वदा,
उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी बनी रहती है :

धार्मिक जीवन बिताने का संकल्प

दाऊद का गीत

१०१. मैं करुणा और न्याय के गीत गाऊंगा;
हे प्रभु, तेरे लिए मैं राग बजाऊंगा ।
२. मैं निर्दोष आचरण पर ध्यान दूंगा;
प्रभु, तू मेरे पास कब आएगा ?

मैं अपने घर के भीतर
शुद्ध हृदय से सदाचरण करूंगा;
३. मैं अधम बातों को
अपने नेत्रों के समक्ष नहीं रखूंगा ।

मैं पथ भ्रष्टों के काम से घृणा करता हूं,
मैं दुष्कर्म में लिप्त नहीं हूंगा ।
४. हृदय की कुटिलता मुझ से दूर रहेगी;
मैं बुराई से अनजान रहूंगा ।

५. जो व्यक्ति गुप्त रूप से
अपने पड़ोसी की निन्दा करता है,
उसको मैं नष्ट करूंगा;
जिसकी आंखें घमण्ड से चढ़ी है
और जिसके हृदय में अहंकार है,
उसको मैं सहन नहीं करूंगा ।

६. मेरी कृपा दृष्टि देश के विश्वास पात्रों पर होगी,
कि वे मेरे साथ निवास करें;
जो व्यक्ति निर्दोष मार्ग पर चलता है,
वह मेरी सेवा करेगा ।
७. जो व्यक्ति छल-कपट करता है,
वह मेरे घर के भीतर नहीं रह सकेगा;
जो झूठ बोलता है,
वह मेरे नेत्रों के समक्ष नहीं टिक सकेगा ।
८. प्रभु के नगर से,
सब कुकर्मियों को मिटाने के लिए
मैं सवेरे-सवेरे
देश के समस्त दुर्जनों को नष्ट करूंगा ।

संकट में पुकार

एक पीड़ित व्यक्ति की प्रार्थना। जब वह व्यथित हो प्रभु के संमुख अपना अभियोग प्रस्तुत करता है।

१०२. हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन;
मेरी दुहाई तेरे समीप पहुंचे ।
२. मेरे संकट के दिन
अपना मुख मुझ से न छिपा !
अपने कान मेरी ओर कर;
जिस समय मैं पुकारूँ,
मुझे अविलम्ब उत्तर दे ।

३. मेरे दिन धुंए में बीत रहे हैं,
मेरी हड्डियां भट्टी जैसी धधक रही हैं ।
४. मेरा हृदय घास की भांति झुलसकर सूख गया है;
मैं भोजन करना भी भूल गया हूँ ।

५. मेरी सिसकियों के स्वर के कारण
मेरी अस्थियाँ त्वचा से चिपक गई हैं।
६. मैं निर्जन प्रदेश के धनेश के सदृश हूँ;
खंडहरों के उल्लू जैसा मैं बन गया हूँ।
७. मैं जागता रहता हूं;
मैं छत के एकाकी गौरा के समान हो गया हूँ।
८. मेरे शत्रु दिन भर मेरी निंदा करते हैं;
मुझ पर हंसने वाले मेरे नाम से शाप देते हैं!
९. मैं रोटी के सदृश राख खाता हूँ,
मैं अपने पेय में आंसू मिलाता हूँ,
१०. तेरे क्रोध, तेरे कोप के कारण;
क्योंकि तू ने मुझे उठाकर फेंक दिया है।
११. मेरे दिन ढलती छाया के समान हैं,
मैं घास के सदृश झुलस गया हूँ।

१२. प्रभु, तू सदा सिंहासनारूढ़ है;
तेरा नाम पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है।
१३. तू उठेगा, और सियोन पर दया करेगा;
उस पर कृपा करने का यही समय है;
निर्धारित समय आ पहुंचा है।
१४. तेरे सेवक उसके खण्डहरों को प्यार करते हैं,
उसके विनाश पर उन्हें दया आती है।
१५. प्रभु, तेरे नाम से राष्ट्र,
और तेरी महिमा से पृथ्वी के समस्त राजा भयभीत होंगे।
१६. प्रभु सियोन को पुनः निर्मित करेगा,
वह अपनी महिमा में प्रकट होगा।
१७. वह दीन-दुखियों की प्रार्थना की ओर मुख करेगा;
वह उनकी प्रार्थना की उपेक्षा नहीं करेगा।

१८. यह भावी पीढ़ी के लिए लिख लिया जाए,
ताकि संतति, जो उत्पन्न होगी,
प्रभु की स्तुति करे :
१९. प्रभु ने ऊंचे पवित्र स्थान से नीचे निहारा,
उसने स्वर्ग से पृथ्वी पर दृष्टिपात किया,
२०. जिससे वह बन्दियों का कराहना सुने,
मृत्यु-दण्ड पाए हुओं को स्वतंत्र करे;
२१. ताकि लोग सियोन में प्रभु के नाम का पाठ करें,
और वे यरूशलम में उसकी स्तुति करें।
२२. उस समय विजातियां और उनके राजा,
प्रभु की सेवा के लिए एकत्र होंगे ।

२३. प्रभु ने मार्ग में ही मेरे बल को घटा दिया,
मेरी आयु के दिन उसने कम कर दिए ।
२४. मैं यह कहता हूँ, "हे मेरे परमेश्वर !
तेरी आयु पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थिर है,
तू मेरी पकी आयु के पूर्व मुझे न उठा ।"

२५. तू ने आदि में पृथ्वी की नींव डाली,
आकाश तेरे हाथों की कृति है ।
२६. सब नष्ट हो जाएंगे, परंतु तू अटल है;
वे वस्त्र के सदृश जीर्ण हो जाएंगे ।
तू उनको वस्त्र की भांति बदल देता है,
२७. अत: वे बदल जाते हैं;
पर तू वैसा ही है;
तेरी आयु का अन्त नहीं ।
२८. तेरे सेवक की संतान सुरक्षित निवास करेगी,
और उसके वंशज तेरे सन्मुख स्थिर होंगे ।

प्रभु के उपकारों के लिए स्तुति-गान

दाऊद का गीत

१०३. ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह;
मेरे अन्तर का सर्वस्व
उसके पवित्र नाम को धन्य कहे !
२. ओ मेरे प्राण, उस प्रभु को धन्य कह,
और उसके समस्त उपकारों को न भूल,
३. जो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता है,
जो तेरे समस्त रोगों को स्वस्थ करता है,
४. जो तेरे जीवन को कबर से मुक्त करता है,
जो तुझे करुणा और अनुकंपा से सुशोभित करता है,
५. जो जीवन भर तुझे भली वस्तुओं से तृप्त करता है,
जिससे तेरा यौवन गरूड़ के सदृश गतिवान हो जाता है ।

६. प्रभु समस्त दलितों के लिए,
मुक्ति और न्याय के कार्य करता है ।
७. उसने मूसा पर अपने मार्ग,
और इस्राएल की संतान पर अपने कार्य प्रकट किए ।
८. प्रभु दयालु और कृपालु है,
वह विलंब-क्रोधी और करुणामय है,
९. वह न सदा डांटता रहता है,
और न सदैव क्रोध करता है ।
१०. वह हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं करता,
और न हमारे अधर्म के अनुसार हमें प्रतिफल देता है ।
११. आकाश पृथ्वी के ऊपर जितना ऊंचा है,
उतनी ही उसकी महान् करुणा उसके भक्तों पर है ।
१२. पूर्व पश्चिम से जितनी दूर है,
वह हमारे अपराध हमसे उतनी ही दूर करता है ।

१३. पिता अपने बच्चों पर जैसी दया करता है,
प्रभु भी अपने डरने वालों पर वैसी ही दया करता है ।
१४. वह हमारी रचना जानता है,
उसे स्मरण है कि हम धूल ही हैं ।

१५. मनुष्य की आयु घास के समान है;
वह मैदान के फूल के सदृश खिलता है;
१६. वायु उसके ऊपर से बहती है,
और वह ठहर नहीं पाता,
उसका स्थान भी उसको फिर कभी नहीं पहिचानता !
१७. किंतु प्रभु की करुणा उसके भक्तों पर युग-युगांत तक,
और उसकी धार्मिकता उनके पुत्र-पौत्रों पर बनी रहती है,
१८. जो उसके व्यवस्थान को पूरा करते हैं,
जो उसके आदेशों को स्मरण करते हैं
कि उनको पूर्ण करें ।

१९. प्रभु ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित किया है,
और उसकी सत्ता सब पर शासन करती है ।
२०. ओ प्रभु के स्वर्गदूतो,
महान शक्तिशालियो, तुम उसका वचन सुनकर
उसके अनुसार कार्य करते हो,
प्रभु को धन्य कहो !
२१. प्रभु की समस्त सेना,
उसकी इच्छा को पूर्ण करने वाले समस्त सेवक,
प्रभु को धन्य कहें !
२२. प्रभु की समस्त सृष्टि,
उसके राज्य के समस्त स्थानों में
प्रभु को धन्य कहे !
ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह !

प्रभु अपनी सृष्टि की देखभाल करता है

१०४. ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह !
हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू अत्यंत महान है।
तू महिमा और सम्मान से विभूषित है।
२. तू प्रकाश को वस्त्र के सदृश पहिनता है।
तू ने आकाश को तम्बू के समान ताना है।
३. तू ने अपने निवास स्थान को उपरले जल पर स्थित किया है।
तू मेघों को अपना रथ बनाता है;
तू पवन के पंखों पर सवारी करता है।
४. तू पवनों को अपने दूत बनाता है,
और धधकती अग्नि को अपनी सेविका।

५. तू ने पृथ्वी को उसकी नींवों पर स्थित किया है,
जिससे वह युग-युगांत तक न डगमगाएगा।
६. तू ने उसे वस्त्र की भांति महासागर से ढांप दिया है;
पर्वतों के ऊपर जल ठहर गया है।
७. तेरी डांट से सागर भाग गए;
तेरे गर्जन-स्वर के कारण वे पलायन कर गए।
८. वे पर्वत से ऊंचे उठे और घाटियों में भर गए,
उस स्थान पर, जिसे तू ने उनके लिए निश्चित किया है।
९. तू ने एक सीमा निर्धारित की है,
कि वे उसे न लांघ सकें,
और पृथ्वी को डुबाने के लिए न लौटें।

१०. तू झरनों को घाटियों में बहाता है;
वे पहाड़ों के मध्य बहते हैं।
११. वे मैदान के समस्त पशुओं को पानी देते हैं;
जंगली गदहे अपनी प्यास बुझाते हैं।

१२. उनके निकट आकाश के पक्षी निवास करते हैं,
वे शाखाओं के बीच कलरव करते हैं ।
१३. तू अपने उपरले कक्ष से पहाड़ों के बीच वर्षा करता है;
तेरे कार्यों के फल से धरती तृप्त है ।

१४. तू पशु के लिए घास,
और मनुष्य के लिए वनस्पति उपजाता है,
जिससे मनुष्य धरती से भोजन-वस्तु उत्पन्न करे,
१५. तथा दाखरस, जो उसके हृदय को आनन्दित करता है,
एवं मुख को चमकाने के लिए तेल,
और रोटी, जो उसके हृदय को बल प्रदान करती है ।
१६. प्रभु के वृक्ष, लबानोन प्रदेश के देवदार,
जिनको उसने लगाया था,
जल से तृप्त रहते हैं ।
१७. उनमें पक्षी अपने घोंसले बनाते हैं;
सनोवर के वृक्षों पर लगलग का बसेरा है ।
१८. जंगली बकरों के लिए ऊंचे पर्वत हैं;
चट्टानें बिज्जुओं के लिए आश्रय-स्थल हैं ।

१९. तू ने ऋतु-ज्ञान के लिए चंद्रमा को बनाया है;
सूर्य अपने अस्त होने का समय जानता है ।
२०. तू अंधकार करता है,
और रात हो जाती है,
जिसमें समस्त वन-पशु विचरने लगते हैं ।
२१. सिंह के बच्चे शिकार के लिये गुर्राते हैं,
और परमेश्वर से अपना आहार मांगते हैं ।
२२. सूर्य के उदय होते ही वे चले जाते हैं,
और अपनी मांदों में विश्राम करते हैं ।
२३. मनुष्य अपने काम के लिए,
संध्या तक परिश्रम करने के लिए निकलता है ।

२४. हे प्रभु, तेरे कार्य कितने अधिक हैं।
तू ने उन सब कार्यों को बुद्धि से किया है;
तेरे द्वारा रचे गए जीवों से पृथ्वी परिपूर्ण है।
२५. यह समुद्र कितना महान और विशाल है;
उसमें असंख्य जलचर हैं,
छोटे-बड़े जीव-जन्तु हैं।
२६. वहाँ जलयान चलते हैं,
और लिव्यातान जल-पशु भी,
जिसे तू ने उसमें क्रीड़ा करने के लिए बनाया है।
२७. ये सब तेरा मुख ताकते हैं,
कि तू उन्हें यथा-समय उनका आहार प्रदान करे।
२८. जब तू उन्हें आहार प्रदान करता है,
तब वे उसको एकत्र कर लेते हैं;
जब तू अपनी मुट्ठी खोलता है,
तब वे भली वस्तुओं से तृप्त होते हैं।
२९. जब तू अपना मुंह फेरता है,
तब वे आतंकित होते हैं;
जब तू उनकी सांस वापस लेता है,
तब वे मर जाते हैं, और अपनी मिट्टी को लौट जाते हैं।
३०. जब तू अपना आत्मा भेजता है,
तब वे उत्पन्न किए जाते हैं;
तू धरती की सतह को नया करता है।

३१. प्रभु की महिमा सदा होती रहे;
प्रभु अपने कार्यों से आनन्दित हो।
३२. वह पृथ्वी पर दृष्टिपात करता है,
और वह कांप उठती है;
वह पर्वतों को स्पर्श करता है,
और वे धुंआ उगलने लगते हैं।

३३. जब तक मैं जीवित हूँ,
प्रभु के लिए गीत गाऊंगा;
अपने जीवन भर
मैं अपने परमेश्वर का स्तुतिगान करूंगा।
३४. मेरा मनन-चिंतन प्रभु को प्रिय लगे,
क्योंकि मैं प्रभु में आनन्द मनाता हूँ।
३५. पृथ्वी से पापियों का अन्त हो जाए,
दुर्जन भविष्य में न रहें।
ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह !
प्रभु की स्तुति करो !

प्रभु के अद्भुत कार्य

१०५. प्रभु की सराहना करो,
उसका नाम घोषित करो;
सब जातियों में उसके कार्य प्रकट करो !
२. प्रभु के लिए गाओ, उसकी स्तुति गाओ;
उसके समस्त अद्भुत कार्यों का वर्णन करो;
३. तुम उसके पवित्र नाम की प्रशंसा करो;
प्रभु के खोजने वालों का हृदय आनन्दित हो।
४. प्रभु को, उसकी शक्ति को खोजो,
उसके मुख को निरंतर खोजते रहो।
५. उसके अद्भुत कार्यों को, जो उसने किए हैं,
उसके चमत्कारों को,
उसके मुंह से निकले न्याय-सिद्धांतों को स्मरण करो,
६. ओ प्रभु के सेवक अब्रहाम के वंशजो !
ओ प्रभु के मनोनीत याकूब के पुत्रो !
७. वही प्रभु हमारा परमेश्वर है;
समस्त पृथ्वी पर उसके न्याय-सिद्धांत सक्रिय हैं।

८. वह अपने व्यवस्थान को,
उस वचन को, जिसे उसने हजार पीढ़ियों को दिया है,
सदा स्मरण रखता है ।

९. अब्राहाम के साथ स्थापित अपने व्यवस्थान को,
और इसहाक के साथ खाई अपनी शपथ को
प्रभु याद रखता है ।
१०. उसने याकूब के लिए संविधि,
इस्राएल के लिए शाश्वत् व्यवस्थान
निश्चित किया था ।
११. उसने यह कहा था, "मैं तुझे कनान देश दूंगा;
वह तुम्हारी मातृ-भूमि, मीरास बनेगा ।
१२. जब वे संख्या में नगण्य थे, बहुत कम थे,
जब वे वहां प्रवासी थे,
१३. जब वे एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र को,
एक राज्य से दूसरे राज्य में भटकते फिरते थे,
१४. तब प्रभु ने किसी भी जाति को
उन पर अत्याचार नहीं करने दिया;
उसने उनके कारण राजाओं को भी डाँटा :
१५. "मेरे अभिषिक्तों को स्पर्श मत करना;
मेरे नबियों का अनिष्ट न करना ।"

१६. जब प्रभु ने देश पर अकाल भेजा,
और रोटी के समस्त साधन तोड़ डाले,
१७. तब उसने एक मनुष्य को,
यूसुफ को उनके पहले भेजा
जो गुलाम बनने के लिए बेचा गया था ।
१८. उसके पैरों में बेड़ियां पहिनायी गईं;
उसकी गरदन लोहे के सांकलों में जकड़ दी गई ।

१९. जब तक उसका कथन पूरा न हुआ,
तब तक प्रभु का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा ।
२०. तत्पश्चात् राजा ने सैनिक भेजा और उसे छुड़ा लिया,
प्रजा के शासक ने उसे बन्धन-मुक्त किया;
२१. उसने उसे अपने महल का स्वामी,
और अपनी समस्त सम्पत्ति का शासक नियुक्त किया,
२२. कि वह अपनी इच्छानुसार
उसके अधिकारियों को आदेश दे,
और उसके मंत्रियों को सलाह दे ।

२३. तब इस्राएल मिस्र देश में आया,
और हाम की धरती पर याकूब ने निवास किया ।
२४. प्रभु ने अपने निज लोगों को संख्या में खूब बढ़ाया,
और उनके वैरियों से अधिक उन्हें बलवान बनाया ।
२५. तब प्रभु ने मिस्र-निवासियों का हृदय फेर दिया
कि वे उसके निज लोगों से घृणा करें,
उसके सेवकों से छल-कपट करें ।
२६. प्रभु ने अपने सेवक मूसा को,
और हारून को जिसे उसने चुना था, भेजा ।
२७. दोनों ने उनके मध्य प्रभु के चिह्न दिखाए,
हाम की धरती पर चमत्कार किए ।
२८. प्रभु ने अंधकार भेजा, और वहां अंधेरा कर दिया,
तो भी उन्होंने उसके वचन का विरोध किया ।
२९. प्रभु ने उनके जल को रक्त में बदल दिया,
और उनकी मछलियों को मार डाला ।
३०. उनका देश, उनके राजाओं के महल भी,
मेंढकों से भर गए !
३१. प्रभु ने कहा,

और उनके समस्त देश पर
मक्खी-मच्छड़ उमड़ आए ।

३२. प्रभु ने उनको वर्षा के बदले ओले दिए,
उनकी धरती पर धधकती आग बरसाई ।

३३. प्रभु ने उनकी अंगूर लताएं और अंजीर के वृक्ष नष्ट कर दिए,
उनके देश के सब पेड़ उखाड़ फेंके ।

३४. प्रभु ने कहा, और टिड्डी दल,
एवं टिड्डियों के असंख्य बच्चे उमड़ आए,

३५. जिन्होंने उनके देश की समस्त वनस्पति को खा लिया,
उनकी भूमि के फलों को चाट डाला ।

३६. प्रभु ने उनके देश के सब पहलौठों को,
उनके पौरुष के प्रथम फलों को नष्ट कर दिया ।

३७. तब प्रभु ने सोना-चांदी के साथ
इस्राएलियों को गुलामी से बाहर निकाला;
उनके कुलों में एक भी दुर्बल व्यक्ति न था ।

३८. उनके प्रस्थान से मिस्र निवासी आनन्दित हुए;
क्योंकि इस्राएलियों का भय उनमें समा गया था ।

३९. प्रभु ने छाया के निमित्त बादल ताना,
और रात में प्रकाश के लिए अग्नि ।

४०. इस्राएलियों ने भोजन मांगा,
और प्रभु ने बटेरों को पहुंचाया;
प्रभु ने उन्हें स्वर्गिक रोटी से तृप्त किया ।

४१. प्रभु ने चट्टान को तोड़ा, और जल बहने लगा,
निर्जल भूमि पर नदी दौड़ पड़ी !

४२. प्रभु को अपना पवित्र वचन,
अपना सेवक अब्राहम स्मरण था ।

४३. अतः प्रभु अपने निज लोगों को हर्ष के साथ,

अपनी मनोनीत प्रजा को
जयजयकार सहित निकाल लाया ।
४४. प्रभु ने उन्हें अन्य जातियों के देश दिए;
और उन्हें अन्य लोगों के श्रम के फल पर
अधिकार दिया
४५. कि वे अंत तक प्रभु की संविधि का पालन करें;
उसकी व्यवस्था को मानते रहें ।
प्रभु की स्तुति करो !

इस्राएल का विद्रोह

१०६ प्रभु की स्तुति करो !
प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि वह भला है;
क्योंकि उसकी करुणा सदा बनी रहती है ।
२. कौन प्रभु के कार्यों का वर्णन कर सकता है ?
कौन उसका पूर्ण गुण गान सुना सकता है ?
३. धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते हैं,
जो हर समय धार्मिक कार्य करते हैं !

४. हे प्रभु, जब तू अपने निज लोगों पर कृपा करेगा,
तब मुझे भी स्मरण करना;
जब तू उनका उद्धार करेगा,
तब मेरी भी सुधि लेना;
५. ताकि मैं तेरे चुने हुये लोगों का कल्याण देख सकूं,
तेरे राष्ट्र के आनन्द में आनन्दित हो सकूं,
तेरी मीरास के साथ महिमा करूँ ।

६. प्रभु, हमने अपने पूर्वजों सहित पाप किया,
हमने कुकर्म किया, हमने दुष्टता की ।

७. जब हमारे पूर्वज मिस्र देश में थे,
उन्होंने तेरे आश्चर्य पूर्ण कर्मों को नहीं समझा,
उन्होंने तेरी करुणा को स्मरण नहीं किया,
वरन् सागर पर, लाल सागर पर विद्रोह किया ।

८. फिर भी प्रभु, तू ने अपने नाम के लिए उन्हें बचाया,
ताकि उन पर अपनी सामर्थ्य प्रकट करे ।

९. प्रभु, तू ने लाल सागर को डाँटा,
और वह सूख गया;
तू उन्हें गहरे सागर से निकाल लाया
मानो सागर शुष्क प्रदेश हो !

१०. इस प्रकार तू ने उनके बैरियों से उन्हें बचाया,
शत्रु के हाथ से उनको मुक्त किया ।

११. जल ने उनके शत्रुओं को डुबो दिया,
उनमें एक भी शेष न रहा ।

१२. तब उन्होंने प्रभु के वचनों पर विश्वास किया,
और वे स्तुतिगान करने लगे ।

१३. पर वे शीघ्र ही प्रभु के कार्यों को भूल गए,
वे उसके परामर्श के लिए नहीं ठहरे ।

१४. उन्होंने निर्जन प्रदेश में उदर-पूर्ति की कामना की,
और उजाड़खण्ड में परमेश्वर की परीक्षा ली !

१५. उन्होंने जो मांगा था,
वह परमेश्वर ने उन्हें दिया;
पर उनके मध्य महामारी भी भेज दी ।

१६. जब वे शिविर में मूसा के प्रति,
प्रभु के पवित्र जन हारून के प्रति ईर्ष्यालु हुए,

१७. तब भूमि ने फट कर दातान को निगल लिया,
उसने अबीराम के दल को ढाँप दिया ।

१८. उनके दल में आग लगी,
ज्वालाओं ने दुर्जनों को भस्म कर दिया ।

१९. उन्होंने होरेब पर्वत पर बछड़े की मूर्ति बनाई,
और उस मूर्ति की वन्दना की ।
२०. यों उन्होंने परमेश्वर की महिमा को
घास चरनेवाले बैल की मूर्ति के लिए बदल डाला ।
२१. वे अपने रक्षक परमेश्वर को भूल गए
जिसने मिस्र देश में महान कार्य किए थे,
२२. जिसने हाम की धरती पर आश्चर्य पूर्ण कर्म,
और लाल सागर पर आतंक पूर्ण कार्य किए थे ।
२३. अतः प्रभु ने कहा कि वह उन्हें मार डालता,
यदि प्रभु का मनोनीत मूसा
उसके सम्मुख खड़ा न होता,
और उसका कोप लौटा न लेता;
निस्संदेह प्रभु उन्हें नष्ट कर देता ।
२४. इस्राएलियों ने रमणीय देश को तुच्छ जाना;
और प्रभु के वचन पर विश्वास नहीं किया ।
२५. वे अपने तम्बुओं में कुड़कुड़ाते रहे,
उन्होंने प्रभु की वाणी नहीं सुनी ।
२६. तब प्रभु ने उनके विषय में यह शपथ खाई,
कि वह उन्हें निर्जन प्रदेश में धराशायी कर देगा,
२७. वह उनके वंशजों को राष्ट्रों में बिखेर देगा,
उन्हें विभिन्न देशों में तितर-बितर कर देगा ।

२८. वे पओर के बालदेवता पर आसक्त हो गए;
और मुरदों पर चढ़ाई गई बलि खाने लगे ।
२९. उन्होंने अपने व्यवहार से प्रभु को क्रोधित किया;
अतः उनके मध्य महामारी फूट पड़ी ।
३०. तब पीनहास ने खड़े होकर हस्तक्षेप किया,
और महामारी रुक गई ।

३१. उसका यह कार्य
पीढ़ी से पीढ़ी, युग-युगांत तक
उसके लिए धार्मिकता गिना गया ।

३२. उन्होंने मरीबा के झरने पर प्रभु को क्रोधित किया,
और उनके कारण मूसा का अनिष्ट हुआ ।
३३. उन्होंने मूसा के हृदय को कटु बना दिया,
अतएव मूसा अनुचित वचन बोले ।

३४. इस्राएलियों ने अन्य जातियों को नष्ट नहीं किया,
जैसा कि प्रभु ने उनसे कहा था ।
३५. पर वे राष्ट्रों में घुल मिल गए,
और उन्होंने उनके कार्य भी सीख लिए ।
३६. वे उनकी मूर्तियों की पूजा करने लगे,
जो उनके लिए फन्दा बन गईं ।
३७. उन्होंने अपने पुत्र और पुत्रियाँ
भूत-प्रेतों को चढ़ाईं ।
३८. उन्होंने निर्दोष रक्त बहाया,
अपने ही पुत्र-पुत्रियों का रक्त,
जिन्हें कनान की मूर्तियों पर उन्होंने चढ़ाया;
धरती रक्त से अपवित्र हो गई ।
३९. वे अपने कार्यों से अशुद्ध हो गए,
उन्होंने अपने व्यवहार द्वारा
विश्वासघात किया !

४०. तब अपने निज लोगों के प्रति
प्रभु का कोप भड़क उठा,
उसने अपनी मीरास से घृणा की ।
४१. उसने उन्हें राष्ट्रों के हाथ में सौंप दिया,
ताकि उनसे घृणा करनेवाले उन पर शासन करें ।

४२. उनके शत्रुओं ने भी उनको दबाया,
वे उनके अधिकार के वश में हो गए ।

४३. कई बार प्रभु ने उन्हें छुड़ाया,
पर वे अपने विचारों में विद्रोही बने रहे,
अतः अपने कुकर्मों के कारण उन्हें झुकना पड़ा ।

४४. फिर भी जब प्रभु ने उनकी चिल्लाहट सुनी,
तब उसने उनके संकट पर ध्यान दिया ।

४५. प्रभु ने उनके लिए अपना व्यवस्थान स्मरण किया;
वह अपनी करुणा के कारण दयावान् हुआ ।

४६. जिन्होंने उनको बन्दी बनाया था,
उन सब की दृष्टि में उन्हें
दया का पात्र बनाया ।

४७. हे प्रभु हमारी रक्षा कर,
विभिन्न राष्ट्रों से हमें
एक स्थान पर एकत्र कर,
ताकि हम तेरे पवित्र नाम का गुणगान करें,
तेरी स्तुति से आनन्दित हों ।

४८. प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर
अनादि काल से युग-युगांत धन्य है !
सब लोग यह कहें "आमेन !"
प्रभु की स्तुति करो !

पाँचवाँ खण्ड

प्रभु संकट से मुक्त करता है

१०७. प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि वह भला है;
क्योंकि उसकी करुणा सदा बनी रहती है !

२. प्रभु द्वारा मुक्त किए गए लोग,
जिन्हें बैरी के हाथ से उसने मुक्त किया है,

३. जिन्हें भिन्न-भिन्न देशों से,
पूर्व और पश्चिम,
उत्तर और दक्षिण से एकत्र किया है,
वे प्रभु की सराहना करें ।

४. कुछ निर्जन प्रदेश में, उजाड़ खंड में भटक रहे थे,
उन्हें बस्ती का मार्ग नहीं मिला था ।

५. भूख और प्यास के कारण उनके प्राण मूर्च्छित हो गए थे ।

६. तब उन्होंने अपने संकट में प्रभु की दुहाई दी,
और प्रभु ने विपत्ति से उन्हें छुड़ाया ।

७. वह उन्हें सीधे मार्ग पर ले गया
कि वे बस्ती में पहुंच जाएं ।

८. प्रभु की करुणा के लिए,
मानव जाति के प्रति किए गए
उसके आश्चर्य पूर्ण कर्मों के लिए
वे उसकी सराहना करें ।

९. प्रभु प्यासे प्राण को तृप्त करता है,
वह भूखे व्यक्ति को भली वस्तु से संतुष्ट करता है ।

१०. कुछ अंधकार और मृत्यु-छाया में बैठे थे,
पीड़ा और लोहे में जकड़े थे,

११. क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचनों के प्रति विद्रोह किया,
और सर्वोच्च प्रभु के परामर्श को तुच्छ समझा था,

१२. अतः उनके हृदय कष्ट से दबा दिए गए,
वे गिर पड़े,
और उनका कोई सहायक न था ।

१३. तब उन्होंने अपने संकट में प्रभु की दुहाई दी,
और प्रभु ने विपत्ति से उन्हें बचाया;

१४. वह उन्हें अंधकार और मृत्यु-छाया से निकाल लाया;
उसने उनकी बेड़ियाँ तोड़ डालीं ।

१५. प्रभु की करुणा के लिए,
मानव जाति के प्रति किए गए
उसके आश्चर्य पूर्ण कर्मों के लिए
वे उसकी सराहना करें ।

१६. प्रभु पीतल के द्वार भी तोड़ डालता है,
वह लोहे के छड़ों को भी टुकड़े-टुकड़े करता है ।

१७. कुछ अपने अपराध पूर्ण आचरण के कारण रोगी
और कुकर्मों के कारण पीड़ित थे ।

१८. उनको भोजन से अरुचि हो गई थी,
और वे मृत्यु-द्वार तक पहुंच चुके थे ।

१९. तब उन्होंने अपने संकट में प्रभु की दुहाई दी,
और प्रभु ने विपत्ति में उन्हें बचाया;

२०. उसने अपना वचन भेजकर उन्हें स्वस्थ किया,
और विनाश से उनकी रक्षा की ।

२१. प्रभु की करुणा के लिए,
मानव जाति के प्रति किए गये,

उसके आश्चर्य पूर्ण कर्मों के लिए,
वे उसकी सराहना करें ।

२२. वे स्तुति-बलि अर्पित करें
और जयजयकार सहित
उसके कार्यों का वर्णन करें ।

२३. कुछ जलयानों में समुद्र पर गए थे,
वे महासागर में व्यापार करते थे ।

२४. उन्होंने प्रभु के कार्यों को,
गहरे सागर में किए उसके आश्चर्यपूर्ण कर्मों को देखा ।

२५. प्रभु ने आज्ञा दी, और तूफान आ गया,
जिसने लहरों को उठा दिया ।

२६. जलयान आकाश तक ऊँचे उठ जाते,
और फिर सागर की गहराइयों में नीचे आ जाते थे;
संकट के कारण उनके प्राण पलायन करने लगे थे ।

२७. वे लुढ़कते थे, शराबी के समान लड़खड़ाते थे,
और उनकी बुद्धि नष्ट हो चुकी थी !

२८. तब उन्होंने अपने संकट में प्रभु की दुहाई दी,
और प्रभु ने विपत्ति से उन्हें बचाया ।

२९. प्रभु ने तूफान को शांत किया,
और सागर की लहरें स्थिर हो गईं ।

३०. तब वे आनन्दित हुए,
क्योंकि उन्हें शांति मिली;
प्रभु ने उन्हें उनके बन्दरस्थान तक पहुंचा दिया,
जहाँ वे जाना चाहते थे ।

३१. प्रभु की करुणा के लिए,
मानव जाति के प्रति किए गये
उसके आश्चर्य पूर्ण कर्मों के लिए,
वे उसकी सराहना करें ।

३२. वे लोगों की मण्डली में उसकी अत्यधिक प्रशंसा करें,
धर्मवृद्धों की सभा में उसकी स्तुति करें !
३३. वह नदियों को मरुभूमि में,
झरनों को शुष्क भूमि में,
३४. वहां के निवासियों की दुष्टता के कारण
फलवन्त भूमि को लोनी मिट्टी में बदल डालता है।
३५. वह मरुभूमि को जलाशय में,
निर्जल भूमि को जल के झरनों में बदल देता है।
३६. तब वह वहाँ भूखों को बसाता है,
और वे बसने के लिये नगर का निर्माण करते हैं।
३७. वे भूमि में बीज बोते,
अंगूर के बाग लगाते,
और अधिकाधिक फल प्राप्त करते हैं।
३८. प्रभु उन को आशिष देता है
कि वे बढ़ते जाएं;
वह उनके पशुओं को भी घटने नहीं देता है।

३९. जब वे दमन, संकट और दुख के कारण
घटते और दब जाते हैं
४०. तब प्रभु शासकों पर पराजय के अपमान की वर्षा करता है,
और उन्हें मार्गहीन उजाड़ खण्ड में भटकाता है।
४१. किंतु वह दरिद्र को पीड़ा से निकाल कर उन्नत करता है,
वह उनके परिवारों को रेवड़ के सदृश विशाल बनाता है।
४२. निष्कपट व्यक्ति यह देखकर आनन्दित होते हैं;
दुष्टता अपने मुंह को बन्द रखती है।

४३. जो बुद्धिमान है,
वह इन बातों पर ध्यान दे;
लोग प्रभु की करुणा पर विचार करें।

शत्रु के विरुद्ध सहायता के लिए प्रार्थना

एक गीत। दाऊद का भजन

१०८. हे परमेश्वर, मेरा हृदय तुझ में लीन है।
लीन है मेरा हृदय!
मैं गीत गाऊंगा, राग बजाऊंगा।
ओ मेरे प्राण जाग!

२. जागो, ओ वीणा और सितार!
मैं प्रभात को जगा दूंगा!
३. हे प्रभु, अन्य जातियों के बीच
मैं तेरी सराहना करूंगा,
राष्ट्रों के मध्य मैं तेरी स्तुति गाऊंगा।
४. तेरी करुणा स्वर्ग तक
और तेरा सत्य मेघों तक महान है।

५. हे परमेश्वर, स्वर्ग में महान् हो,
समस्त पृथ्वी पर तेरी महिमा व्याप्त हो!

६. तू अपने भुजबल से हमें बचा,
हमें उत्तर दे,
जिससे तेरे प्रियजन मुक्त किए जाएं।

७. परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में यह कहा है,
"मैं प्रसन्न होकर शकेम को विभाजित करूंगा,
और सुकोत घाटी को नाप दूंगा।
८. गिलआद प्रदेश मेरा है,
और मनश्शे प्रदेश भी मेरा है
एप्रइम प्रदेश मेरा शिरस्त्राण है,
यहूदा प्रदेश मेरा राज दण्ड है।
६. मोआब राष्ट्र मेरी चिलमची है;

एदोम राष्ट्र मेरे पैर के नीचे होगा;
पलिस्ती राष्ट्र पर मैं जयघोष करूंगा।"

१०. कौन मुझे सुदृढ़ नगर में पहुंचायेगा?
कौन मुझे एदोम तक ले जाएगा?

११. हे परमेश्वर, क्या तू ने हमारा परित्याग नहीं किया है?
हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ क्यों नहीं जाता?

१२. शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता कर;
क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है!

१३. परमेश्वर का साथ होने पर हम वीरता से लड़ेंगे;
क्योंकि परमेश्वर ही हमारे शत्रुओं को कुचलेगा।

प्रतिशोध की याचना

मुख्यवादक के लिए दाऊद का गीत

१०९. मेरी स्तुति के परमेश्वर,
तू चुप न रह!

२. दुर्जन और कुटिल व्यक्ति के मुंह
मेरे विरुद्ध खुले हैं,
वे मुझ से झूठी जिह्वा से बात करते हैं।

३. घृणास्पद शब्दों से मुझे घेरते,
और अकारण मुझ पर आक्रमण करते हैं।

४. वे मेरे प्रेम के बदले
मुझ पर दोषारोपण करते हैं,
फिर भी मैं निरंतर प्रार्थना करता हूं।

५. वे भलाई के निमित्त बुराई,
मेरे प्रेम के बदले मुझे घृणा लौटाते हैं।

६. वे यह कहते हैं, "इसके विरुद्ध किसी दुर्जन को
न्यायाधीश नियुक्त करो;

दोषारोपण करनेवाला
इसके दाहिने हाथ पर खड़ा हो ।"

७. प्रभु, जब उस दुर्जन का न्याय हो,
तब वह दोषी ठहरे;
उसकी क्षमा-याचना पाप गिनी जाये ।

८. उसके जीवन के दिन नगण्य हों;
उसका पद कोई दूसरा छीन ले !

९. उसके बच्चे पितृहीन
और पत्नी विधवा हो जाए !

१०. उसके बच्चे मारे-मारे फिरें,
वे भीख मांगें;
वे अपने उजाड़ घरों से भी निकाल दिए जाएँ ।

११. महाजन उसका सर्वस्व छीन ले,
विदेशी उसके परिश्रम के फल को लूट लें ।

१२. उस पर कोई करुणा न करे,
उसके पितृहीन बच्चों पर कोई दया न करे ।

१३. उसका वंश नष्ट हो जाए,
दूसरी पीढ़ी में उसका नाम मिट जाए ।

१४. उसके पूर्वजों के कुकर्म
प्रभु के समक्ष स्मरण किए जाएँ;
उसकी माता का पाप न मिटाया जाए ।

१५. उसके पाप प्रभु के समक्ष निरंतर रहें,
प्रभु धरती से उसकी स्मृति मिटा डाले ।

१६. क्योंकि उसने दया का व्यवहार करना
स्मरण न रखा,
बल्कि वह पीड़ित और दरिद्र का,
हताश व्यक्ति का पीछा करता रहा
कि उसे मार डाले ।

१७. उसे शाप देना प्रिय था,

अभिशाप उस पर आ पड़े !
आशिष उसे पसन्द न थी;
वह उससे दूर रहे !

१८. वह वस्त्र की भांति अभिशाप धारण करता था !
जल के सदृश अभिशाप उसके पेट में,
तेल के समान उसकी हड्डियों में समा जाए।

१९. अभिशाप उसकी चादर बन जाये
जिसको वह ओढ़ता है;
अभिशाप उसका कटिबन्ध हो जाये,
जिसको वह नित्य लपेटता है।

२०. मुझ पर दोषारोपण करनेवालों को,
मेरे विरुद्ध बुरी-बुरी बातें कहनेवालों को
प्रभु की ओर से यही प्रतिफल मिले।

२१. किंतु मुझ से, हे परमेश्वर, मेरे स्वामी,
अपने करुणामय नाम के अनुरूप व्यवहार कर;
तेरी करुणा उत्तम है,
अतः मुझे मुक्त कर।

२२. मैं पीड़ित हूं, दरिद्र हूं,
मेरे भीतर मेरा हृदय घायल है।

२३. संध्या की छाया के सदृश मैं ढलता जाता हूं;
मैं टिड्डी की तरह उड़ा दिया गया हूं।

२४. उपवास के कारण मेरे घुटने कांपते हैं,
तेल के अभाव में मेरा शरीर सूख गया है।

२५. मैं लोगों के उपहास का पात्र बन गया हूं,
वे मुझे देख कर सिर हिलाते हैं।

२६. हे प्रभु, मेरे परमेश्वर
मेरी सहायता कर !

अपनी करुणा के अनुरूप
मुझे बचा ले ।

२७. उन्हें ज्ञात हो जाए, कि यह तेरा कार्य है;
हे प्रभु, तू ने ही यह किया है ।

२८. वे अभिशाप दें,
पर तू आशिष !
मुझ पर आक्रमण करने वाले लज्जित हों;
पर तेरे सेवक आनन्दित !

२९. मुझ पर दोषारोपण करनेवाले
अपमान से विभूषित हों,
वे पराजय को वस्त्र की तरह धारण करें ।

३०. मैं अपने मुंह से
प्रभु की अत्याधिक सराहना करूंगा;
मैं जन समूह में उसकी स्तुति करूंगा ।

३१. प्रभु दरिद्र के दाहिने हाथ पर खड़ा रहता है,
ताकि वह उसको
मृत्यु-दण्ड देनेवालों के हाथ से बचाए ।

प्रभु राजा को राज्य प्रदान करता है

दाऊद का गीत

११०. प्रभु परमेश्वर मेरे स्वामी राजा से कहता है :
"जब तक मैं तेरे शत्रुओं को
तेरे चरणों की चौकी न बना दूं,
तू मेरी दाहिनी ओर बैठ ।"

२. प्रभु सियोन से
आपको शक्तिशाली राजदंड प्रदान करता है,
कि आप अपने शत्रुओं के मध्य शासन करें ।

३. जब आप युद्ध में विजय प्राप्त करते हैं,
तब आपकी प्रजा
स्वेच्छा से स्वयं को अर्पित करती है।
आप पवित्रता से सुशोभित हैं।
उषा काल के गर्भ से
ओस की बूंद के सदृश
तरुणाई आपको प्राप्त होती है।[1]
४. प्रभु ने शपथ खाई,
और वह अपना यह निश्चय नहीं बदलेगा :
"तू मलकीसेदेक के समान।
सदा के लिए पुरोहित है।"

५. स्वामी आपकी दाहिनी ओर है,
वह अपने कोप के दिन राजाओं को कुचल देगा।
६. वह राष्ट्रों का न्याय-निर्णय करेगा,
और लाशों को पाट देगा।
वह धरती के विशाल क्षेत्र में
शासकों को कुचल देगा।
७. महाराज, आप मार्ग में झरने से जल पिएंगे,
आप विजय से अपना सिर ऊंचा करेंगे।

प्रभु अपने भक्तों की देख भाल करता है

१११. प्रभु की स्तुति करो!
मैं सत्यनिष्ठों के समूह में, सभा में
सम्पूर्ण हृदय से प्रभु की सराहना करूंगा।
२. प्रभु के कार्य महान हैं;
जिन्हें वे कार्य प्रिय हैं,
वे उनकी खोज करते हैं।

---

[1] अथवा, 'आपको राज्य-अधिकार प्राप्त होता है।'

३. प्रभु के कार्य महिमा और सम्मान से पूर्ण हैं,
उसकी धार्मिकता सदा बनी रहती है ।
४. प्रभु ने अपने आश्चर्य पूर्ण कर्मों का
एक स्मारक बनाया है;
प्रभु कृपालु और दयालु है ।
५. वह अपने भक्तों को
भोजन प्रदान करता है;
वह अपना व्यवस्थान
सदा स्मरण रखता है ।
६. प्रभु ने राष्ट्रों का उत्तराधिकार
अपने लोगों को प्रदान कर
अपने कार्यों की शक्ति उन पर प्रकट की है ।
७. प्रभु के कार्य सच्चाई और न्याय हैं;
उसके समस्त आदेश विश्वसनीय हैं;
८. वे सदा-सर्वदा के लिए अटल हैं ।
उनको सच्चाई और सहज भाव से पूर्ण करना चाहिए ।
९. प्रभु ने अपने निज लोगों के लिए मुक्ति भेजी;
उसने सदैव के लिये अपना व्यवस्थान स्थापित किया ।
उसका नाम पवित्र और आतंकमय है !

१०. प्रभु की भक्ति करना बुद्धि का आरंभ है;
जो उसका पालन करते हैं,
उनको उत्तम समझ प्राप्त होती है ।
प्रभु की स्तुति सदा की जाएगी !

प्रभु के भक्तों की समृद्धि

११२. प्रभु की स्तुति करो !
धन्य है, वह मनुष्य

जो प्रभु का भय मानता है,
जो उसकी आज्ञाओं से बहुत प्रसन्न होता है।
२. उसके वंशज पृथ्वी पर महान होंगे;
सत्यनिष्ठ व्यक्ति की पीढ़ी आशिष पाएगी।
३. उसके घर में धन-सम्पत्ति रहती है;
उसकी धार्मिकता सदा बनी रहती है।
४. सत्यनिष्ठ व्यक्ति के हेतु
अंधकार में प्रकाश उदय होता है;
प्रभु कृपालु, दयालु और धार्मिक है।
५. जो मनुष्य दूसरों पर कृपा करता, और उधार देता है,
जो न्याय पूर्वक प्रत्येक कार्य करता है,
उसका कल्याण होता है।
६. वह कभी विचलित न होगा,
भक्त की स्मृति सदा बनी रहेगी।
७. वह अशुभ समाचार से नहीं डरता;
वह प्रभु पर भरोसा रखता है,
उसका हृदय अडिग रहता है।
८. उसका हृदय दृढ़ है,
जब तक वह अपने बैरियों पर
विजय पूर्ण दृष्टि न करे,
वह नहीं डरेगा।
९. उसने उदारता से दरिद्रों को दान दिया है,
उसकी धार्मिकता सदा बनी रहेगी;
सम्मान से उसका सिर ऊंचा रहता है।
१०. दुर्जन यह देखकर क्रोधित होता है;
वह दांत पीसता और गल-गलकर मर जाता है।
अतः दुर्जन की इच्छा का विनाश होता है।

प्रभु गिरे हुए व्यक्ति को उठाता है

११३. प्रभु की स्तुति करो !
ओ प्रभु के सेवको, स्तुति करो,
प्रभु के नाम की स्तुति करो !

२. आज से युग-युगांत तक
प्रभु का नाम धन्य है !
३. उदयाचल से अस्ताचल तक
प्रभु के नाम की स्तुति की जाए !
४. प्रभु समस्त राष्ट्रों के ऊपर महान है,
उसकी महिमा आकाश से ऊंची है !
५. हमारे परमेश्वर प्रभु के सदृश और कौन है ?
वह उच्च स्थान पर विराजमान है,
६. वह आकाश और पृथ्वी पर
दृष्टिपात के लिये सिर झुकाता है।
७. वह धूल से निर्धन को,
राख के ढेर से दरिद्र को उठाता है,
८. और वह उनको सामंतों के साथ,
अपने निज लोगों के सामंतों के संग बैठाता है।
९. वह बांझ स्त्री को आनन्दित मां बना कर
घर में बसाता है।
प्रभु की स्तुति करो !

निर्गमन-काल में प्रभु के आश्चर्य पूर्ण काम

११४. जब इस्राएली मिस्र देश से,
याकूब के वंशज
विदेशी भाषा-भाषियों के पास से निकल आए,

२. तब यहूदा प्रदेश प्रभु का पवित्र स्थान बन गया,
इस्राएली प्रदेश उसका राज्य हो गया ।

३. सागर यह देखकर भागा,
यरदन नदी उल्टी बहने लगी ।
४. पर्वत मेढ़ों के सदृश
और पहाड़ियाँ मेमनों के समान उछलने लगीं !

५. ओ सागर, तुझे क्या हुआ कि तू भागा ?
ओ यरदन नदी, तू क्यों उल्टी बहने लगी ?
६. ओ पर्वतो, तुम मेढ़ों के सदृश,
और पहाड़ियो, तुम मेमनों के समान
क्यों उछलने लगे ?
७. ओ पृथ्वी, स्वामी की उपस्थिति से
याकूब के परमेश्वर की उपस्थिति से
काँप उठ !
८. प्रभु चट्टान को जलाशय में,
पथरीली भूमि को जल स्रोत में
बदल देता है ।

परमेश्वर और मूर्तियां

११५. हे प्रभु, हमारी नहीं,
हमारी नहीं,
वरन् अपनी करुणा और सच्चाई के लिए,
अपने नाम की महिमा कर !
२. राष्ट्र क्यों यह कहें,
"उनका परमेश्वर कहाँ है ?"

३. हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है;

जो उसको पसन्द आता है,
वही कार्य वह करता है ।
४. उनकी मूर्तियाँ सोना-चांदी हैं,
वे मनुष्य के हाथों का कार्य हैं !
५. उनके मुंह तो हैं, पर वे बोलती नहीं;
उनके आंखें हैं, किंतु वे देख नहीं सकतीं ।
६. उनके कान हैं, परंतु वे सुन नहीं सकतीं;
उनके नाक भी है, लेकिन वे सूंघ नहीं सकतीं ।
७. उनके हाथ तो हैं, पर वे स्पर्श नहीं कर सकतीं;
उनके पैर भी हैं, किंतु वे चल नहीं सकतीं ।
वे अपने कण्ठ से शब्द भी नहीं निकाल सकतीं ।
८. जो उन्हें निर्मित करते हैं, वे उन्हीं मूर्तियों जैसे हैं,
और वे सब भी जो उन पर भरोसा करते हैं
उन्हीं के समान हैं ।

९. ओ इस्राएली राष्ट्र,
प्रभु पर भरोसा कर !
वही तेरा सहायक और तेरी ढाल है ।
१०. ओ हारून वंश के पुरोहितो, प्रभु पर भरोसा करो !
वही तुम्हारा सहायक और तुम्हारी ढाल है ।
११. ओ प्रभु से डरने वालो,
प्रभु पर भरोसा करो ।
वही तुम्हारा सहायक और तुम्हारी ढाल है ।

१२. प्रभु ने हमें स्मरण किया,
वह हमें आशिष देगा;
वह इस्राएल राष्ट्र को आशिष देगा;
वह हारून वंश के पुरोहितो को आशिष देगा;
१३. प्रभु अपने से डरने वालों को,
बड़े-छोटे सब को आशिष देगा ।

१४. प्रभु तुम्हारी बढ़ती करे,
तुम्हारी और तुम्हारे पुत्रों की ।
१५. तुम प्रभु से आशिष पाओ;
प्रभु आकाश और पृथ्वी का सृजक है ।
१६. स्वर्ग, प्रभु का ही स्वर्ग है,
पर उसने मनुष्य जाति को पृथ्वी प्रदान की है ।
१७. मृतक प्रभु की स्तुति नहीं करते,
क्योंकि वे मृतक लोक की खामोशी में डूब जाते हैं ।
१८. पर हम अब से सदा तक
प्रभु को धन्य कहेंगे ।
प्रभु की स्तुति करो !

मृत्यु से बचने पर प्रभु को धन्यवाद देना

११६. मैं प्रभु से प्रेम करता हूं,
क्योंकि उसने मेरी वाणी और बिनती सुनी है ।
२. उसने मेरी ओर ध्यान दिया है,
अतः मैं अपने जीवन भर उसको ही पुकारूंगा ।
३. मृत्यु के पाश ने मुझे लपेटा था;
मृतक-लोक के फंदों ने मुझे फंसा लिया था;
मुझे संकट और शोक सहना पड़ा ।
४. तब मैं ने प्रभु को उसके नाम से पुकारा,
"हे प्रभु, तू मेरे प्राण को छुड़ा ।"
५. प्रभु कृपालु और धर्ममय है;
हमारा परमेश्वर दयालु है ।
६. प्रभु भोले मनुष्यों की रक्षा करता है;
मैं दुर्दशा में था, उसने मुझे बचाया ।
७. ओ मेरे प्राण, अपने नीड़ को लौट आ;
क्योंकि प्रभु ने मेरा उपकार किया है ।

८. तू ने मेरे प्राण को मृत्यु से,
मेरी आंखों को आंसुओं से,
मेरे पैरों को गिरने से बचाया ।

९. मैं जीव-लोक में
प्रभु के समक्ष चलता हूं ।

१०. मैं ने तब भी विश्वास किया था,
जब मैं ने यह सोचा था कि मैं अत्यन्त पीड़ित हूं;

११. मैं ने भयाकुल हो यह कहा था,
"सब मनुष्य झूठे हैं" ।

१२. जो उपकार प्रभु ने मुझ पर किए हैं,
उनका बदला किस प्रकार दूं ?

१३. मैं उद्धार का पात्र उठाकर
प्रभु के नाम से पुकारूंगा,

१४. प्रभु के लोगों के सम्मुख
मैं प्रभु के प्रति अपनी समस्त मन्नतें पूरी करूंगा ।

१५. प्रभु के संतों की मृत्यु
प्रभु की दृष्टि में मूल्यवान है ।

१६. हे प्रभु, मैं तेरा सेवक हूं
मैं तेरा सेवक, तेरी सेविका का पुत्र हूं ।
तू ने मेरे बंधन खोल दिए हैं ।

१७. मैं तुझको स्तुति-बलि चढ़ाऊंगा,
और प्रभु, तेरे नाम से तुझे पुकारूंगा ।

१८–१९. प्रभु की प्रजा के समक्ष,
प्रभु के घर के आंगन में,
ओ यरूशलम, तेरे मध्य
मैं प्रभु के प्रति अपनी समस्त मन्नतें पूरी करूंगा ।

प्रभु की स्तुति करो !

प्रभु की स्तुति

११७. ओ समस्त राष्ट्रो,
प्रभु की स्तुति करो;
ओ सब जातियो,
प्रभु का गुणगान करो ।
२. प्रभु ने हम पर करुणा की है;
प्रभु की सच्चाई सदा बनी रहती है ।
प्रभु की स्तुति करो !

उद्धार के लिये स्तुति

११८. प्रभु की सराहना करो;
क्योंकि वह भला है,
उसकी करुणा सदा बनी रहती है !

२. इस्राएली राष्ट्र यह कहे,
"प्रभु की करुणा सदा बनी रहती है ।"
३. हारून वंश के पुरोहित यह कहें,
"प्रभु की करुणा सदा बनी रहती है ।"
४. प्रभु से भय करने वाले यह कहें,
"प्रभु की करुणा सदा बनी रहती है ।"

५. संकट में मैं ने प्रभु को पुकारा;
प्रभु ने मुझे उत्तर दिया,
और मुझे संकट से मुक्त किया ।
६. प्रभु मेरे पक्ष में है,
मैं नहीं डरूंगा ।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ?
७. प्रभु मेरे पक्ष में है,

वह मेरा सहायक है;
मैं अपने बैरियों पर
विजय पूर्ण दृष्टि करूंगा।

८. मनुष्य पर भरोसा करने की अपेक्षा
प्रभु की शरण लेना भला है।

९. शासकों पर भरोसा करने की अपेक्षा
प्रभु की शरण लेना भला है।

१०. सब राष्ट्रों ने मुझे घेर लिया;
पर प्रभु के नाम से
मैं उनका नाश करता हूं !

११. उन्होंने मुझे घेर लिया,
निस्सन्देह घेर लिया है;
पर प्रभु के नाम से
मैं उनका नाश करता हूं !

१२. उन्होंने मुझे मधुमक्खियों के सदृश घेर लिया,
वे कांटों की आग-जैसे भभक रहे हैं;
पर प्रभु के नाम से मैं उनका नाश करता हूं !

१३. मुझे गिराने के लिये
बलपूर्वक धक्का दिया गया;
किंतु प्रभु ने मेरी सहायता की।

१४. प्रभु मेरी शक्ति है;
वह मेरा गीत है;
वह मेरा उद्धार है।

१५. भक्तों के शिविरों में
जय जयकार और उद्धार का यह स्वर हो रहा है :
"प्रभु का दाहिना हाथ वीरता से कार्य करता है,

१६. प्रभु का दाहिना हाथ उन्नत हुआ है,
प्रभु का दाहिना हाथ वीरता से कार्य करता है !"

१७. मैं मरूंगा नहीं, वरन् जीवित रहूंगा,
मैं प्रभु के कार्यों का वर्णन करूंगा ।
१८. प्रभु ने मुझे बहुत ताड़ित किया,
पर उसने मुझे मृत्यु को नहीं सौंपा ।

१९. मेरे लिए धर्म के द्वार खोलो;
मैं उनमें प्रवेश कर प्रभु की सराहना करूंगा ।

२०. यह प्रभु का द्वार है;
उसके द्वारा भक्त प्रवेश करेंगे ।
२१. प्रभु, मैं तेरी सराहना करता हूं;
क्योंकि तू ने मुझे उत्तर दिया है,
तू मेरा उद्धार है ।

२२. जिस पत्थर को भवन निर्माताओं ने रद्द किया,
वह मेहराब की केन्द्र शिला[१] बन गया ।
२३. यह कार्य प्रभु का है,
और यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है ।
२४. आज का यह दिन प्रभु ने बनाया है;
हम उसमें मगन और आनन्दित हों ।
२५. हे प्रभु, हम तुझ से बिनती करते हैं,
हमें बचा;
हे प्रभु, हम तुझ से बिनती करते हैं,
हमें सफलता प्रदान कर ।

२६. प्रभु के नाम से आनेवाला व्यक्ति धन्य है ।
हम तुम्हें प्रभु-गृह में से धन्य कहते हैं !
२७. प्रभु ही परमेश्वर है,
उसने हमें प्रकाश दिया है ।

---

[१] अथवा, 'आधार-शिला'

वेदी के कंगूरों तक
शोभा-यात्रा को शाखाओं से सजाओ ।[१]

२८. तू ही मेरा परमेश्वर है,
मैं तेरी सराहना करता हूं;
तू मेरा परमेश्वर है,
मैं तेरा गुण गान करूंगा ।
२९. प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि वह भला है;
क्योंकि उसकी करुणा सदा बनी रहती है ।

परमेश्वर की व्यवस्था उत्तम है

११९. धन्य हैं वे जिनका आचरण निर्दोष है,
जो प्रभु की व्यवस्था पर चलते हैं,
२. धन्य हैं वे जो प्रभु की साक्षियां मानते हैं,
जो अपने संपूर्ण हृदय से प्रभु की खोज करते हैं,
३. जो अन्याय नहीं करते
वरन् प्रभु के मार्ग पर चलते हैं ।

४. प्रभु, तू ने अपने आदेश प्रदान किए हैं
कि उत्साह पूर्वक उनका पालन किया जाए ।
५. भला हो कि तेरी संविधियों का पालन करने के लिये
मेरा आचरण दृढ़ हो जाए ।
६. प्रभु, जब मैं तेरी आज्ञाओं की ओर दृष्टिपात करूंगा,
तब मैं लज्जित नहीं होऊंगा ।
७. जब मैं तेरे धर्ममय न्याय-सिद्धान्तों को सीखूंगा,
तब निष्कपट हृदय से तेरी सराहना करूंगा ।

---

[१] पाठांतर, "यात्रा-पशु को रस्सी से बांधकर वेदी के कंगूरों (सींग) तक ले जाओ ।"

८. मैं तेरी संविधियों का पालन करूंगा;
प्रभु, तू मुझे कदापि मत त्यागना !

९. जवान व्यक्ति अपना आचरण
किस प्रकार शुद्ध रख सकता है ?
प्रभु, तेरे वचन का पालन करके ।

१०. मैं अपने संपूर्ण हृदय से तुझको खोजता हूं;
मुझे अपनी आज्ञाओं से विमुख न होने देना !

११. मैंने तेरे वचन अपने हृदय में धारण किए हैं,
कि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूं ।

१२. हे प्रभु, तू धन्य है;
तू मुझे अपनी संविधियां सिखा ।

१३. तेरे समस्त न्याय-सिद्धांतों का
मैं अपने मुंह से वर्णन करूंगा ।

१४. मैं तेरी साक्षियों के मार्ग से हर्षित होता हूं,
जैसे मैं सब प्रकार के धन-धान्य से प्रसन्न होता हूं ।

१५. मैं तेरे आदेशों का पाठ करूंगा,
मैं तेरे मार्गों की ओर दृष्टि करूंगा ।

१६. मैं तेरी संविधियों से प्रसन्न रहूँगा;
मैं तेरे वचन को नहीं भूलूंगा ।

१७. प्रभु, अपने सेवक का उपकार कर,
कि मैं जीवित रहूं
और तेरे वचन का पालन कर सकूं ।

१८. तू मेरी आंखें खोल
कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूं ।

१९. मैं पृथ्वी पर प्रवासी हूं;
प्रभु, मुझ से अपनी आज्ञाएं न छिपा ।

२०. हर समय तेरे न्याय-सिद्धान्त की अभिलाषा करते-करते
मेरा प्राण डूब चुका है ।

२१. तू अभिमानियों और शापितों को डांटता है,
वे तेरी आज्ञाओं से भटक जाते हैं।
२२. उनकी निन्दा और अपमान मुझ से दूर कर,
क्योंकि मैं तेरी साक्षियों को मानता हूं।
२३. चाहे शासक भी बैठकर मेरे विरुद्ध बातें करें,
तो भी मैं, तेरा यह सेवक,
तेरी संविधियों का पाठ करूंगा।
२४. तेरी साक्षियां मेरा आनन्द हैं,
वे मुझे परामर्श देती हैं।

२५. मेरे प्राण धूल में मिल गए;
प्रभु, तू अपने वचन के अनुसार
मुझे पुनर्जीवित कर!
२६. जब मैंने अपने आचरण की चर्चा की,
तब तू ने मुझे उत्तर दिया;
मुझे अपनी संविधियाँ सिखा।
२७. प्रभु, तू अपने आदेशों का मार्ग समझा;
मैं तेरे आश्चर्य पूर्ण कार्यों का ध्यान करूंगा।
२८. वेदना के कारण मेरा प्राण पिघलने लगा है।
तू अपने वचन के अनुसार मुझे बलवान बना।
२९. प्रभु असत्य का मार्ग मुझ से दूर कर;
मुझ पर कृपा कर अपनी व्यवस्था सिखा।
३०. मैं ने सत्य का मार्ग चुना है,
मैंने तेरे न्याय-सिद्धान्त अपने संमुख रखे हैं।
३१. हे प्रभु, मैं तेरी साक्षियों से चिपका हूं;
मुझे लज्जित न होने देना।
३२. जब तू मेरे हृदय को विशाल बनाएगा,
तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग पर दौड़ूंगा।

३३. हे प्रभु, मुझे अपनी संविधियों का मार्ग सिखा;
मैं अंत तक उसे मानता रहूंगा ।

३४. मुझे समझ दे कि मैं तेरी व्यवस्था को मानूं,
और पूर्ण हृदय से उसका पालन करूं ।

३५. अपनी आज्ञाओं के पथ पर मुझे चला,
क्योंकि मैं उसमें आनन्दित होता हूं ।

३६. प्रभु, मेरे हृदय को लालच की ओर नहीं,
किंतु अपनी साक्षियों की ओर झुका ।

३७. व्यर्थ वस्तुओं की ओर से मेरी आंखें हटा;
मुझे अपने मार्ग के लिए जीवन दे ।

३८. तेरे भक्तों के लिए तेरी जो प्रतिज्ञा है
उसे अपने सेवक के लिये भी पुष्ट कर ।

३९. मेरी निंदा दूर कर, उससे मैं डरता हूं;
तेरे न्याय-सिद्धान्त उत्तम हैं ।

४०. मैं तेरे आदेशों की अभिलाषा करता हूं;
मुझे अपनी धार्मिकता से पुनर्जीवित कर ।

४१. हे प्रभु, तेरी करुणा,
तेरी प्रतिज्ञा के अनुसार तेरा उद्धार
मुझे प्राप्त हो ।

४२. तब मैं अपने निन्दकों को उत्तर दे सकूंगा,
मैं तेरे वचन पर भरोसा करता हूं ।

४३. मेरे मुंह से सत्य का वचन कदापि मत छीन,
क्योंकि मैं तेरे न्याय-सिद्धांतों की आशा करता हूं ।

४४. मैं तेरी व्यवस्था का निरन्तर,
युग-युगांत पालन करता रहूंगा,

४५. मैं स्वतंत्रता में जीवन व्यतीत करूंगा;
क्योंकि मैं ने तेरे आदेशों की खोज की है ।

४६. मैं राजाओं के समक्ष तेरी साक्षियों की चर्चा करूंगा;
मैं लज्जित नहीं हूंगा ।

४७. मैं तेरी आज्ञाओं से हर्षित होता हूं;
उनसे मैं प्रेम करता हूं।
४८. मैं तेरी आज्ञाओं की ओर
अपने हाथ फैलाता हूं;
उनसे मैं प्रेम करता हूं;
मैं तेरी संविधियों का पाठ करूंगा।

४९. प्रभु, अपने सेवक से की गई प्रतिज्ञा को
स्मरण कर,
जिसके द्वारा तू ने मुझे आशा प्रदान की थी।
५०. मेरी विपत्ति में मेरी यही सांत्वना है,
कि तेरा वचन मुझे पुनर्जीवित करता है।
५१. यद्यपि अभिमानी व्यक्ति
मेरा अधिकाधिक उपहास करते हैं,
तो भी मैं तेरी व्यवस्था से विमुख नहीं होता।
५२. प्रभु, जब मैं अतीत के
तेरे न्याय-सिद्धान्त स्मरण करता हूं,
तब मैं स्वयं को दिलासा देता हूं।
५३. जो दुर्जन व्यक्ति तेरी व्यवस्था को त्याग देते हैं
उनके कारण मैं क्रोधाग्नि से भस्म होने लगता हूं।

५४. मेरे प्रवास के देश में
तेरी संविधियाँ मेरे गीत बनी हैं।
५५. प्रभु, मैं रात में तेरा नाम स्मरण करता हूं,
मैं तेरी व्यवस्था का पालन करता हूं।
५६. यह आशिष मुझे प्राप्त हुई,
क्योंकि मैं ने तेरे आदेश माने थे।

५७. प्रभु, तू मेरा सब-कुछ है!
मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं तेरे वचनों का पालन करूंगा।

५८. मैं तेरी कृपा के लिए संपूर्ण हृदय से गिड़गिड़ाता हूं,
प्रभु, अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर।
५९. जब मैं तेरे मार्गों पर विचार करता हूं,
तब अपने पैर तेरी साक्षियों की ओर मोड़ता हूं।
६०. मैं विलम्ब नहीं करता,
वरन् तेरी आज्ञा-पालन के लिये शीघ्रता करता हूं।
६१. यद्यपि दुर्जनों के फंदे मुझे फंसाते हैं,
तो भी मैं तेरी व्यवस्था नहीं भूलता हूं।
६२. तेरे धर्ममय न्याय-सिद्धांतों के कारण
आधी रात को उठ कर मैं तेरी सराहना करता हूं।
६३. मैं उन सब का साथी हूं जो तेरे भक्त हैं,
जो तेरे आदेशों का पालन करते हैं।
६४. हे प्रभु, पृथ्वी तेरी करुणा से परिपूर्ण है,
प्रभु, मुझे अपनी संविधियाँ सिखा।

६५. हे प्रभु, अपने वचन के अनुसार
तू ने अपने सेवक के साथ भलाई की है।
६६. मुझे विवेक और समझ की बातें सिखा;
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं पर विश्वास करता हूं।
६७. पीड़ित होने के पूर्व मैं भटक गया था,
परंतु अब मैं तेरे वचनों का पालन करता हूं।
६८. तू भला है, और भलाई करता है,
मुझे अपनी संविधियाँ सिखा।
६९. अभिमानी व्यक्ति मुझे झूठ से पोतते हैं,
किंतु मैं संपूर्ण हृदय से तेरे आदेशों को मानता हूं।
७०. उनकी आंखों पर परदा पड़ गया है,
परंतु मैं तेरी व्यवस्था से हर्षित हूं।
७१. मेरे लिये यह अच्छा था कि मैं पीड़ित हुआ,
जिससे मैं तेरी संविधियाँ सीख सकूं।

७२. सोने-चांदी के लाखों टुकड़ों की अपेक्षा
तेरे मुंह की व्यवस्था मेरे लिए उत्तम है ।

७३. तेरे हाथों ने मुझे बनाया, और आकार दिया ;
अब मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूं ।
७४. जो तुझ से डरते हैं, वे मुझे देखकर आनन्दित होंगे,
क्योंकि मैंने तेरे वचन की आशा की है ।
७५. प्रभु, मैं जानता हूं कि तेरे न्याय-सिद्धान्त धार्मिक हैं,
और तू ने मुझे सच्चाई से पीड़ित किया है ।
७६. मेरी यह बिनती है कि
जो प्रतिज्ञा तू ने अपने सेवक से की थी,
उसके अनुसार तेरी करुणा मुझे सांत्वना दे ।
७७. तेरी असीम अनुकंपा मुझ पर हो
जिससे मैं जीवित रहूं;
क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरा हर्ष है ।
७८. अभिमानी व्यक्ति लज्जित हों;
उन्होंने झूठ बोलकर मुझे ऐंठा है;
पर मैं तेरे आदेशों का पाठ करूंगा ।
७९. जो तुझ से डरते हैं, वे मेरे पास आएँ,
जिससे वे तेरी साक्षियों को जान सकें ।
८०. मैं निर्दोष हृदय से संविधि का पालन करूँ,
ताकि मुझे लज्जित न होना पड़े ।

८१. मेरा प्राण तेरे उद्धार को प्राप्त करने के लिये व्याकुल है;
मैं तेरे वचन की आशा करता हूं ।
८२. मेरी आंखें तेरी प्रतिज्ञा-पूर्ति के लिये बेचैन हैं;
मैं यह पूछता हूं "तू कब मुझे सांत्वना देगा ?"
८३. मैं धुएँ से धुंधलायी मशक के समान जर्जर हो गया हूं;
तब भी मैं तेरी संविधियाँ नहीं भूला हूं ।

८४. तेरे सेवक की आयु के दिन कितने शेष हैं ?
प्रभु, तू मेरा पीछा करनेवालों का कब न्याय करेगा ?
८५. अभिमानियों ने मेरे पतन के लिए गड्ढे खोदे हैं;
वे तेरी व्यवस्था के अनुरूप आचरण नहीं करते हैं।
८६. तेरी समस्त आज्ञाएं विश्वसनीय हैं;
वे झूठ-मूठ मेरा पीछा करते हैं,
प्रभु, मेरी सहायता कर !
८७. उन्होंने मुझे धरती से लगभग मिटा ही डाला था;
परंतु मैं ने तेरे आदेशों को नहीं छोड़ा।
८८. प्रभु, अपनी करुणा के कारण मुझे पुनर्जीवित कर,
ताकि मैं तेरी साक्षियों का पालन कर सकूं।

८९. हे प्रभु, सदा-सर्वदा के लिये
तेरा वचन आकाश में स्थिर रहे।
९०. तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक है;
तू ने पृथ्वी को स्थिर किया, वह खड़ी है।
९१. आकाश और पृथ्वी तेरे निर्णय से आज भी स्थित हैं;
क्योंकि वे तेरे सेवक हैं।
९२. यदि तेरी व्यवस्था मेरा हर्ष न होती
तो मैं विपत्ति में मर गया होता।
९३. मैं तेरे आदेश कभी नहीं भूलूंगा;
क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जीवित किया है।
९४. प्रभु, मैं तेरा हूं, मेरी रक्षा कर;
क्योंकि मैंने तेरे आदेशों की खोज की है।
९५. मुझे नष्ट करने के लिये दुर्जन घात लगाते हैं,
किंतु मैं तेरी साक्षियों पर विचार करता हूं।
९६. मैंने समस्त पूर्णताओं को सीमाबद्ध देखा है,
पर तेरी आज्ञा अत्यंत असीम है।

९७. मैं तेरी व्यवस्था से कितना प्रेम करता हूं !
दिन भर मैं उसका पाठ करता हूं ।
९८. तेरी आज्ञा मेरे शत्रुओं से अधिक
मुझे बुद्धिमान बनाती है,
क्योंकि वह सदा मेरे साथ है ।
९९. मेरे सब शिक्षकों की अपेक्षा
मुझ में अधिक समझ है;
क्योंकि तेरी साक्षियाँ मेरा दैनिक पाठ हैं ।
१००. मैं वृद्धों से अधिक विचार करता हूं,
क्योंकि मैं तेरे आदेश मानता हूं ।
१०१. मैं अपने पैरों को हरेक कुपथ से रोकता हूं,
जिससे तेरे वचन का पालन करूं ।
१०२. मैं तेरे न्याय-सिद्धांतों से नहीं हटता हूँ,
क्योंकि तूने मुझे सिखाया है ।
१०३. तेरे वचन मेरी जीभ को कितने स्वादिष्ट लगते हैं !
वे मेरे मुंह में मधु से अधिक मीठे हैं ।
१०४. तेरे आदेशों द्वारा मैं विचार करता हूं;
अतः मैं प्रत्येक असत्य पथ से घृणा करता हूं ।

१०५. तेरा वचन मेरे पैर के लिये दीपक,
और मेरे पथ की ज्योति है ।
१०६. तेरे धर्ममय न्याय-सिद्धान्तों के पालन हेतु
मैं ने शपथ खाकर संकल्प किया है ।
१०७. मैं अत्यन्त पीड़ित हूँ,
हे प्रभु, अपने वचन के अनुसार मुझे पुनर्जीवित कर ।
१०८. प्रभु, मैं विनती करता हूँ,
मेरे मुंह की वंदना-बलि ग्रहण कर,
और मुझे अपने न्याय-सिद्धान्त सिखा ।

१०९. मेरा प्राण निरन्तर मेरी हथेली पर रहता है,
फिर भी मैं तेरी व्यवस्था नहीं भूलता हूँ।
११०. दुर्जनों ने मेरे लिये जाल बिछा रखा है,
परंतु मैं तेरे आदेशों से नहीं भटकता हूँ।
१११. मैंने तेरी साक्षियाँ सदा के लिये
उत्तराधिकार में ग्रहण की हैं;
वे मेरे हृदय का हर्ष हैं।
११२. तेरी संविधियाँ पूर्ण करने को
सदैव के लिये, अंत तक
मैं अपना हृदय अर्पित करता हूँ।

११३. मैं दुचित्त व्यक्ति से घृणा करता हूं,
पर मैं तेरी व्यवस्था से प्रेम करता हूं।
११४. तू मेरी आड़ और ढाल है;
मैं तेरे वचन की आशा करता हूँ;
११५. दुष्कर्मियो, मुझ से दूर हटो।
मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाएँ मानूंगा।
११६. प्रभु, अपने वचन के अनुसार मुझे संभाल
ताकि मैं जीवित रहूं,
मुझे लज्जित न होने देना;
क्योंकि मैं ने तेरी आशा की है।
११७. प्रभु, मुझे सहारा दे कि मैं बच सकूं,
और तेरी संविधियों पर निरंतर दृष्टि करता रहूं।
११८. जो मनुष्य तेरी संविधियों से भटक जाते हैं,
उनको तू धिक्कारता है;
क्योंकि उनकी चतुराई व्यर्थ है।
११९. तू पृथ्वी के सब दुर्जनों को मैल के समान धोता है;
अतः मैं तेरी साक्षियों से प्रेम करता हूं।

१२०. प्रभु, तेरे भय से मेरा शरीर कांपता है;
तेरे न्याय-सिद्धान्तों से मैं डरता हूँ ।

१२१. मैंने न्याय और धार्मिकता के कार्य किये हैं;
प्रभु, मुझे अत्याचारियों के हाथ मत सौंप ।
१२२. अपने सेवक की भलाई के लिये
तू स्वयं जमानत दे;
अभिमानी मुझ पर अत्याचार न करने पाएँ ।
१२३. मेरी आंखें तेरे उद्धार के लिये,
तेरी धर्ममय प्रतिज्ञा-पूर्ति के लिये बेचैन हैं ।
१२४. अपनी करुणा के अनुसार
अपने सेवक के साथ व्यवहार कर,
प्रभु, मुझे अपनी संविधियाँ सिखा ।
१२५. मैं तेरा सेवक हूँ;
मुझे समझ प्रदान कर;
जिससे मैं तेरी साक्षियों का अनुभव कर सकूं ।
१२६. प्रभु के कार्य करने का यह समय है;
प्रभु, उन्होंने तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है ।
१२७. इसलिये मैं स्वर्ण अथवा कुन्दन से अधिक
तेरी आज्ञाओं से प्रेम करता हूं ।
१२८. तेरे समस्त आदेशों के अनुरूप
अपने आचरण को ढालता हूँ;
मैं प्रत्येक असत्य पथ से घृणा करता हूँ ।
१२९. तेरी साक्षियाँ अद्‌भुत हैं;
इसलिए मैं उनको मानता हूँ ।
१३०. तेरे वचनों के उद्‌घाटन से प्रकाश होता है,
उससे बुद्धिहीन बुद्धि पाते हैं ।
१३१. मैं तेरे वचन का प्यासा हूँ;
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं की अभिलाषा करता हूँ ।

१३२. जैसे तू अपने नाम के भक्तों के लिये करता है,
वैसे ही तू मेरी ओर उन्मुख हो और मुझपर कृपा कर।
१३३. अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मेरे पग स्थिर कर;
अधर्म को मुझ पर अधिकार न करने दे।
१३४. मनुष्य के अत्याचारों से मेरा उद्धार कर,
ताकि मैं तेरे आदेशों का पालन कर सकूं।
१३५. प्रभु, अपने मुख की ज्योति
अपने सेवक पर प्रकाशित कर;
तू मुझे अपनी संविधियाँ सिखा।
१३६. मेरी आंखें आंसुओं की धाराएँ प्रवाहित करती हैं;
क्योंकि लोग तेरी व्यवस्था का पालन नहीं करते हैं।

१३७. हे प्रभु, तू धार्मिक है,
और तेरे न्याय-सिद्धान्त सत्यनिष्ठ हैं।
१३८. धार्मिकता से, पूर्ण सच्चाई से
तू ने अपनी साक्षियां नियुक्त की हैं।
१३९. मेरी धुन ही मुझे नष्ट कर रही है;
क्योंकि मेरे बैरी तेरे वचन भूल जाते हैं।
१४०. तेरी प्रतिज्ञा अत्यन्त शोधित है,
तेरा सेवक उससे प्रेम करता है।
१४१. मैं छोटा और तुच्छ हूँ,
तो भी मैं तेरे आदेशों को नहीं भूलता हूँ।
१४२. तेरी धार्मिकता सदा के लिये धार्मिक है,
और तेरी व्यवस्था सत्य है।
१४३. यद्यपि मैं संकट में हूँ, व्यथित हूँ
तो भी तेरी आज्ञाएँ मेरा हर्ष हैं।
१४४. तेरी साक्षियाँ सदा के लिये धर्ममय हैं,
मुझे समझ दे कि मैं जीवित रहूँ।

१४५. अपने संपूर्ण हृदय से मैं तुझे पुकारता हूँ,
हे प्रभु, मुझे उत्तर दे;
मैं तेरी संविधियाँ मानूंगा ।

१४६. मैं तुझ को पुकारता हूं;
मुझे बचा,
जिससे मैं तेरी साक्षियों का पालन कर सकूं ।

१४७. मैं प्रातः काल उठता और तेरी दुहाई देता हूँ;
मैं तेरे वचनों की आशा करता हूँ ।

१४८. मेरी आंखें रात्रि-जागरण के पूर्व खुल गईं,
ताकि मैं तेरी प्रतिज्ञा का ध्यान कर सकूं ।

१४९. अपनी करुणा के अनुसार मेरी पुकार सुन;
हे प्रभु, अपने न्याय-सिद्धान्त के अनुरूप
मुझे पुनर्जीवित कर ।

१५०. मेरा पीछा करनेवाले निकट आ गये हैं;
उन्होंने षड्यंत्र रचा है;
वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं ।

१५१. किंतु प्रभु, तू निकट है,
तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं ।

१५२. प्राचीन काल से
मैं तेरी साक्षियों के द्वारा
यह अनुभव कर चुका हूँ,
कि तू ने उनको स्थायी रूप से स्थापित किया है ।

१५३. प्रभु, मेरी पीड़ा को देख और मुझे छुड़ा;
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूला नहीं हूँ ।

१५४. मेरे पक्ष में निर्णय दे और मुझे मुक्त कर;
अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप मुझे पुनर्जीवित कर !

१५५. मुक्ति दुर्जनों से दूर है;
क्योंकि दुर्जन तेरी संविधियों को नहीं खोजते ।

१५६. हे प्रभु, तेरी अनुकंपा महान है;
तू अपने न्याय-सिद्धान्त के अनुरूप मुझे पुनर्जीवित कर।
१५७. मेरा पीछा करनेवाले लोग तथा मेरे बैरी अनेक हैं,
तो भी मैं तेरी साक्षियों से नहीं हटता।
१५८. मैं विश्वासघातकों को देखकर उनसे घृणा करता हूँ;
क्योंकि वे तेरे वचनों का पालन नहीं करते।
१५९. देख, मैं तेरे आदेशों से कितना प्रेम करता हूँ।
हे प्रभु, अपनी करुणा के कारण मुझे पुनर्जीवित कर।

१६०. सत्य तेरे वचन का सारांश है;
तेरे धर्ममय न्याय-निर्णय शाश्वत् हैं।

१६१. शासक अकारण मेरा पीछा करते हैं,
परंतु मेरा हृदय तेरे वचनों से डरता है।
१६२. जैसे बड़ी लूट पाने वाला व्यक्ति हर्षित होता है,
वैसे मैं भी तेरे वचनों से हर्षित होता हूँ।
१६३. झूठ से मुझे घृणा है,
मैं उसका तिरस्कार करता हू;
किंतु मैं तेरी व्यवस्था से प्रेम करता हूँ।
१६४. तेरे धर्ममय न्याय-सिद्धान्तों के कारण
मैं दिन में सात बार तेरी स्तुति करता हूँ।

१६५. प्रभु, तेरी व्यवस्था के प्रेमियों को अपार शांति मिलती है,
उन्हें कोई बाधा नहीं होती।
१६६. हे प्रभु, मैं तेरे उद्धार की आशा करता हूँ;
मैं तेरी आज्ञाएँ पूर्ण करता हूँ।
१६७. मेरा प्राण तेरी साक्षियों का पालन करता है,
मैं उनसे बहुत प्रेम करता हूँ।
१६८. मैं तेरे आदेशों और साक्षियों का पालन करता हूँ;
मेरा समस्त आचरण तेरे सम्मुख प्रस्तुत है।

१६९. हे प्रभु, मेरी पुकार तेरे संमुख पहुंचे;
तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे ।
१७०. मेरी विनती तेरे सम्मुख पहुंचे;
अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ।
१७१. मेरे ओंठ निरन्तर तेरा स्तुतिगान करेंगे,
कि तू मुझे अपनी संविधियाँ सिखाता है ।
१७२. मैं तेरे वचन के गीत गाऊंगा,
क्योंकि तेरी समस्त आज्ञाएं धर्ममय हैं ।
१७३. प्रभु, तेरा हाथ मेरी सहायता के लिए तत्पर रहे;
क्योंकि मैंने तेरे आदेशों को अपने लिए चुना है ।
१७४. हे प्रभु, मैं तेरे उद्धार की अभिलाषा करता हूं;
क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरा हर्ष है ।
१७५. प्रभु, मैं जीवित रहूँ,
जिससे मैं तेरी स्तुति कर सकूं ।
तेरे न्याय-सिद्धान्त मेरी सहायता करें ।
१७६. मैं भेड़ के समान मार्ग से भटक गया हूँ;
प्रभु, अपने सेवक को ढूंढ़;
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को स्मरण रखता हूं ।

छल-कपट से मुक्त रहने की प्रार्थना

यात्रा-गीत

१२०. अपने संकट में
मैंने प्रभु को पुकारा कि वह मुझे उत्तर दे :
२. "हे प्रभु, झूठे ओंठों से,
कपटी जिह्वा से मेरी रक्षा कर ।"
३. अरी कपटी जिह्वा,
प्रभु तुझे क्या दण्ड दे ?
वह तेरे साथ और क्या करे ?

४. तू मानों योद्धा का पैना तीर है;
तू झाऊ वृक्ष का दहकता अंगारा है ।

५. धिक्कार है मुझे
कि मैं मेशेक जाति के मध्य प्रवास कर रहा हूँ,
केदार जाति के शिविरों में निवास कर रहा हूं ।
६. बहुत समय तक मैं इन जातियों में रह चुका;
ये शांति से घृणा करते हैं ।
७. मैं शांति चाहता हूँ;
पर जब मैं शांति के वचन कहता हूं,
तब ये युद्ध करते हैं ।

प्रभु हमारा रक्षक है

यात्रा-गीत

१२१. मैं अपनी आंखें पर्वतों की ओर उठाता हूँ ।
क्या मुझे वहां से सहायता प्राप्त होती है ?
२. मुझे प्रभु से सहायता प्राप्त होती है,
जो आकाश और पृथ्वी का सृजक है ।

३. वह तेरे पैर फिसलने न देगा,
वह तेरा रक्षक है, वह नहीं ऊंघेगा ।
४. देखो, इस्राएल का रक्षक
न ऊंघेगा, न सोएगा ।

५. प्रभु तेरा रक्षक है,
प्रभु तेरे दाहिनी हाथ पर तेरी आड़ है ।
६. न दिन में सूर्य
और न रात में चन्द्रमा तेरी हानि करेंगे ।

७. प्रभु समस्त बुराई से तेरी रक्षा करेगा।
वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
८. तेरे बाहर जाने और लौटने में
अब से सदा तक प्रभु तेरी रक्षा करेगा।

यरुशलम की शांति के लिए प्रार्थना

यात्रा गीत। दाऊद का

१२२. जब यात्रियों ने मुझसे कहा,
"आओ, हम प्रभु के घर चलें,"
तब मैं आनन्दित हुआ!
२. ओ यरुशलम, तेरे द्वारों पर
हम खड़े हैं!

३. यरुशलम उस नगर के सदृश बना है,
जो एकता के बंधनों में बंधा है,
४. जहां विभिन्न कुल, प्रभु के कुल,
इस्राएल की साक्षी के अनुसार,
प्रभु के नाम की सराहना के लिए जाते हैं।
५. वहां न्याय के लिए सिंहासन,
दाऊद के वंश के सिंहासन स्थित हैं।

६. यरुशलम की शांति के लिए प्रार्थना करो!
"ओ यरुशलम! तुझ से प्रेम करने वाले फूलें-फलें!
७. तेरी दीवारों के भीतर शांति,
और तेरे गढ़ों में सुरक्षा बनी रहे।"
८. अपने भाइयों और साथियों के लिये
मैं यह कहूंगा, 'तुझ में शांति बनी रहे।"
९. अपने प्रभु परमेश्वर के घर के निमित्त
मैं तेरी भलाई की खोज करूंगा।

अनुग्रह के लिए प्रार्थना

यात्रा-गीत

१२३. प्रभु, मैं अपनी आंखें तेरी ओर उठाता हूँ;
प्रभु, तू स्वर्ग में विराजमान है !
२. जैसे सेवक की आंखें स्वामी के हाथ पर,
जैसे सेविका की आंखें स्वामिनी के हाथ पर,
लगी रहती हैं,
वैसे ही हमारी आंखें अपने प्रभु परमेश्वर की ओर
लगी रहती हैं,
जब तक वह हम पर कृपा न करे।

३. हे प्रभु, हम पर कृपा कर,
हम पर कृपा कर;
क्योंकि हम तिरस्कार से तृप्त हो चुके हैं !
४. धनवानों के उपहास से,
अहंकारियों के तिरस्कार से
हमारे प्राण तृप्त हो चुके हैं।

शत्रुओं से छुटकारा पाने पर स्तुति करना

यात्रा-गीत । दाऊद का

१२४. इस्राएली राष्ट्र यह कहे :
"यदि प्रभु हमारे पक्ष में न होता,
२. यदि प्रभु हमारे पक्ष में न होता,
जब शत्रु हमारे विरुद्ध खड़े हुए थे,
३. जब उनका क्रोध हमारे प्रति भड़का था,
तब उन्होंने जीवित ही हमें निगल लिया होता;

४. तब जल हमें बहा ले जाता,
जल-धाराएं हमें बहा ले जातीं,
५. तब उफनता जल
हमारे गले तक चढ़ आता।"

६. प्रभु धन्य है !
उसने हमें शत्रुओं का शिकार बनने नहीं दिया !
७. बहेलियों के जाल से छूटे पक्षी के सदृश
हमारे प्राण बच गए;
उनका जाल फट गया;
और हम मुक्त हो गए !

८. हमारी सहायता प्रभु के नाम में है;
वह आकाश और पृथ्वी का सृजक है।

प्रभु अपने भक्तों के चारों ओर है

यात्रा-गीत

१२५. प्रभु पर भरोसा करने वाले,
सियोन पर्वत के सदृश हैं,
जो टलता नहीं, वरन सदा स्थिर है।
२. जैसे यरुशलम के चारों ओर पर्वत हैं,
वैसे ही प्रभु अपने निज लोगों के चारों ओर है,
अब से सदा-सर्वदा तक।
३. दुर्जनों का राजदण्ड
धार्मिकों की भूमि पर टिका न रहेगा,
ऐसा न हो कि भक्त
अन्याय की ओर अपने हाथ बढ़ाएँ।
४. हे प्रभु, भले मनुष्यों की,
निष्कपट हृदय वालों की भलाई कर।

५. किंतु जो कुटिल मार्गों की ओर मुड़ते हैं,
उन्हें प्रभु कुकर्मियों के साथ निकाल देगा ।

इस्राएली राष्ट्र को शांति मिले !

स्वदेश की ओर लौटना

यात्रा-गीत

१२६. जब प्रभु सियोन को गुलामी से वापस ले आया[१]
तब हमें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ;
हमें प्रभु का यह कार्य स्वप्न लगा !
२. हमारा मुंह हंसी से भरा था,
हमारी जिह्वा जयजयकार कर रही थी ।
तब विजातीय राष्ट्रों ने कहा,
"प्रभु ने इनके लिए महान कार्य किए हैं ।"
३. प्रभु ने हमारे लिये महान कार्य किए हैं;
हम सुखी हैं ।

४. जैसे सूखे क्षेत्र की नदियाँ
बरसात में जल से भर जाती हैं,
वैसे ही, हे प्रभु, हमारी समृद्धि पुनः हमें लौटा दे ।

५. जो बीज को आंसुओं के साथ बोते हैं,
वे फसल को जयजयकार करते हुए काटेंगे ।
६. बोने के लिये बीज ले जाने वाला किसान
यदि रोता हुआ जाएगा,
तो भी वह अपने पूलों के साथ
जयजयकार करता हुआ घर लौटेगा ।

---

[१] अथवा, "जब प्रभु ने सियोन को पुनः समृद्धि दी ।"

प्रभु ही सफलता प्रदान करता है

यात्रा-गीत । सुलेमान का

१२७. यदि प्रभु घर को न बनाए,
तो उसे बनाने वाले व्यक्ति व्यर्थ परिश्रम करते हैं;
यदि प्रभु नगर की रक्षा न करे,
तो पहरेदार व्यर्थ जागते हैं।

२. तुम व्यर्थ ही तड़के उठते, और देर से सोते हो,
तुम व्यर्थ कठोर परिश्रम की रोटी खाते हो,
क्योंकि प्रभु ही अपने प्रियजनों को नींद प्रदान करता है।

३. देखो, बालक प्रभु का उपहार है,
गर्भ का फल एक दान है।

४. युवावस्था में उत्पन्न पुत्र योद्धा के हाथ में
तीर के सदृश होते हैं।

५. वह पिता धन्य है,
जिसने अपने तरकश को उनसे भर लिया है।
जब वह अपने शत्रु से अदालत में बात करेगा
तब वह पराजित न होगा।

प्रभु के भक्त की नियति

यात्रा-गीत

१२८. ओ प्रभु के भक्त !
तू धन्य है,
तू प्रभु के मार्ग पर चलता है !

२. तू अपने हाथ के परिश्रम का फल खाएगा;
तू सुखी होगा, तेरा भला होगा।

३. तेरे घर की जनानी ड्योढ़ी में
तेरी पत्नी फलवन्त अंगूर-बेल के सदृश बनेगी;

तेरी चौकी के चारों ओर
जैतून के अंकुरों के समान तेरे पुत्र होंगे।
४. देखो, जो व्यक्ति प्रभु का भक्त है,
वह यह आशिष पाएगा।
५. प्रभु सियोन से तुझे आशिष दे!
तू अपनी आयु के समस्त दिन यरुशलम की समृद्धि भोगे।
तुझे दीर्घायु प्राप्त हो
६. और तू अपने पुत्र-पौत्रादि को देखे!
इस्राएली राष्ट्र को शांति मिले!

शत्रु की पराजय के लिए प्रार्थना

यात्रा-गीत

१२९. "शत्रुओं ने मेरे बचपन से मुझे अत्यन्त कष्ट पहुंचाया,"
इस्राएली राष्ट्र यह कहे:
२. "शत्रुओं ने मेरे बचपन से मुझे अत्यंत कष्ट पहुंचाया।
तोभी वे मुझ पर प्रबल न हो सके।
३. हलवाहों ने मेरी पीठ पर हल चलाए;
उन्होंने मेरी भूमि को जोत कर अपनी रेखाएं लम्बी कीं।
४. प्रभु धार्मिक है;
उसने दुर्जनों की रस्सियां काट दीं।
५. सियोन से घृणा करने वाले
लज्जित हों, और पीछे लौट जाएं!
६. वे छत की घास के सदृश हो जाएं
जो बढ़ने के पूर्व सूख जाती है,
७. जिससे न घास काटने वाला अपनी मुट्ठी भरता है,
और न पूले बान्धने वाला अपनी छाती गर्व से फुलाता है!
८. राह से गुजरने वाले भी यह नहीं कहते,
"प्रभु की आशिष तुम पर हो!
हम तुम्हें प्रभु-नाम से आशिष देते हैं।"

प्रभु के उद्धार की आशा करना

यात्रा-गीत

१३०. हे प्रभु, गंभीर संकट की स्थिति में
मैं तुझ को पुकारता हूँ !
२. हे स्वामी, मेरी पुकार सुन !
मेरी विनती के शब्दों पर
तेरे कान ध्यान से लगे रहें !

३. हे प्रभु, यदि तू मेरे अधर्म पर ध्यान देगा,
तो, हे स्वामी, तेरे सम्मुख कौन खड़ा रह सकेगा ?
४. पर तेरे साथ क्षमा है,
ताकि हम तेरी भक्ति करें ।

५. मैं प्रभु की प्रतीक्षा करता हूँ;
मेरा प्राण प्रतीक्षा करता है;
मैं प्रभु के वचन की आशा करता हूँ ।
६. सबेरे की प्रतीक्षा करने वाले पहरेदारों से अधिक,
प्रातः की प्रतीक्षा करनेवाले पहरेदारों से अधिक
मेरा प्राण स्वामी की प्रतीक्षा करता है ।
७. ओ इस्राएली राष्ट्र, प्रभु की आशा कर !
क्योंकि प्रभु के साथ करुणा है ।
प्रभु के साथ अपार उद्धार है ।
८. वह इस्राएली राष्ट्र को
उसके समस्त अधर्म से छुड़ाएगा ।

प्रभु में शिशुवत् भरोसा करना

यात्रा-गीत । दाऊद का

१३१. हे प्रभु, न मेरे हृदय में अहंकार है,
और न मेरी आंखें घमण्ड से चढ़ी हैं ।

अपनी पहुंच से दूर
बड़ी और अद्‌भुत वस्तुओं के पीछे मैं नहीं भागता ।
२. मां की गोद में दूध पीकर शांत लेटे हुए शिशु के सदृश
मैं ने अपनी अभिलाषाओं को स्थिर और शांत किया है;
शांत शिशु के सदृश मेरा प्राण शांत है !

३. ओ इस्राएली राष्ट्र !
अब से सदा तक
प्रभु की आशा कर !

वेदी पर प्रभु की आशिष के लिए प्रार्थना करना

यात्रा-गीत

१३२. हे प्रभु, दाऊद के हित में
उसकी समस्त कठिनाइयों को स्मरण कर;
२. प्रभु, उसने तेरी शपथ खाई है,
उसने याकूब के सर्वशक्तिमान प्रभु की यह मन्नत मानी है :
३. "मैं अपने घर में प्रवेश नहीं करूंगा,
और न बिछे हुए बिस्तर पर लेटूंगा;
४. मैं अपनी आंखों में नींद नहीं आने दूंगा,
और न अपनी पलकों को झपकियाँ लेने दूंगा,
५. जब तक मैं प्रभु के लिए एक स्थान,
याकूब के सर्वशक्तिमान प्रभु के लिए एक निवास-स्थान
प्राप्त न कर लूं।"

६. देखो, हमने मंजूषा के विषय में एप्राताह जिले में सुना;
और हमने उसको यअर के जनपद में पाया ।
७. "आओ, हम प्रभु के निवास स्थान में प्रवेश करें,
आओ, हम उसकी चरणों की चौकी के सम्मुख वंदना करें ।"

८. हे प्रभु, उठ !
तू और तेरी सामर्थ्य की मंजूषा
अपने विश्राम-स्थान को जाएं ।
९. तेरे पुरोहित धार्मिकता से विभूषित हों,
तेरे भक्त जय-जयकार करें ।
१०. अपने सेवक दाऊद के लिये हमारी प्रार्थना सुन;
तू अपने अभिषिक्त राजा को अस्वीकार मत कर ।

११. प्रभु ने दाऊद से सत्य शपथ खाई है,
वह उससे विमुख न होगा :
"तेरे निज पुत्रों में से एक पुत्र को
मैं तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा ।
१२. यदि तेरे पुत्र मेरे व्यवस्थान,
और साक्षी का पालन करेंगे,
जो मैं उन्हें सिखाऊंगा,
तो उनके पुत्र भी युग-युगांत
तेरे सिंहासन पर बैठेंगे ।"
१३. प्रभु ने सियोन को चुना है;
उसको अपना निवास-स्थान बनाने की इच्छा की है :
१४. "यह युग-युगांत मेरा विश्राम स्थल होगा;
यहां मैं रहूंगा; क्योंकि मैंने इसकी इच्छा की है ।
१५. मैं इस नगर की भोजन व्यवस्था को आशिष दूंगा;
मैं इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा ।
१६. मैं इसके पुरोहितों को उद्धार से विभूषित करूंगा,
इसके भक्त ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे ।
१७. यहां मैं दाऊद के लिए वंश-वृक्ष उत्पन्न करूंगा;
मैंने अपने अभिषिक्त के लिए वंश-दीपक तैयार किया है ।
१८. मैं दाऊद के शत्रुओं को लज्जित करूंगा;
पर दाऊद का मुकुट उस पर सदा सुशोभित होगा ।"

भाइयों की एकता धन्य है

यात्रा-गीत : दाऊद का

१३३. भाइयों का एक-साथ रहना,
कितना भला और मनोहर है !
२. यह सिर पर डाले गए मूल्यवान तेल के सदृश है;
जो दाढ़ी तक बहता है,
वृद्ध पुरोहित[१] की दाढ़ी तक बहता है;
जो उसके वस्त्र के छोर तक बहता है।
३. यह हेर्मोन पर्वत की ओस के समान है,
जो सियोन की पहाड़ियों पर गिरती है !
वहां प्रभु ने आशिष को,
शाश्वत् जीवन को नियुक्त किया है।

संध्या की आराधना

यात्रा-गीत

१३४. ओ प्रभु के सेवको,
जो रात में प्रभु-गृह में खड़े रहते हो,
प्रभु को धन्य कहो !
२. पवित्र स्थान की ओर अपने हाथ उठाओ,
और प्रभु को धन्य कहो !
३. प्रभु तुझे सियोन से आशिष दे;
वह आकाश और पृथ्वी का सृजक है।

प्रभु की महानता एवं मूर्तियों की निस्सारता

१३५. प्रभु की स्तुति करो !
प्रभु-नाम की स्तुति करो,
ओ प्रभु के सेवको, स्तुति करो,

---

[१] अथवा, "हारून"

२. जो प्रभु-गृह में
हमारे परमेश्वर के आंगनों में खड़े रहते हो !
३. प्रभु की स्तुति करो,
क्योंकि प्रभु भला है;
प्रभु नाम के गीत गाओ;
क्योंकि उसका नाम मनोहर है !
४. प्रभु ने अपने लिए याकूब को
इस्राएल को निज संपत्ति के लिए चुना है ।

५. मैं जानता हूँ, प्रभु महान है,
हमारा स्वामी समस्त देवताओं के ऊपर है ।
६. प्रभु को जो पसन्द आया,
वही उसने आकाश, पृथ्वी, सागरों
और समस्त महासागरों में किया ।
७. वह पृथ्वी के छोर से बादल उठाता है,
वह वर्षा के लिए विद्युत चमकाता है,
वह अपने स्वर्गिक भण्डार गृहों से पवन बहाता है ।

८. प्रभु ने मिस्र देश में
मनुष्य और पशु के पहलौठे को मार डाला था ।
९. अरे मिस्र, प्रभु ने तेरे मध्य
फिरौन और उसके समस्त सेवकों के विरुद्ध
चिन्ह और चमत्कार किए थे ।
१०. उसने अनेक राष्ट्रों को नष्ट किया,
और कई राजाओं को मार डाला :
११. अमोरियों के राजा सीहोन को,
बाशान के राजा ओग को
और कनान के समस्त राज्यों के शासकों को !
१२. उसने उनकी भूमि को इस्राएलियों की पैतृक-सम्पत्ति,

अपने निज लोगों की पैतृक सम्पत्ति बनने के लिए
प्रदान कर दिया ।

१३. हे प्रभु, तेरा नाम शाश्वत् है,
हे प्रभु, तेरी स्मृति पीढ़ी से पीढ़ी बनी रहती है ।
१४. हे प्रभु, तू अपनी प्रजा को निर्दोष सिद्ध करेगा,
तू अपने सेवकों पर दया करेगा ।

१५. राष्ट्रों की मूर्तियाँ सोना और चांदी हैं :
वे मनुष्य के हाथ का काम हैं ।
१६. उनके मुंह हैं, पर वे बोलती नहीं ।
उनकी आंखें हैं, किंतु वे देख नहीं सकतीं ।
१७. उनके कान हैं, पर वे सुन नहीं सकतीं;
और न उनके मुंह में जीवन का सांस है !
१८. जो उन्हें बनाते हैं,
वे उन्हीं मूर्तियों के सदृश निर्जीव हैं ।
वे भी बेजान हैं, जो उन पर भरोसा करते हैं ।

१९. ओ इस्राएल के वंशजो, प्रभु को धन्य कहो !
ओ हारून वंश के पुरोहितो, प्रभु को धन्य कहो !
२०. ओ लेवी वंश के उपपुरोहितो, प्रभु को धन्य कहो ।
ओ प्रभु से डरने वालो, प्रभु को धन्य कहो !
२१. सियोन में प्रभु को धन्य कहा जाए;
प्रभु यरुशलम में निवास करता है !
प्रभु की स्तुति करो !

प्रभु की करुणा के लिये स्तुति

१३६. प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि प्रभु भला है;
उसकी करुणा शाश्वत् है ।

२. परम परमेश्वर की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
३. स्वामियों के स्वामी की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है ।

४. अकेले ही महान आश्चर्य कर्म करनेवाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
५. बुद्धि से आकाश बनानेवाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
६. सागर के ऊपर पृथ्वी को फैलाने वाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
७. महान् प्रकाश-पिण्ड बनाने वाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
८. उसने दिन पर शासन करने के लिये सूर्य बनाया,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
९. उसने रात पर शासन करने के लिए चन्द्रमा और तारागण बनाए,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।

१०. मिस्र देश के पहिलौठों को मारने वाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
११. मिस्र देश से इस्राएलियों को निकालनेवाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
१२. उसने अपनी सामर्थी और शक्तिशाली भुजा से
उनको निकाला था,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
१३. लाल सागर को खण्ड-खण्ड करने वाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
१४. उसने लाल सागर के मध्य से इस्राएल को पार कराया,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।

१५. पर उसने फिरौन और उसकी सेना को समुद्र में फेंक दिया,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
१६. अपने निज लोगों का निर्जन प्रदेश में नेतृत्व करने वाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
१७. बड़े-बड़े राजाओं को मारने वाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
१८. उसने शक्तिशाली राजाओं को भी मारा :
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
१९. अमोरियों के राजा सीहोन को,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
२०. बाशान के राजा ओग को मारा;
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
२१. और उनकी भूमि को पैतृक सम्पत्ति,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
२२. अपने सेवक इस्राएलियों की पैतृक-सम्पत्ति
बनने के लिए प्रदान कर दिया;
उसकी करुणा शाश्वत् है ।

२३. प्रभु ने हमारी दुर्दशा में हमें स्मरण किया,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
२४. और हमारे बैरियों से हमें छुड़ाया ।
उसकी करुणा शाश्वत् है ।
२५. समस्त प्राणियों को भोजन देने वाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।

२६. स्वर्ग के परमेश्वर की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत् है ।

बेबीलोन देश में निर्वासित बन्दियों का गीत

१३७. जब हम बेबीलोन देश की नदियों के तट पर बैठे,
तब सियोन को स्मरण कर रो दिये ।
२. वहां मजनू के वृक्षों पर
हमने अपने सितार लटका दिये ।
३. हमें बन्दी बनाने वाले
वहां हमें गीत गाने को कहते थे,
"हमें सियोन का कोई गीत सुनाओ !"
हमें रुलाने वाले आनन्द मनाने को कहते थे ।

४. विदेश में
हम प्रभु का गीत कैसे गाएं ?
५. ओ यरुशलम, यदि मैं तुझे भूल जाऊं,
तो मेरा दाहिना हाथ सूख जाए !
६. यदि मैं तुझे स्मरण न करूं,
यदि यरुशलम को अपने सब आनन्द से श्रेष्ठ न मानूं,
तो मेरी जिह्वा मेरे तालू से चिपक जाए !

७. हे प्रभु, एदोम के वंशजों के विरुद्ध
यरुशलम के दिन स्मरण कर;
उन्होंने यह कहा था, "ढाओ, इसकी नींव तक ढा दो ।"
८. अरी विनाशक बेबीलोन नगरी !
वह मनुष्य धन्य होगा,
जो तुझसे वैसा ही व्यवहार करेगा
जैसा तू ने हम से किया है !
९. वह मनुष्य धन्य होगा,
जो तेरे शिशुओं को पकड़ कर
चट्टान पर पटक देगा !

प्रभु-कृपा के लिए सराहना करना

दाऊद का गीत

१३८. प्रभु, मैं सम्पूर्ण हृदय से तेरी सराहना करता हूँ;
देवताओं के समक्ष भी मैं तेरी स्तुति करता हूँ;
२. मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर मुंह कर,
तेरी वंदना करता हूं;
मैं तेरी करुणा और सच्चाई के लिए
तेरे नाम की सराहना करता हूँ;
क्योंकि तू ने
सब से ऊपर अपने नाम और वचन को महान किया है।
३. जिस दिन मैंने पुकारा,
तू ने मुझे उत्तर दिया;
तू ने मेरी आत्म-शक्ति को बढ़ाया।
४. हे प्रभु, पृथ्वी के समस्त राजा तेरी सराहना करेंगे;
क्योंकि उन्होंने तेरे मुंह के वचन सुने हैं;
५. वे प्रभु-मार्ग के गीत गायेंगे;
क्योंकि प्रभु, तेरी महिमा महान है।
६. यद्यपि प्रभु, तू उच्चासन पर विराजमान है,
तो भी तू गिरे हुए मनुष्य पर दृष्टि करता है;
पर तू दूर से ही अहंकारी को पहचान लेता है।
७. प्रभु, यद्यपि मैं संकटमय मार्ग पर चलता हूं,
तो भी, तू मेरी जीवन-रक्षा करता है।
तू मेरे शत्रुओं के क्रोध से
मेरी रक्षा के लिए अपना हाथ बढ़ाता है,
तेरा दाहिना हाथ मुझे बचाता है।
८. प्रभु, मेरे लिए अपने अभिप्राय को पूर्ण कर;
हे प्रभु, तेरी करुणा शाश्वत् है।
तू अपने हाथों के कार्य को, मुझ को मत त्याग।

प्रभु सर्वज्ञ है

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

१३९. हे प्रभु, तूने परख कर मुझे जान लिया !
२. तू मेरा उठना और बैठना जानता है,
तू दूर से ही मेरे विचार समझ लेता है।
३. तू मेरे मार्ग और विश्राम-स्थल का पता लगा लेता है,
तू मेरे समस्त मार्गों से परिचित है।
४. मेरे मुंह में शब्द आने भी नहीं पाता,
कि तू उसे पूर्णत: जान लेता है।
५. तू आगे-पीछे से मुझे घेरता,
और मुझ पर अपना हाथ रखता है।
६. प्रभु, यह ज्ञान मेरे लिये अद्‌भुत है,
बहुत गहरा है,
उस तक मैं नहीं पहुंच सकता।

७. तेरे आत्मा से अलग हो मैं कहां जाऊंगा ?
मैं तेरी उपस्थिति से कहां भाग सकूंगा ?
८. यदि मैं आकाश पर चढ़ूं
तो तू वहां है।
यदि मैं मृतक लोक में बिस्तर बिछाऊं,
तो तू वहां है।
९. यदि मैं उषा के पंखों पर उड़कर,
समुद्र के क्षितिज पर जा बसूं,
१०. तो वहाँ भी तेरा हाथ मेरा नेतृत्व करेगा,
तेरा दाहिना हाथ मुझे पकड़े रहेगा।
११. यदि मैं यह कहूं, अंधकार मुझे ढांप ले;
और मेरे चारों ओर का प्रकाश रात हो जाए,
१२. तो अंधकार भी तेरे लिए अंधकार नहीं है,

और रात भी दिन के सदृश चमकती है;
तेरे लिए अंधेरा प्रकाश जैसा है।

१३. तू ने ही मेरे भीतरी अंगों को बनाया है,
मेरी मां के गर्भ में तू ने मेरी रचना की है।
१४. मैं तेरी सराहना करता हूं,
क्योंकि तू भय योग्य और अद्‌भुत है।
तेरे कार्य कितने आश्चर्यपूर्ण हैं!
तू मुझे भली भांति जानता है।
१५. जब मैं गुप्त स्थान में बनाया गया,
पृथ्वी के निचले स्थानों में बुना गया,
तब मेरा कंकाल तुझ से छिपा न रहा।
१६. तेरी आंखों ने मेरे भ्रूण को देखा;
तेरी पुस्तक में सब कुछ लिखा था,
दिन भी रचे गये थे,
जब वे दिन अस्तित्व में थे नहीं।
१७. हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे प्रति
कितने मूल्यवान हैं।
उनका योग कितना बड़ा है!
१८. यदि मैं उनको गिनूं,
तो वे धूलकण से भी अधिक हैं;
जब मैं जागता हूं, तब भी मैं तेरे साथ हूं।

१९. हे परमेश्वर, भला होता कि तू दुर्जन को मारता,
और हत्यारे मुझ से दूर हो जाते।
२०. वे द्वेषपूर्वक तेरा अनादर करते हैं,
वे बुराई के लिए तेरे विरुद्ध स्वयं को उन्नत करते हैं!
२१. हे प्रभु, तुझ से बैर करनेवालों से क्या मैं बैर न करूं?
तेरे विरोधियों के प्रति क्या मैं शत्रु-भाव न रखूं?

२२. मैं उनसे हृदय से घृणा करता हूं,
मैं उनको अपना ही शत्रु समझता हूं।
२३. हे परमेश्वर मुझे परख और मेरा हृदय पहचान,
मुझे जांच और मेरे विचारों को जान !
२४. मुझे देख, क्या मैं कुमार्ग पर चल रहा हूँ ?
प्रभु, मुझे शाश्वत् मार्ग पर ले चल !

सताने वालों से रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का गीत

१४०. हे प्रभु, दुर्जन से मुझे छुड़ा;
हिंसक पुरुष से मेरी रक्षा कर;
२. वे हृदय में बुराइयों की योजना बनाते हैं,
और युद्ध को निरंतर उकसाते हैं,
३. वे अपनी जीभ को सांप के दांत जैसा तेज करते हैं,
उनके ओठों के नीचे नाग का विष है। सेलाह

४. हे प्रभु, दुर्जन के हाथ से मुझे बचा,
हिंसक पुरुष से मेरी रक्षा कर,
उन्होंने षड़यंत्र रचा है कि मेरे पैर को ठोकर लगे।
५. अहंकारियों ने मेरे लिये पाश छिपाया है,
रस्सियों के साथ जाल बिछाया है,
उन्होंने पथ के किनारे मेरे लिए फंदे लगाए हैं। सेलाह

६. मैं प्रभु से यह कहता हूं, तू ही मेरा परमेश्वर है,
हे प्रभु, मेरी विनती की पुकार पर कान दे।
७. हे प्रभु, मेरे स्वामी, मेरे शक्तिमान सहायक,
तू युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा कर।
८. हे प्रभु, दुर्जन की इच्छाओं को पूरी न करना;
उसका षड्यंत्र सफल न होने देना। सेलाह

९. जो मुझे घेरे हुए हैं,
वे अपना सिर उठा रहे हैं;
उनके ओठों का अनिष्ठ
उन पर ही पड़े !
१०. उन पर अंगारों की वर्षा हो !
वे गड्ढों में डाले जाएं,
कि वे फिर उठ न सकें !
११. बकवादी मनुष्य भूमि पर पैर न जमा सके,
बुराई तेज गति से हिंसक व्यक्ति का पीछा करे !

१२. मैं यह जानता हूं कि प्रभु पीड़ित के पक्ष में निर्णय देता है;
वह दरिद्र का न्याय करता है ।
१३. निस्सन्देह धार्मिक मनुष्य तेरे नाम की सराहना करेंगे;
निष्कपट व्यक्ति तेरे संमुख निवास करेंगे ।

बुराई से बचाव के लिए प्रार्थना करना

दाऊद का गीत

१४१. हे प्रभु, मैं तुझ को पुकारता हूँ,
मेरे लिए शीघ्रता कर ।
जब मैं तुझ को पुकारूं,
मेरी पुकार को ध्यान से सुन ।
२. मेरी प्रार्थना तेरे सम्मुख सुगंधित धूप,
और मेरा हाथ जोड़ना सान्ध्य-बलि माना जाए !

३. हे प्रभु, मेरे ओठों पर पहरा बैठा;
मेरे ओठों के द्वार की रखवाली कर;
४. बुराई की ओर मेरे हृदय को न झुकने दे ।
मेरा हृदय कुकर्मी पुरुषों के साथ

बुरे कर्मों में संलग्न न हो;
मैं उनके स्वादिष्ट भोजन को न खाऊं !

५. यदि धार्मिक व्यक्ति करुणा से मुझे मारे,
तो यह उसकी करुणा है;
यदि वह मुझे ताड़ित करे,
तो यह मेरे सिर का अभ्यंजन है;
और मैं अपने सिर को नहीं हटाऊंगा ।
पर दुर्जनों के दुष्कर्मों के विरुद्ध
मैं निरन्तर प्रार्थना करता रहूंगा ।
६. जब वे अपने न्यायाधीशों को सौंप दिये जायेंगे,
तब वे यह अनुभव करेंगे कि प्रभु का वचन सत्य है ।[१]
७. चट्टान के सदृश जिसको तोड़कर व्यक्ति
भूमि पर बिखेर देता है,
उनकी हड्डियाँ भी मृतक लोक के मुख पर छितराई जाएंगी ।
८. पर, हे प्रभु परमेश्वर, मेरी आँखें तुझ पर लगी हैं;
मैं तेरी शरण में आता हूं;
मुझे असुरक्षित न छोड़ ।
९. जो फन्दा उन्होंने मेरे लिए लगाया है उससे,
कुकर्मियों के जाल से मेरी रक्षा कर ।
१०. दुर्जन अपने ही जालों में फसें,
पर मैं बच जाऊं ।

संकट में सहायता के लिए प्रार्थना करना

दाऊद का मसकील, जब वह गुफा में था : एक प्रार्थना

१४२. मैं प्रभु की दुहाई देता हूं,
मैं उच्च स्वर में प्रभु से विनती करता हूं,

---

[१] पाठांतर, "जब उनके न्यायाधीश चट्टान के निकट फेंक दिए जाएंगे, तब वे मेरे वचन सुनेंगे कि वे मधुर हैं ।"

२. मैं प्रभु के संमुख अपनी शिकायत प्रस्तुत करता हूं;
उसके समक्ष अपना दुख प्रकट करता हूं।
३. प्रभु, मेरी आत्मा मूर्छित होती है,
पर तू मेरे आचरण को जानता है।
जिस मार्ग पर मैं चलता हूं,
वहां मेरे शत्रुओं ने मेरे लिये फंदा लगाया।

४. मैं दाहिनी ओर दृष्टि करता हूं,
और यह देखता हूं कि मुझे पहचानने वाला कोई नहीं है।
मेरे लिए शरण-स्थल भी नहीं रहा;
मेरी चिन्ता करने वाला कोई नहीं है।
५. हे प्रभु, मैं तेरी दुहाई देता हूं,
मैं यह कहता हूं, तू ही मेरा शरण-स्थल है,
तू ही जीव-लोक में मेरा सर्वस्व है।
६. मेरी पुकार पर ध्यान दे;
क्योंकि मेरी बहुत दुर्दशा की गई है!
मेरा पीछा करने वालों से मुझे छुड़ा;
वे मुझसे अधिक बलवान हैं।
७. मेरे प्राण को बन्दीगृह से निकाल,
ताकि मैं तेरे नाम की सराहना करूं!
धार्मिक व्यक्ति मुझे घेर लेंगे;
क्योंकि तू मेरा उपकार करेगा।

मुक्ति और नेतृत्व के लिए प्रार्थना करना

दाऊद का गीत

१४३. हे प्रभु, मेरी प्रार्थना को सुन,
मेरी विनती पर कान लगा;
अपनी सच्चाई और धार्मिकता के अनुरूप
मुझे उत्तर दे।

२. हे प्रभु, अपने सेवक के साथ न्याय में प्रवेश न कर;
क्योंकि एक भी प्राणी तेरी दृष्टि में धार्मिक नहीं है।

३. शत्रु ने मेरा पीछा किया,
मेरे जीव को भूमि पर कुचल दिया,
उसने मुझे अंधेरे बंदीगृह में बैठा दिया
मानों मैं बहुत दिन का मरा हुआ व्यक्ति हूं।
४. मेरी आत्मा मूर्छित है;
मेरा हृदय व्याकुल है।

५. मैं अतीत के दिनों को स्मरण करता हूं,
मैं तेरे आश्चर्यपूर्ण कार्यों का ध्यान करता हूं;
मैं तेरे हस्तकार्यों का चिंतन करता हूं।
६. मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाता हूं;
सूखी भूमि के समान मेरा प्राण तेरे लिये प्यासा है। सेलाह

७. हे प्रभु, अविलम्ब मुझे उत्तर दे,
मेरी आत्मा मिटने पर है,
अपना मुख मुझ से न छिपा
अन्यथा मैं कबर में जानेवालों के समान मृत हो जाऊंगा।
८. प्रभु, प्रातः काल अपनी करुणा के वचन मुझे सुना;
मैं तुझ पर ही भरोसा करता हूं।
जिस मार्ग पर मुझे चलना चाहिए,
प्रभु, वह मार्ग मुझे सिखा;
क्योंकि मैं तुझ को अपना प्राण अर्पित करता हूं।

९. हे प्रभु, मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त कर।
तुझ में ही मैं ने स्वयं को छिपाया है।
१०. तेरी इच्छा को पूर्ण करना मुझे सिखा;
क्योंकि तू ही मेरा परमेश्वर है,
तेरा भला आत्मा मुझे सुरक्षित स्थान पर ले जाएगा।

११. हे प्रभु, अपने नाम के लिए,
मुझे पुनर्जीवित कर;
अपनी धार्मिकता के अनुरूप
मुझे संकट से निकाल !

१२. अपनी करुणा के अनुरूप
मेरे शत्रुओं का विनाश कर,
मेरे प्राण के बैरियों को मिटा,
क्योंकि मैं तेरा सेवक हूं ।

छुटकारे और समृद्धि के लिए प्रार्थना

दाऊद का गीत

१४४. धन्य है प्रभु मेरी चट्टान !
वह युद्ध के लिये मेरे हाथों को
लड़ाई के लिये मेरी भुजा को प्रशिक्षित करता है ।

२. वह मेरी चट्टान[1] और मेरा गढ़ है;
वह मेरा शरण-स्थल और मेरा मुक्तिदाता है ।
वह मेरी ढाल है, मैं उसकी शरण में आता हूं ।
वह जातियों को मेरे अधीन करता है ।

३. हे प्रभु, मानव क्या है, कि तू उस पर ध्यान दे ?
मनुष्य क्या है कि तू उसकी चिन्ता करे ?

४. मानव श्वास के सदृश है,
उसकी आयु के दिन ढलती छाया के समान हैं ।

५. हे प्रभु, स्वर्ग को झुका और नीचे उतर आ !
पर्वतों को स्पर्श कर कि वे धुआं उगलने लगें !

६. तू विद्युत चमका और मेरे शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर दे,
अपने बाण छोड़ और उनमें भगदड़ मचा दे !

---

[1] मूल में, 'मेरी करुणा'

७. तू ऊंचे स्थान से अपना हाथ बढ़ा,
और मुझे संकट से,
विदेशियों के हाथ से मुझे मुक्त कर।
८. वे अपने मुंह से असत्य वचन निकालते हैं।
वे अपना दाहिना हाथ उठाकर
धोखे की शपथ खाते हैं!

९. हे परमेश्वर, तेरे लिये मैं नया गीत गाऊंगा।
दस तार के सितार पर मैं तेरे लिए राग बजाऊंगा।
१०. तू ही राजाओं को विजय प्रदान करता है,
तू ही अपने सेवक दाऊद को छुड़ाता है।
११. प्रभु, मुझे क्रूर तलवार से छुड़ा,
मुझे विदेशियों के हाथ से मुक्त कर।
वे अपने मुंह से असत्य वचन निकालते हैं;
वे अपना दाहिना हाथ उठाकर धोखे की शपथ खाते हैं।

१२. हमारे पुत्र अपनी युवावस्था में
पूर्ण विकसित पौधों के सदृश हों,
हमारी पुत्रियां उन स्तंभों के समान बनें,
जो महल के ढांचे के लिए तराशे गये हैं।
१३. हमारे भण्डार-गृह प्रत्येक प्रकार की उपज से भरे रहें,
हमारे चरागाहों में हमारी भेड़ें
हजारों-हजार गुना बढ़ जाएं;
१४. हमारे पशु खूब मोटे-ताजे हों,
हमारे नगर की दीवारों में दरार न पड़े,
हमारा युद्ध में जाना न हो,
हमारे नगर चौकों पर रोने का स्वर सुनाई न दे!
१५. ऐसी सुख-समृद्धि की दशा में रहनेवाले लोग धन्य हैं!
धन्य हैं वे जिनका परमेश्वर प्रभु है!

प्रभु की भलाई और सामर्थ्य के लिये स्तुति

स्तुति गान । दाऊद का

१४५. हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तेरा गुणगान करूंगा;
मैं युग-युगांत तेरे नाम को धन्य कहूंगा ।
२. प्रतिदिन मैं तुझ को धन्य कहूंगा;
मैं युग-युगांत तेरे नाम की स्तुति करूंगा ।
३. प्रभु महान है,
वह अत्यन्त स्तुत्य है;
प्रभु की महानता अगम है ।

४. एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को तेरे कार्य बताएगी;
तेरे महान् कार्यों को घोषित करेगी ।
५. मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप का,
तेरे आश्चर्यपूर्ण कामों का ध्यान करूंगा ।
६. लोग तेरे आतंकपूर्ण कार्यों की शक्ति की चर्चा करेंगे;
और मैं तेरी महानता का वर्णन करूंगा ।
७. वे तेरी अपार भलाई की कीर्ति की चर्चा करेंगे;
तेरी धार्मिकता का जयजयकार करेंगे ।
८. प्रभु कृपालु और दयालु,
विलम्ब क्रोधी और अपार करुणामय है ।
९. प्रभु सबके प्रति भला है;
उसकी दया उसकी समस्त सृष्टि पर व्याप्त है ।

१०. हे प्रभु, तेरी समस्त सृष्टि तेरी सराहना करेगी,
तेरे भक्त तुझ को धन्य कहेंगे !
११. वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे;
वे तेरी सामर्थ्य की बातें करेंगे,
१२. वे मनुष्य-जाति पर तेरे महान् कार्य,
और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रकट करेंगे ।

१३. तेरा राज्य शाश्वत् राज्य है,
तेरा शासन पीढ़ी से पीढ़ी बना रहता है ।

प्रभु अपने सब वचनों को पूर्ण करता है;
वह विश्वास योग्य है ।
प्रभु अपने सब कार्यों को पूरा करता है,
वह कृपालु है ।

१४. प्रभु गिरते हुओं को सहारा देता है,
वह झुके हुओं को उठाता है ।
१५. प्रभु, सब प्राणियों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं,
और तू उन्हें समय पर उनका भोजन देता है ।
१६. तू अपनी मुट्ठी खोलता है,
और सब प्राणियों की इच्छा को संतुष्ट करता है ।
१७. प्रभु अपने समस्त आचरण में धार्मिक,
और अपने सब कार्यों में करुणामय है ।
१८. प्रभु अपने समस्त पुकारने वालों के समीप है,
वह उन सब के निकट है,
जो सच्चाई से उसको पुकारते हैं ।
१९. वह अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करता है,
वह उनकी दुहाई सुनता और उन्हें बचाता है ।
२०. प्रभु उन सब की रक्षा करता है,
जो उससे प्रेम करते हैं,
पर वह समस्त दुर्जनों को नष्ट करता है ।

२१. मैं अपने ओठों से प्रभु की स्तुति करूंगा ;
समस्त प्राणी प्रभु के पवित्र नाम को
युग-युगांत धन्य कहते रहेंगे ।

प्रभु के कार्यों के लिये स्तुति करना

१४६. प्रभु की स्तुति करो ।
ओ मेरे प्राण, प्रभु की स्तुति कर ।
२. जब तक मैं जीवित हूं,
प्रभु की स्तुति करूंगा,
मैं अपने जीवन भर
अपने परमेश्वर का स्तुतिगान करूंगा ।

३. शासकों पर भरोसा मत करो,
और न मनुष्यों पर,
जिनमें सहायता करने की सामर्थ्य नहीं है ।
४. प्राण के निकलते ही
वे मिट्टी में मिल जाते हैं;
उसी दिन उनकी योजनाएँ भी नष्ट हो जाती हैं ।

५. धन्य है वह मनुष्य, जिसका सहायक याकूब का परमेश्वर है,
जिसकी आशा उस प्रभु परमेश्वर पर है,
६. जो आकाश, पृथ्वी और सागर का
एवं उन सब का सृजक है, जो उनमें हैं;
जो सदा के लिये सत्य का रक्षक है;
७. जो दलितों का न्याय करता है;
जो भूखों को रोटी देता है ।
निस्संदेह प्रभु बंदियों को छुड़ाता है,
८. वह अंधों को दृष्टि देता है ।
प्रभु झुके हुओं को उठाता है,
प्रभु अपने भक्तों से प्रेम करता है ।
९. प्रभु परदेशी का रक्षक है,
वह पितृहीन बालक और विधवा का सहारा है;
पर वह दुर्जनों के मार्ग को कुटिल बनाता है ।

१०. ओ सियोन, तेरा प्रभु परमेश्वर
पीढ़ी से पीढ़ी तक
सदा राज्य करता है।
प्रभु की स्तुति करो !

यरुशलम पर प्रभु की कृपा के लिए स्तुति करना

१४७. प्रभु की स्तुति करो !
हमारे परमेश्वर का स्तुतिगान करना भला है,
हमें उसका स्तुतिगान करना उचित है;
क्योंकि वह कृपालु है।
२. प्रभु यरुशलम का निर्माता है,
वह निर्वासित इस्राएलियों को एकत्र करता है।
३. वह विदीर्ण हृदय वालों का वैद्य है,
वह उनके घावों पर पट्टी बान्धता है।
४. वह तारों की संख्या को निश्चित करता है,
वह समस्त तारों को उनके नाम से पुकारता है।
५. हमारा स्वामी महान और अत्यन्त शक्ति सम्पन्न है;
उसकी बुद्धि असीम है।
६. प्रभु, पीड़ित को सहारा देता है,
पर वह दुर्जनों को धूल-धूसरित करता है।
७. प्रभु की सराहना करते हुए गीत गाओ,
हमारे परमेश्वर के लिए सितार के साथ, स्तुति गाओ।
८. वह आकाश को बादलों से आच्छादित करता है,
वह पृथ्वी के लिए वर्षा तैयार करता है;
वह पर्वतों पर घास उगाता है।
९. वह पशुओं को,
कौवों के बच्चों को आहार देता है;
क्योंकि वे उसको पुकारते हैं।

१०. वह अश्वसेना की शक्ति से प्रसन्न नहीं होता है,
और न धावक योद्धा के पैरों से हर्षित होता है।
११. पर वह अपने भक्तों से,
उसकी करुणा की प्रतीक्षा करनेवाले से प्रसन्न होता है।

१२. ओ यरुशलम, प्रभु की प्रशंसा कर,
ओ सियोन, अपने परमेश्वर की स्तुति कर।
१३. प्रभु तेरे द्वार की अर्गलाओं को सुदृढ़ करता,
वह तुझ में रहनेवाले तेरे पुत्रों को आशिष देता है।
१४. वह तेरी सीमाओं पर शांति रखता,
वह तुझे प्रचुरमात्रा में उत्तम गेहूं से तृप्त करता है।
१५. वह पृथ्वी पर अपने शब्द भेजता है;
उसके वचन तेज गति से दौड़ते हैं।
१६. वह ऊन के सदृश बर्फ की वर्षा करता है।
वह राख के समान पाला बिखेरता है।
१७. वह बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े भेजता है;
उसकी ठण्ड से जल जम जाता है।
१८. वह अपना वचन भेजकर उसे पिघलाता है;
वह अपना पवन बहाता और जल बहने लगता है।
१९. वह याकूब को अपना वचन,
इस्राएल को अपनी संविधि और न्याय-सिद्धांत बताता है।
२०. प्रभु ने यह व्यवहार अन्य राष्ट्रों से नहीं किया,
वे प्रभु के न्याय-सिद्धान्तों को नहीं जानते हैं।
प्रभु की स्तुति करो !

समस्त सृष्टि प्रभु की स्तुति करे

१४८. प्रभु की स्तुति करो !
स्वर्ग से प्रभु की स्तुति करो,
ऊंचे स्थानों में उसकी स्तुति करो !

२. ओ प्रभु के दूतो, उसकी स्तुति करो,
ओ प्रभु की सेनाओ, उसकी स्तुति करो !
३. ओ सूर्य और चन्द्रमा, उसकी स्तुति करो,
ओ समस्त प्रकाशवान नक्षत्रो, उसकी स्तुति करो !
४. ओ आकाश, सर्वोच्च आकाश,
ओ आकाश से ऊपर के जल, उसकी स्तुति करो !

५. ये सब प्रभु के नाम की स्तुति करें;
क्योंकि प्रभु ने आज्ञा दी,
और वे निर्मित हुए ।
६. प्रभु ने युग-युगांत के लिए
उन्हें स्थित किया है,
प्रभु ने संविधि प्रदान की,
जो कभी टल नहीं सकती !

७. पृथ्वी पर प्रभु की स्तुति करो,
ओ मगरमच्छो, ओ सागरो,
८. ओ अग्नि और ओलो,
ओ बर्फ और कुहरे,
ओ प्रभु का वचन पूर्ण करने वाली प्रचण्ड वायु ।

९. ओ पर्वत एवं समस्त घाटियो !
ओ फलवान वृक्षो तथा देवदारो !
१०. ओ पशुओ, और पालतू जानवरो,
ओ रेंगनेवाले जन्तुओ, ओ उड़ने वाले पक्षियो !
११. पृथ्वी के राजागण,
और समस्त जातियाँ,
शासक एवं पृथ्वी के समस्त न्यायकर्ता !
१२. युवक और युवतियाँ भी,
बच्चों समेत वृद्ध भी !
१३. ये सब प्रभु के नाम की स्तुति करें;

क्योंकि केवल प्रभु का नाम महान है,
उसकी महिमा पृथ्वी और आकाश के ऊपर है ।
१४. प्रभु ने अपने निज लोगों को शक्तिवान बनाया है;
समस्त संतों के लिए,
इस्राएल की संतान के लिए
जो प्रभु के निकट है,
यह स्तुति का विषय है ।
प्रभु की स्तुति हो !

इस्राएल प्रभु की स्तुति करे

१४६. प्रभु की स्तुति करो !
प्रभु के लिए नया गीत गाओ,
भक्तों की मंडली में प्रभु की स्तुति हो !
२. इस्राएली अपने निर्माता में आनन्दित हों !
सियोन के पुत्र अपने राजा प्रभु में मगन हों !
३. वे नृत्य से प्रभु के नाम की स्तुति करें;
डफ और सितार पर उसके लिए राग बजाएं ।
४. प्रभु अपनी प्रजा से प्रसन्न है ।
वह पीड़ित व्यक्ति को विजय से विभूषित करता है ।
५. भक्त प्रभु की महिमा के कारण प्रफुल्लित हों,
वे अपने स्थान से जयजयकार करें ।
६. उनके कंठों में प्रभु का गुणगान हो,
और उनके हाथों में दुधारी तलवार हो,
७. ताकि वे राष्ट्रों से प्रतिशोध ले सकें,
और अन्य जातियों को ताड़ित कर सकें ।
८. वे उनके राजाओं को जंजीरों से
और उनके मुखियों को लौह-बेड़ियों से बांध सकें,
६. और उन्हें लिखित न्याय का दण्ड दें !

प्रभु के भक्तों का यही सम्मान है।
प्रभु की स्तुति करो !

प्रभु की स्तुति करो

१५०. प्रभु की स्तुति करो !
उसके पवित्र स्थान में
परमेश्वर की स्तुति करो;
आकाश के मेहराब में
उसकी स्तुति करो।

२. उसके महान कार्यों के लिये
उसकी स्तुति करो;
उसकी अपार महानता के अनुरूप
उसकी स्तुति करो !

३. नरसिंगे की गूंज पर
उसकी स्तुति करो !
सारंगी और सितार पर
उसकी स्तुति करो !

४. डफ और नृत्य से
उसकी स्तुति करो;
वीणा और बांसुरी से
उसकी स्तुति करो।

५. झांझों की ध्वनि पर
उसकी स्तुति करो;
उच्च स्वर की झांझ से
उसकी स्तुति करो !

६. समस्त प्राणी प्रभु की स्तुति करें !
प्रभु की स्तुति करो !

सी० वी० लूसियन द्वारा लखनऊ पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ में मुद्रित।